

भारत की लोक कथाऐं–2

असम बंगाल तमिल नाडु



संकलन और अनुवाद

सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title: Bharat Ki Lok Kathayen-2 (Folktales of India-2)
Cover Page Picture : Tea Gardens of Assam
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of India



विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

भारत की लोक कथाऐं–2

इस सीरीज़ में, यानी “देश विदेश की लोक कथाऐं” नाम की सीरीज़ में, भारत की लोक कथाऐं प्रकाशित करने का कोई इरादा नहीं था। पर मुझे पता चला कि अपने देश भारत की भी बहुत सारी सामान्य लोक कथाऐं हिन्दी में उपलब्ध नहीं हैं। सो इस दिशा में भी मैंने ध्यान देना शुरू किया। पर अभी भी इन लोक कथाओं को इस सीरीज़ में प्रकाशित करना इस प्रोजैक्ट का कोई उद्देश्य नहीं है।

दुनियाँ के सात महाद्वीपों में से एशिया महाद्वीप सबसे बड़ा है। इसमें रूस देश इसको क्षेत्रफल में बड़ा बनाता है और चीन और भारत जैसे देश इसको जनसंख्या में बड़ा बनाते हैं। भारत देश की जनसंख्या चीन देश से दूसरे नम्बर पर आती है। भारत में भी इतने सारे तरह के लोग रहते हैं कि कहते हैं कि यहाँ हर सौ मील की दूरी पर खाना पीना. रहन सहन, भाषा आदि बदल जाते हैं, फिर लोक कथाओं का तो कहना ही क्या।

भारत की लोक कथाओं का पहला संकलन प्रकाशित किया जा चुका है जिसमें उसके विभिन्न प्रान्तों की लोक कथाऐं दी गयी थीं। भारत के बहुत सारे प्रान्तों में हिन्दी नहीं बोली जाती जैसे आसाम, बंगाल, उड़ीसा और दक्षिण भारत के चार पान्त आन्ध्र, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल और पश्चिम में गुजरात, वहाँ की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा भाषी बच्चों को उपलब्ध नहीं हो पाती हैं।

इस उद्देश्य की पूर्ति तो होनी ही चाहिये। पर अभी भी इन लोक कथाओं को इस सीरीज़ में प्रकाशित करना इस “ज्ञान दान” प्रोजैक्ट का कोई उद्देश्य नहीं है। अस्तु खोजने पर भारत के विभिन्न प्रान्तों की लोक कथाओं की पुस्तकें अंग्रेजी में मिलीं तो उनका अनुवाद हिन्दी में किया गया। उन पुस्तकों की सूची इस पुस्तक के पीछे दी हुई है।

इस पुस्तक में हम तुम्हें भारत के उत्तरी–पूर्वी हिस्से की, यानी आसाम की तरफ की, लखेर जनजाति की, बंगाल की और दो तमिल नाडु की लोक कथाऐं प्रस्तुत कर रहे हैं।[1] तमिलनाडु की एक कथा बहुत लम्बी है जो आसानी से छह हिस्सों में बाँटी जा सकती है।

तो लो पढ़ो ये लोक कथाऐं भारत के ऐसे प्रान्तों की जहाँ हिन्दी नहीं बोली जाती।

---

[1] These stories have been translated from “Lakher Folklore” by NE Parry in the book written in “Discovery of North-East India: Geography, History, Culture. Vol 8. Edited by Suresh Kant Sharma, Usha Sharma. Delhi, Mittal Books. It is availabale on Internet.

लखेर जनजाति

लखेर जनजाति भारत के उत्तरी–पूर्वी भाग की एक जनजाति है जो कई जगहों पर पायी जाती है जैसे मिजोरम, आसाम़, बर्मा का चिन प्रान्त आदि। यह जनजाति साधारणतया प्रकृति की गोद में रहना पसन्द करती है जहॉ बहुत सारे फूल हों, पेड़ हों, पहाड़ियॉ हों, नदियॉ हों। इनकी भाषा मारा–चिन है। इनके शुरू होने की कहानी भी बड़ी अजीब है। कहते हैं कि ये उत्तर में चिन पहाड़ियों की किसी जगह से आते हैं। इनका समाज छह भागों मे बॅटा हुआ है और हर भाग में भी कई कई समूह हैं।

इनके यहॉ लड़के और लड़कियों में शादी से पहले ही यौन सम्बन्ध हो जाते हैं पर ये लोग शादी जरूर करते हैं क्योंकि उसको ये जीवन की एक मुख्य घटना मानते हैं। लड़के बीस पच्चीस साल की उम्र में और लड़कियॉ बीस साल की उम्र से पहले ही शादी कर लेती हैं। लड़कों के लिये उनके माता पिता ही लड़की चुनते है और वे साधारणतया एक पत्नी के साथ ही रहते हैं। लड़के वाले लड़की वालों को शादी से पहले कुछ धन देते है जिसे वधू मूल्य[2] कहते हैं।

अधिकतर ये लोग शिकारी होते हैं और मछलियॉ पकड़ते हैं। कुछ लोग चावल उगाते हैं, खाने के लिये फूल और कई तरह के बॉस उगाते हैं। ये लोग वस्तुएॅ दे कर वस्तुएॅ खरीदते हैं और बलिदान इनके यहॉ की एक मुख्य धार्मिक प्रथा है।

यहॉ वहॉ की कुछ लोक कथाऐं दी जा रही हैं। ये कथाऐं वहॉ बहुत प्रचलित है। इनमें बहुत सारी कहानियॉ तो जानवरों की हैं पर इनमें एक कहानी "जादूगर नर" मेरी लिखी पढ़ी सारी लोक कथाओं में एक अकेली ऐसी कहानी है जिसमें चीता आदमी का जिक आता है।

[2] Translated for the words "Bride Price".

असम की लोक कथाऐं

1 एक बिल्ले और एक मुर्गी की कहानी[3]

एक बार एक जंगली बिल्ले ने एक मुर्गी से दोस्ती करने का बहाना किया पर सच तो यह था कि वह उस मुर्गी को खाना चाहता था।

एक दिन बिल्ले ने मुर्गी से पूछा — "ओ मुर्गी, आज रात तुम कहाँ सोओगी?"

मुर्गी बोली — "आज मैं अपनी टोकरी में सोऊँगी।"

मगर जब रात हुई तो वह मुर्गी अपनी टोकरी में नहीं सोयी बल्कि वह वहाँ सोयी जहाँ बागीचे में पानी देने वाला पाइप रखा जाता है। जब रात हुई तो बिल्ला मुर्गी को उसकी टोकरी में ढूँढने आया पर वह तो वहाँ थी नहीं सो वह घर वापस लौट गया।

अगले दिन बिल्ला जब मुर्गी से मिला तो उसने उससे पूछा — "कल रात तुम कहाँ सोयीं थीं?"

मुर्गी बोली — "मैं तो कल रात जहाँ पानी देने वाला पाइप रखा रहता है वहाँ सोयी थी।"

बिल्ले ने फिर पूछा — "तुम आज रात कहाँ सोओगी?"

मुर्गी बोली — "मैं आज रात जहाँ पानी देने वाले पाइप रखे रहते हैं वहीं सोऊँगी क्योंकि वहाँ मैंने अपने अंडे दिये हुए हैं।"

---

[3] Story of a Cat and a Hen – a folktale of Lakher Tribe of North-Eastern part of India, Asia. Taken from the book "Discovery of North-East India: Geography, History, Culture. Vol 8. Edited by Suresh Kant Sharma, Usha Sharma. Delhi, Mittal Books. It is availabale on Internet.

पर उस रात वह वहॉ नहीं सोयी, वह तो अपनी टोकरी में सोयी।

बिल्ला रात को जहॉ पानी देने वाले पाइप रखे रहते हैं वहॉ मुर्गी को ढूँढने गया लेकिन उसको मुर्गी वहॉ नहीं मिली। मुर्गी को वहॉ न पा कर बिल्ले को बहुत गुस्सा आया और गुस्से में भरा हुआ वह घर वापस लौट गया।

अगले दिन बिल्ला जब मुर्गी से मिला तो उसने उससे फिर पूछा — "कल रात तुम कहॉ सोयीं थीं?"

मुर्गी बोली — "अपनी टोकरी में।"

बिल्ले ने पूछा — "और तुम आज रात कहॉ सोओगी?"

मुर्गी बोली वहीं अपनी टोकरी में।"

मगर जब शाम हुई तो मुर्गी पानी देने वाले पाइप रखने वाली जगह पर सोयी।

इस बार जब रात हुई तो बिल्ला मुर्गी को उसकी टोकरी में ढूँढने गया पर मुर्गी उसको वहॉ नहीं मिली सो वह उसको पाइप रखने वाली जगह पर देखने गया। वहॉ वह उसको मिल गयी। उसने उसको मार दिया और उसके शरीर को ले कर चल दिया।

उस मुर्गी ने दस अंडे दिये थे। जब उन अंडों ने देखा कि बिल्ले ने उनकी मॉ को मार दिया है तो उन्होंने बिल्ले से अपनी मॉ की मौत का बदला लेने का विचार किया।

सो उन्होंने अपनी पानी देने वाले पाइप की जगह छोड़ दी और कहीं दूसरी जगह चल दिये। जब वे सब उस जगह को छोड़ कर जा रहे थे तो केवल एक अंडे को छोड़ कर सारे अंडे टूट गये। यह बचा हुआ अंडा उन सब अंडों में सबसे छोटा अंडा था सो यह अंडा अकेला ही चल पड़ा।

जब वह जा रहा था तो उसको रास्ते में ठंड की आत्मा[4] मिली। उसने अंडे से पूछा — "तुम कहाँ जा रहे हो?"

अंडे ने सोच रखा था कि वह बिल्ले से अपनी माँ की हत्या का अकेला ही बदला लेगा सो जब वह ठंड की आत्मा से सड़क पर मिला और उस आत्मा ने उससे पूछा कि वह कहाँ जा रहा था तो वह बोला — "मैं किसी खास जगह नहीं जा रहा।"

ठंड की आत्मा बोली — "मुझे मालूम है कि तुम बिल्ले से अपनी माँ की हत्या का बदला लेने जा रहे हो। चलो मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ हो सकता है तुम्हें मेरी जरूरत पड़ जाये।" सो वह ठंड की आत्मा उसके साथ हो ली।

थोड़ी दूर जाने पर उनको एक चूहा पकड़ने वाला चूहेदान मिल गया। उसने भी ठंड की आत्मा और अंडे से पूछा कि वे लोग कहाँ जा रहे थे।

[4] Translated for the words "Spirit of the Cold"

अंडा तो कुछ नहीं बोला पर ठंड की आत्मा ने उसको सब कुछ बता दिया। यह सुन कर चूहेदान बोला — "मैं भी आप लोगों के साथ चलता हूँ शायद मैं भी आप लोगों के कुछ काम आ जाऊँ।"

सो वह भी उन लोगों के साथ हो लिया।

कुछ दूर आगे जा कर उनको एक मूसल मिला, फिर एक लाल चींटा मिला, फिर भूसा मिला और फिर एक मकड़ा मिला। सबने अंडे के साथ जाने का विचार किया और वे सभी उसके साथ हो लिये।

जल्दी ही वे सब उस जंगली बिल्ले के घर पहुँच गये जिसने उस अंडे की माँ मुर्गी को खाया था। परन्तु बिल्ला उस समय वहाँ नहीं था वह अपने खेत पर गया हुआ था।

सो ठंड की आत्मा बिल्ले के खेत पर पहुँची। वहाँ जा कर उसने देखा कि बिल्ला तो अपने खेत की जंगली घास उखाड़ रहा था। ठंड की आत्मा ने अपनी ठंड का असर फैलाया तो वह बिल्ला ठंड से काँपने लगा।

जब ठंड की आत्मा बिल्ले को ठंड से कँपकँपा रही थी तब चूहेदान आदि सभी बिल्ले के घर में थे। मूसल बिल्ले के घर के दरवाजे के ऊपर था। अंडा अन्दर आग के पास चला गया। लाल चींटा और भूसा भी अंडे के पास ही फर्श पर बैठ गये। मकड़ा दीवार पर चढ़ गया।

बिल्ले को जब ठंड लगने लगी तो वह घर वापस आ गया। उसको बहुत ज़्यादा ठंड लग रही थी सो वह आग के पास आ कर बैठ गया।

उधर आग की गर्मी से अंडा टूट गया। उस अंडे के टूटने की आवाज इतनी ज़्यादा हुई कि बिल्ला डर गया और भूसे के ऊपर जा पड़ा। तभी लाल चींटे ने जो वहीं बैठा था बिल्ले को काट लिया।

बिल्ला वहाँ से फिर हटा और जहाँ लाल चींटे ने उसे काटा था उस हिस्से को दीवार से रगड़ने लगा। लेकिन वहाँ तो वह मकड़ा बैठा था सो उसने उसको काट लिया।

बिल्ले को लगा कि जरूर कहीं कुछ गड़बड़ है।

अब बिल्ले ने घर छोड़ कर जाने का फैसला किया पर जैसे ही वह घर से बाहर निकला मूसल उसके सिर पर गिर पड़ा। बिल्ले को चोट तो बहुत आयी पर फिर भी इन सबसे बचने के लिये वह घर के नीचे की ओर चल पड़ा।

वहाँ चूहादान बैठा हुआ था। जैसे ही बिल्ला उसके पास से निकला चूहेदान ने उसको इतनी ज़ोर से पकड़ा कि वह तो मर ही गया।

इस प्रकार अंडे ने बिल्ले से अपनी माँ की हत्या का बदला लिया



2 कुत्ते और बकरे की कहानी[5]

यह बहुत पुरानी बात है। उन दिनों की जब कुत्तों के भी सींग हुआ करते थे। एक दिन एक स्त्री ओखली में मॉस कूट रही थी। जब वह मॉस कूट चुकी तो एक कुत्ता आया और ओखली में लगा मॉस चाटने लगा।

पर उसको लगा कि वह अपने सींगों की वजह से मॉस ठीक से नहीं चाट पा रहा है सो उसने अपने सींग निकाल कर रख दिये और फिर से ओखली में लगा मॉस चाटने लगा। अब वह आसानी से मॉस चाट पा रहा था।

इतने में उधर से एक बकरा गुजरा। उसने सींग रखे देखे तो वे उसे बहुत अच्छे लगे और उसने उन्हें अपने सिर पर लगा लिये और चल दिया।

कुत्ता जब मॉस चाट चुका तो उसने अपने सींग देखे कि वह उनको अपने सिर पर लगा ले पर उसको तो अपने सींग ही कहीं दिखायी नहीं दिये। उसने इधर उधर देखा तो देखा कि एक बकरा उसके सींग अपने सिर पर लगाये भागा जा रहा है।

[5] Story of a Dog and a Goat – a folktale from Lakher Tribe of North-Eastern India, Asia.
Taken from the book "Discovery of North-East India: Geography, History, Culture. Vol 8. Edited by Suresh Kant Sharma, Usha Sharma. Delhi, Mittal Books. It is availabale on Internet.

कुत्ते ने उससे अपने सींग लेने के लिये उसका पीछा किया परन्तु बकरा तो तब तक भाग चुका था। कुत्ता उसको पकड़ ही नहीं पाया। उस दिन से कुत्ते के सींग तो उसके सिर से चले गये और बकरे के सिर पर उसके सींग लग गये।

अब कुत्ता बकरे को देखते ही भौंकता है क्योंकि वह जानता है कि बकरे ने उसके सींग चुराये हैं। वह उनको फिर से लेने की कोशिश करता है पर वह उसके हाथ ही नहीं आता।



3 कछुए और बन्दरों की कहानी[6]

बहुत दिन पहले की बात है कि एक बार एक कछुआ एक अजनबी शहर में नमक खरीदने गया।

जब वह नमक खरीद कर वापस लौट रहा था तो उसने देखा कि बहुत सारे बन्दर एक पेड़ पर चढ़े फल खा रहे थे। उन फलों के देख कर उसके मुँह में पानी आ गया सो उसने उन बन्दरों से कुछ फल माँगे।

बन्दरों ने उसको कुछ फल तोड़ कर नीचे फेंक दिये। कछुए ने वे फल खाये तो उसको वे बहुत मीठे लगे सो कछुए ने उनको कुछ और फल फेंकने के लिये कहा तो बन्दरों ने जवाब दिया कि अगर वह और फल खाना चाहता है तो वह पेड़ पर चढ़े और अपने आप फल तोड़ कर खाये। वे अब उसको और फल नीचे नहीं फेंकेंगे।

कछुआ बोला कि वह पेड़ पर नहीं चढ़ सकता इसलिये अगर बन्दर उसके लिये फल नीचे फेंक दें तो उनकी बड़ी मेहरबानी होगी।

[6] Story of a Tortoise and Monkeys – a folktale from Lakher Tribe of North-Eastern India, Asia. Taken from the book "Discovery of North-East India: Geography, History, Culture. Vol 8. Edited by Suresh Kant Sharma, Usha Sharma. Delhi, Mittal Books. It is availabale on Internet.

इस पर बन्दर बोले कि अगर वह खुद पेड़ पर नहीं चढ़ सकता तो कोई बात नहीं। वह अगर चाहे तो वे उसको उठा कर पेड़ के ऊपर ला सकते थे। कछुआ राजी हो गया।

इस पर कुछ बन्दर पेड़ से नीचे उतरे और उस कछुए को उठा कर ऊपर पेड़ के ऊपर बिठा दिया। वहाँ बैठ कर सबने खूब फल खाये।

जब बन्दर फल खा चुके तो वे कछुए को बिना बताये और उसको नीचे लाये बिना ही पेड़ पर से नीचे उतर आये। उन्होंने कछुए का नमक भी उठा लिया और उसको ले कर वहाँ से चले गये।

जब कछुए ने देखा कि वह पेड़ पर अकेला ही रह गया तो वह रोने लगा। उसकी इतनी भी हिम्मत नहीं हुई कि वह पेड़ पर से कूद पड़े।

डर के मारे उसका रोना बढ़ गया और वह इतना रोया इतना रोया कि उसकी आँखों से आँसू बहने लगे और नाक से पानी। यह सब भी इतना बहा कि पेड़ की जड़ के पास एक छोटा सा नाला बन गया।

उसी समय वहाँ एक प्यासा हिरन आया और उसने उस नाले में से पानी पिया तो बोला — "ओह कितना अच्छा पानी है इस नाले का।"

कछुआ यह सुनते ही तुरन्त बोला — "यह नाला नहीं है यह तो मेरे ऑसू हैं।"

फिर उसने हिरन को बताया कि वह क्यों रो रहा था। कछुए की कहानी सुन कर हिरन ने कहा — "कछुए भाई, तुम मेरी कमर पर कूद जाओ। मैं तुमको अपनी कमर पर ले सकता हूॅ।"

कछुआ बोला — "तुम्हारी कमर तो केवल चार अंगुल चौड़ी है मुझे उस पर कूदने में डर लगता है।" और कछुआ हिरन की कमर पर नहीं कूदा।

उसी समय वहॉ पर एक बारहसिंगा आया। उसने भी उस नाले का पानी पिया और उस पानी की बड़ी तारीफ की। कछुआ फिर बोला — "यह नाले का पानी नहीं है यह तो मेरे ऑसू हैं।"

फिर उसने बारहसिंगे को भी बताया कि वह क्यों रो रहा था। बारहसिंगा भी बोला — "आओ कछुए भाई, तुम चिन्ता न करो तुम मेरी कमर पर कूद जाओ।"

कछुआ बोला — "तुम्हारी कमर तो केवल दो हाथ चौड़ी है मुझे उस पर कूदने में डर लगता है।" सो कछुआ बारहसिंगे की कमर पर भी नहीं कूदा।

तभी वहॉ से एक हाथी गुजरा। उसने भी उस नाले का पानी पिया और नाले के पानी की बहुत तारीफ की। कछुआ फिर बोला — "हाथी भाई, यह नाले का पानी नहीं है यह तो मेरे ऑसू हैं।" फिर उसने हाथी को भी बताया कि वह क्यों रो रहा था।

कछुए की दुखभरी कहानी सुन कर हाथी भी दुखी हो गया। उसने भी कछुए से कहा — "कछुए भाई, मेरी पीठ तो बहुत बड़ी है तुम मेरी पीठ पर कूद जाओ। तुम यहॉ आराम से कूद सकते हो।"

कछुए को भी लगा कि वह हाथी की पीठ पर आराम से कूद सकता है सो वह हाथी की पीठ पर कूद गया।

अब क्योंकि कछुआ हाथी की रीढ़ की हड्डी पर कूदा था सो उसकी रीढ़ की हड्डी टूट गयी और वह मर गया। कछुए ने पेट भर कर हाथी का मॉस खाया और फिर बन्दरों से बदला लेने के लिये बन्दरों के गॉव की ओर चल दिया।

कुछ ही देर में कछुआ बन्दरों के खेतों के पास आ पहुॅचा। वहॉ जा कर उसने टट्टी की और आगे बढ़ गया। कुछ देर के बाद बन्दर वहॉ आये उन्होंने समझा कि वह मॉस पड़ा था सो वे उसे सब का सब खा गये।

कछुआ यह सब देख रहा था। वह बोला — "कुछ देर पहले ही तो तुम लोग मुझे पेड़ पर छोड़ आये थे और अब तुमने मेरी टट्टी खा ली?"

बन्दरों ने जब यह सुना तो उनको बड़ा गुस्सा आया। वे लोग कछुए के घर के पास पहुॅचे और वहॉ टट्टी कर के एक टोकरी में छिप कर बैठ गये।

कुछ देर बाद कछुआ अपने घर से बाहर निकला तो उसने अपने घर के बाहर बन्दरों की टट्टी देखी तो वह बन्दरों को ढूँढने लगा। उसने सोचा कि बन्दर भी यहीं कहीं पास में ही छिपे होंगे।

उसने बन्दरों को ढूँढा तो देखा कि सारे बन्दर एक टोकरी में छिपे बैठे हैं उसने उन सारे बन्दरों को उसी टोकरी से बाँध दिया और उस टोकरी को नीचे लुढ़का दिया।

सारे बन्दर मर गये केवल एक बँदरिया को छोड़ कर। असल में उस बँदरिया ने गिरते समय एक बेल को पकड़ लिया था। उस बँदरिया को उस समय बच्चे की आशा थी।

कहते हैं कि आज जितने भी बन्दर दुनियाँ में मौजूद हैं वे सब उसी बँदरिया की सन्तान हैं।



4 एक विधवा और उसका बेटा[7]

बहुत दिन पहले की बात है कि एक विधवा स्त्री अपने एकलौते बेटे के साथ रहती थी। एक दिन वह बेटा एक नाले की ओर गया और वहाँ से एक मछली पकड़ लाया। घर आ कर उसने वह मछली पकाने के लिये माँ को दे दी।

उस मछली को देख कर माँ बहुत खुश हुई और तुरन्त ही उसने उसको एक बड़े बर्तन में पानी भर कर उबालने के लिये आग पर रख दिया। जब पानी में उबाल आया तो वह मछली पानी में इधर उधर नाचने लगी और उसे ऐसा लगा जैसे उस पानी में एक नहीं कई मछलियाँ हों।

उस स्त्री ने देखा तो बोली — "इनमें से एक मेरी है और एक मेरे बेटे की, एक मेरी है और एक मेरे बेटे की, एक मेरी है और एक मेरे बेटे की। इस तरह हम लोग पाँच पाँच मछलियाँ खायेंगे।"

इतना कह कर उसने बर्तन में से एक मछली निकाली और खा ली। खाने के बाद उसने बर्तन में झाँका तो यह देख कर वह बहुत दुखी हुई कि उसमें तो अब एक भी मछली नहीं थी।

उसी समय उसका बेटा घर आ गया और माँ से बोला — "माँ, बहुत ज़ोर से भूख लगी है आओ खाना खा लें।"

---

[7] A Widow and Her Son – a folktale from Lakher Tribe of North-Eastern India, Asia.
Taken from the book "Discovery of North-East India: Geography, History, Culture. Vol 8. Edited by Suresh Kant Sharma, Usha Sharma. Delhi, Mittal Books. It is availabale on Internet.

मॉ खाना तो ले आयी पर बेटे को उसमें वह मछली कहीं दिखायी नहीं दी जो वह पकड़ कर लाया था सो उसने मॉ से पूछा — "मॉ, उस मछली का क्या हुआ जो मैं ले कर आया था?"

मॉ ने उसे बताया कि वह तो उसने खा ली। यह सुन कर बेटा बहुत दुखी हुआ कि अब वह खाने के साथ मॉस नहीं खा सकेगा।

उसकी मॉ भी बहुत दुखी थी। कुछ ही देर में उसको एक तरकीब सूझी। वह उठी, उसने लाल रंग का एक बीज लिया और उसको मोम से अपने पिछवाड़े पर चिपका कर एक नदी की ओर चल दी जहॉ जंगली जानवर पानी पीने आया करते थे। उस नदी पर पहुॅच कर वह नीचे झुक कर पानी पीने लगी।

तभी एक हिरन वहॉ पानी पीने आया पर वह उस लाल रंग के बीज को देख कर डर के मारे भाग गया।

रास्ते में उसको एक बारहसिंगा मिला तो उसने उसको बताया कि आज नदी पर उसने क्या देखा पर बारहसिंगे को हिरन की बातों पर विश्वास नहीं हुआ सो हिरन उसको वह दिखाने के लिये नदी की तरफ ले गया।

अब लाल बीज तो वहीं का वहीं था सो उसको देख कर वह बारहसिंगा भी डर गया और वे दोनों ही वहॉ से भाग लिये।

जल्दी ही दूसरे जानवर – जंगली सूअर, भालू, चीते, बन्दर, हाथी आदि भी वहॉ पानी पीने आये पर वे सब भी उस लाल बीज को देख कर डर गये और भाग गये।

जब वे लाल बीज के डर की वजह से पानी नहीं पी सके तो उन सबने मिल कर एक मीटिंग की कि उस लाल बीज का क्या करना चाहिये जो उस स्त्री ने अपने पिछवाड़े पर चिपका रखा था।

तय यह हुआ कि बन्दर वहाँ जाये और उस लाल बीज को उस स्त्री के पिछवाड़े से हटाये। सो बन्दर धीरे धीरे उस स्त्री के पीछे गया और जैसे ही उसने उस लाल बीज को उसके पिछवाड़े से हटाने की कोशिश की कि उसका हाथ उसके पिछवाड़े से चिपक गया। वह डर के मारे चिल्ला पड़ा। उसकी चीख सुन कर दूसरे जानवर भी डर गये और इधर उधर भागने लगे।

इतने में एक हाथी उसी तरफ आ रहा था। सबको भागता हुआ देख कर वह भी दौड़ पड़ा। कई जानवर इस भागा दौड़ी में मारे गये और कई जानवर उस हाथी के पैरों के नीचे आ कर मर गये। उधर भागते समय हाथी का पैर एक बड़े पेड़ की जड़ में फँस गया जिससे उसकी टाँग टूट गयी और वह भी गिर कर मर गया।

वह स्त्री घर गयी और अपने पड़ोसियों को बुला लायी। सब लोगों ने मिल कर मरे हुए जानवरों के माँस की खूब दावत उड़ायी।

वह सब माँस इतना ज़्यादा था कि आदमियों ने भी खूब खाया और जानवरों ने भी खूब खाया पर फिर भी वह बच रहा। यह देख कर जानवरों ने यह विचार किया कि बाकी का बचा हुआ माँस सब जानवरों में बाँट दिया जाये। हाथी की टाँग उमर में सबसे बड़े जानवर को मिलेगी।



काफी सोच विचार के बाद यह पाया गया कि उन सब जानवरों में सबसे छोटा छंगबई चूहा उमर में सबसे बड़ा था सो हाथी की टॉग उसको दे दी गयी।

चूहे को हाथी की टॉग तो मिल गयी पर हाथी की टॉग के मुकाबले में तो वह चूहा बहुत ही छोटा था वह उसको ले कर कैसे जाता?

अब क्योंकि वह उसको अकेले उठा कर नहीं ले जा सकता था सो उसने अपने बहिन के बेटे ज़बी[8] को अपनी सहायता के लिये बुलाया।

लेकिन वह टॉग तो इतनी भारी थी कि वे दोनों मिल कर भी उसको नहीं उठा सके। बल्कि इस सब मेहनत में छंगबई के पेट में से हवा और निकल गयी – पूँ ऊँ ऊँ। हवा निकलने की आवाज सुन कर उसका भतीजा ज़बी खूब हॅसा, खूब हॅसा।

ज़बी को हॅसता देख कर छंगबई को इतना अधिक गुस्सा आया कि उसने उसके पिछवाड़े पर एक ज़ोर का हाथ मारा। बेचारा ज़बी गिरते गिरते बचा।

फिर उसने हाथी की टॉग के पास ही एक गड्ढा खोद कर अपना बिल बनाया और वहीं रहने का विचार किया। वह हाथी की टॉग बहुत दिनों तक खाता रहा।

[8] Zabee – name of the Chhangbai mouse's nephew

कहते हैं कि छंगबई की हवा निकलने पर ज़बी इतना हॅसा इतना हॅसा कि उस हॅसने से उसकी ऑखें बहुत छोटी हो गयीं और उसका पिछवाड़ा भी उसके सिर के मुकाबले में बहुत छोटा हो गया था क्योंकि छंगबई ने उसको वहॉ बहुत ज़ोर से मारा था।



5 साही और हिरन की कहानी[9]



बहुत दिन पहले की बात है कि एक दिन एक साही[10] और एक हिरन दोनों अपना अपना झूम[11] यानी खेत बनाने के लिये एक पेड़ की जड़ें काट रहे थे।

साही उस पेड़ की जड़ को बड़ी सँभाल कर धीरे धीरे अपने दाँतों से काट रहा था और हिरन उसको अपने अगले पैरों के नीचे के हिस्से से काट रहा था।

फिर उन्होंने अपने अपने खेत जला कर तैयार कर लिये तो साही का खेत तो बहुत अच्छा जल गया क्योंकि उसने बड़ी मेहनत से अपना खेत काटा था पर हिरन का खेत उतना अच्छा नहीं जला क्योंकि वह बहुत आलसी और लापरवाह था।

जब चावल बोने का समय आया तो हिरन ने साही के खेत में अपने चावल बो दिये। यह देख कर साही बोला — "तुमने मेरे खेत में अपने चावल क्यों बोये?"

---

[9] Story of a Hedgehog and a Deer – a folktale from Lakher Tribe of North-Eastern India, Asia. Taken from the book "Discovery of North-East India: Geography, History, Culture. Vol 8. Edited by Suresh Kant Sharma, Usha Sharma. Delhi, Mittal Books. It is availabale on Internet.

[10] Translated for the word "Hedgehog". Saahee word is a Hindi word is for hedgehog or porcupine. See its picture above.

[11] Jhoom word is used for farm.

इस पर हिरन बोला — "मैंने अपना बीज अपने खेत में बोया है तुम्हारा खेत में नहीं। तुम्हारा खेत ठीक नहीं है।" वे दोनों इसी बात पर काफी देर तक बहस करते रहे कि कौन सा खेत किसका है।

अन्त में हिरन ने कहा इस प्रकार लड़ने से कोई फायदा नहीं है इससे अच्छा है कि कुश्ती लड़ते हैं और जो भी कुश्ती में जीतेगा अच्छा वाला खेत उसी का होगा। साही यह सोच कर राजी हो गया कि यद्यपि वह साइज़ में छोटा था फिर भी वह जीत जायेगा और अच्छा वाला खेत उसे मिल ही जायेगा।

सो दोनों की कुश्ती शुरू हुई और साही जीत गया। इस पर हिरन दुखी आवाज में बोला कि पहली कुश्ती में उसकी हड्डियाँ दर्द कर रही थीं इसलिये वह पहली बार की कुश्ती ठीक से नहीं लड़ पाया इसलिये अब वह दोबारा कुश्ती लड़ना चाहता है।

साही राजी हो गया। हिरन ने अपनी हड्डी पर एक कपड़ा लपेट लिया और दोबारा कुश्ती लड़ा पर इस बार भी साही जीत गया।

हिरन बोला कि दूसरी कुश्ती लड़ते समय क्योंकि उसकी गर्दन में दर्द था इसलिये वह यह दूसरी कुश्ती हार गया था इसलिये अब तीसरी बार कुश्ती होनी चाहिये तब फैसला होगा। साही तीसरी बार के लिये भी तैयार हो गया पर इत्तफाक से साही तीसरी बार भी जीत गया।

यह देख कर हिरन को थोड़ा दुख तो हुआ पर वह अभी भी हार मानने के लिये तैयार नहीं था सो उसने एक और सलाह दी।

वह बोला — "ऐसा करते हैं कि अबकी बार हम अपने अपने दोस्तों को बुला लेते हैं और फिर लड़ाई लड़ें और फिर जो जीते अच्छा वाला खेत उसका।" साही इस पर भी राजी हो गया।

हिरन ने तो अपने बहुत सारे दोस्तों को बुला लिया पर साही का कोई दोस्त न था। इस प्रकार हिरन की तरफ तो बहुत सारे जानवर थे मगर साही की तरफ कोई भी नहीं था सो उसने किसी तरह मधुमक्खियों को अपनी तरफ कर लिया।

उसने उन मधुमक्खियों को बीयर के कुछ बर्तनों में बन्द कर दिया और उन बर्तनों को एक अलमारी के ऊपर रख दिया।

थोड़ी देर में हिरन का भेजा एक बन्दर आया और उसने साही से पूछा कि क्या वह हिरन को उसका खेत देने के लिये तैयार है? साही ने हिरन को खेत देने से तो साफ इनकार कर दिया पर उसने बन्दर को एक प्याला बहुत बढ़िया शहद पीने के लिये दिया।

शहद पी कर तो बन्दर बहुत ही खुश हुआ और उसने साही से वायदा किया कि वह उन दोनों के बीच सुलह और शान्ति करवाने की कोशिश करेगा।

बन्दर शहद पी कर वापस चला गया और हिरन को अपनी साही से मुलाकात की कहानी सुनायी। यह कहानी सुन कर हिरन ने तुरन्त ही अपना एक और दूत साही के पास इस सन्देश के साथ

भेजा कि वह आखिरी बार उससे पूछ रहा है कि साही अपना खेत छोड़ने के लिये राजी था कि नहीं?

इस बार साही ने सारे जानवरों को अपने आपसे लड़ने की चुनौती दी पर उसने साथ में यह भी कहा कि वह सारे जानवरों को अपने आपसे लड़ने से पहले अपने घर में बीयर[12] पिलायेगा।

सारे जानवर यह सुन कर बहुत खुश हुए और उसके घर में बीयर पीने आये तो उसने सबको अपने घर में अन्दर बुलाया और जब वे सब अन्दर आ गये तो उसने घर का दरवाजा बन्द कर दिया।

फिर वह बन्दर से बोला — "तुम सबसे पहले हिरन के दूत बन कर आये थे इसलिये सबसे पहले मैं बीयर तुम्हें ही दूँगा। जाओ और जा कर बीयर का एक बर्तन खोलो और उसमें अपना सिर डाल कर उसमें से बीयर की पहली खुशबू सूँघो कहीं ऐसा न हो कि वह निकल जाये।"

ऐसा कह कर वह खुद अलमारी के ऊपर चढ़ गया।

बन्दर ने खुशी खुशी बीयर का एक बर्तन खोला और बीयर सूँघने के लिये उसमें अपना सिर डाला ही था कि उसमें से बहुत सारी मधुमक्खियाँ निकल पड़ीं। उन्होंने उसके सारे शरीर पर काट लिया और वह तुरन्त ही मर गया।

[12] Beer is a kind of liquor. It is very light.

साही यह देख कर अपने उस छेद से घर के बाहर भाग गया जो उसने अपने घर की छत में पहले से ही बना रखा था।

फिर वे मधुमक्खियाँ सारे कमरे में फैल गयीं और उन्होंने दूसरे जानवरों को भी काटना शुरू कर दिया। यह देख कर वे जानवर पागल से हो गये और इधर उधर भागने लगे। पर क्योंकि साही के घर का दरवाजा बन्द था इसलिये कोई जानवर वहाँ से बाहर नहीं भाग पाया।

इधर उधर भागने के चक्कर में वे आलमारी से टकरा गये और अलमारी पर रखे बीयर के दूसरे बर्तन भी खुल गये। उनमें से भी बहुत सारी मधुमक्खियाँ निकल पड़ीं और जानवरों को काटने लगीं। इस तरह उनमें से बहुत सारे जानवर बहुत जल्दी ही मर गये।

जब साही ने देखा कि सारे जानवर मर गये सिवाय एक कछुए के तो वह घर के अन्दर आ गया और उसने उस कछुए की पीठ को जानवरों का माँस काटने के लिये मेज की तरह इस्तेमाल किया।

माँस काटने के बाद वह उससे बोला — "ओ कछुए, मैं तुमको अपना एक पुराना वाला काँटा दूँगा और फिर तुम अपने घर चले जाना।"

साही ने कछुए को अपना एक पुराना काँटा दिया, कछुए ने उसे अपने बालों में रख लिया और अपने घर चला गया।

जब वह अपने घर जा रहा था तो एक चीते और एक भालू के घर के पास उसने एक पेड़ के खोखले तने से एक आवाज

निकाली। उस आवाज को सुन कर चीते की पत्नी और भालू की पत्नी अपने अपने घरों से बाहर आ गयीं।

चीते की पत्नी और भालू की पत्नी ने कछुए से पूछा — “कछुए भाई, हमारे पति कहाँ हैं? वे तुम्हारे साथ क्यों नहीं आये?”

कछुआ बोला — “वे सब मर गये। यहाँ तक कि साही भी मर गया। मैं अकेला ही बचा हूँ। देखो, निशानी के तौर पर मैं साही का एक काँटा भी लाया हूँ।”

पर चीते और भालू दोनों की पत्नियों को उस पर विश्वास ही नहीं हुआ कि साही मर सकता है सो वे दोनों साही के पास दौड़ी गयीं। वहाँ जा कर उन्होंने साही से पूछा — “क्या कछुए ने तुम्हें मार डाला?”

साही बड़ी ज़ोर से हँसा और हँस कर बोला — “अरे अगर मैं मर गया होता तो क्या तुम्हारे सामने ऐसे खड़ा होता? नहीं नहीं मैं मरा नहीं हूँ, देखो, मैं तो ज़िन्दा हूँ।”

“तो फिर उसके पास तुम्हारा काँटा कहाँ से आया?”

साही बोला — “वह काँटा तो मैंने उसे अपने आप ही दिया था न कि उसने मुझसे लिया था। उसको वह अपने बालों में लगा कर ले गया।

और उसकी पीठ पर रख कर तो मैंने माँस काटा था। अगर तुम लोग ठीक से देखोगी तो तुम्हें उसकी पीठ पर मेरे माँस काटने के निशान भी दिखायी दे जायेंगे।”

चीते की पत्नी और भालू की पत्नी दोनों तुरन्त ही अपने घर वापस आयीं और उन्होंने कछुए की पीठ देखी तो सचमुच ही उस की पीठ पर जानवरों के मॉस काटने के निशान थे।

वे दोनों कछुए से बहुत नाराज हुईं और बोलीं — "तुमने हम को धोखा दिया है।" और यह कह कर उसको पकड़ कर एक पेड़ में रख दिया।

इससे कछुए को बड़ा दर्द हुआ। वह बोला — "मुझे यहॉ बड़ा दर्द हो रहा है। तुम मेरी पूँछ पर ज़ोर से मारो और जब मेरा सिर बाहर आ जाये तो तुम मुझे खा जाना ताकि मैं मर जाऊँ।"

चीते की पत्नी और भालू की पत्नी ने ऐसा ही किया। इस तरह कछुआ तो मर गया पर आज तक कछुए की पीठ पर साही के मॉस काटे के निशान पाये जाते हैं।



6 एक आदमी और बन्दर[13]

एक दिन एक आदमी और उसकी पत्नी अपने खेत में कुछ बल्ब[14] बोने गये। कुछ बन्दर उन लोगों को बल्ब बोते देख रहे थे। उन बल्बों को देख कर उनके मुँह में पानी आ गया। वे उनको खाने का विचार करने लगे। सो उनको एक तरकीब सूझी।

उन्होंने उस आदमी से कहा — "तुम लोग इन बल्बों को ठीक से नहीं बो रहे। सबसे पहले तुम्हें इन्हें पकाना चाहिये, फिर इनको अलग अलग पत्तों में बाँधना चाहिये।

उसके बाद हर एक के पास बाँस के प्याले में पानी भर कर इनको रात भर छोड़ देना चाहिये। फिर जब सुबह तुम इनको देखने आओगे तो तुमको ये घुटनों तक लम्बे मिलेंगे।"

उस आदमी ने ऐसा ही किया जैसा कि बन्दरों ने उससे कहा था पर जब वह अगली सुबह अपने बल्ब देखने आया तो यह देख कर बहुत दुखी हुआ कि उसके सारे बल्ब गायब थे। पर उसको यह समझने में देर नहीं लगी कि यह सब उन बन्दरों की चालाकी थी। बन्दर ही उसके सारे बल्ब खा गये थे।

---

[13] A Man and a Monkey – a folktale from the Lakher Tribe of Norh-Eastern part of India, Asia. Taken from the book "Discovery of North-East India: Geography, History, Culture. Vol 8. Edited by Suresh Kant Sharma, Usha Sharma. Delhi, Mittal Books. It is availabale on Internet.

[14] There are many ways to grow a plant. Some needs seed while some are grown just by planting a branch of that plant. Some are grown by planting their bulbs, for example onions, garlic, tulips etc are grown by planting bulbs.

अब उस आदमी ने अकेले ही उन बन्दरों से बदला लेने का विचार किया। वह घर आया और सड़ी हुई पिसी हुई बीन्स अपने शरीर के ऊपर लपेट कर अपने घर के फर्श पर लेट गया जैसे मर गया हो। सड़ी हुई पिसी हुई बीन्स को शरीर पर लपेटने की वजह से उसके सारे शरीर में से बदबू आ रही थी।

उसकी पत्नी ने उसके शरीर को कुँए के पास एक ऊँचे से चबूतरे पर रख दिया और खुद उसके पास बैठ कर रोने लग गयी जैसे वह सचमुच में ही मर गया हो।

बन्दरों ने जब यह सुना कि खेत वाला आदमी मर गया है तो वह उसकी पत्नी को ढाँढस बँधाने आये।

उन बन्दरों में साइज़ में जो सबसे बड़ा बन्दर था वह रो कर बोला — "जब यह मेरा पिता ज़िन्दा था तब यह मुझको बहुत अच्छी अच्छी सब्जियाँ खाने को देता था। अब यह चला गया तो मुझे वैसी सब्जियाँ कौन खिलायेगा।"

उस आदमी की पत्नी रोते हुए बोली — "तुमने मुझसे मरने से पहले कहा था कि मेरे पास मेरा भाला रख देना।"

उस बड़े बन्दर ने जैसे ही यह सुना तो वह उस आदमी का भाला उठा लाया और उसके शरीर के पास ला कर रख दिया।

अब उस आदमी की पत्नी ने और ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू कर दिया तो बन्दर ने उसके पास उसकी बन्दूक भी ला कर रख दी।

तभी उस आदमी ने थोड़ी सी ऑख खोल कर अपने चारों ओर देखा।

उन बन्दरों में एक छोटी सी बॅदरिया भी थी। उस समय उसे बच्चे की आशा थी। वह उस आदमी के शरीर के पास ही बैठी थी और बड़ी सहानुभूति से उसके बेजान शरीर को देख रही थी।

पर यह क्या? उसने देखा कि उस आदमी ने तो ऑख खोल कर अपने चारों ओर देखा। वह तुरन्त ताड़ गयी कि वह आदमी मरा नहीं था बल्कि ज़िन्दा था और मरने का नाटक कर रहा था।

उसने आदमी के ज़िन्दा होने की बात सब बन्दरों को बता दी। पर किसी बन्दर ने उस पर विश्वास नहीं किया।

बल्कि वह बड़ा बन्दर तो बोला — "पर इसके शरीर से तो कितनी बदबू आ रही है यह ज़िन्दा कैसे हो सकता है?"

पर बॅदरिया को अपनी ऑखों पर विश्वास था सो वह वहॉ से उठी और एक कूड़े वाले गड्ढे के पास जा बैठी।

अब उस आदमी की पत्नी ने रोना बन्द कर दिया था। वह बड़े बन्दर से बोली — "देखो, ज़रा दरवाजा ठीक से बन्द कर दो।"

बन्दर उठा और उसने घर का दरवाजा ठीक से बन्द कर दिया। बन्दर के दरवाजा बन्द करते ही वह आदमी उठ कर बैठा हो गया और उसने सारे बन्दरों को अपनी बन्दूक से मार दिया बस केवल वह बॅदरिया ही बची जो अपनी जान बचाने के लिये उस समय उस गड्ढे में कूद गयी थी।

आज जितने भी बन्दर इस दुनियॉ में मौजूद हैं वे सब उस बॅदरिया की ही सन्तान हैं।



7 लड़की जिसने बन्दर से शादी की[15]

एक बार की बात है कि एक लड़की नदी पर नहाने और पानी भरने गयी। उसने नहाने के लिये अपने कपड़े उतारे, उनको किनारे पर रखा और नहाने के लिये पानी में चली गयी। जब वह नहा रही थी तो एक बन्दर आया और उसके कपड़े उठा कर भाग गया।

लड़की ने बन्दर का पीछा किया और चिल्ला कर बोली — "ओ बन्दर, रुक जाओ, मेरे कपड़े वापस करो।"

बन्दर बोला — "अगर तुम मुझसे शादी करोगी तभी मैं तुम्हारे कपड़े वापस करूँगा।"

लड़की यह सुन कर हैरान रह गयी। वह बोली — "यह तुम क्या कह रहे हो? मैं तुमसे शादी कैसे कर सकती हूँ? मैं एक लड़की हूँ और तुम बन्दर।"

बन्दर बोला — "ठीक है। मत करो शादी मुझसे। मैं भी तुम्हारे कपड़े नहीं दूँगा।"

लड़की बेचारी यह सुन कर बहुत ही परेशान हुई पर वह कुछ कर नहीं सकती थी। आखिर थक हार कर वह उस बन्दर से शादी

[15] Girl Who Married a Monkey – a folktale from Lakher Tribe of North-Eastern India, Asia. Taken from the book "Discovery of North-East India: Geography, History, Culture. Vol 8. Edited by Suresh Kant Sharma, Usha Sharma. Delhi, Mittal Books. It is availabale on Internet.

करने को तैयार हो गयी। शादी करने के बाद वह बन्दर उसको अपने घर ले गया।

जब बन्दर उस लड़की को अपने घर ले जा रहा था तो रास्ते में उस लड़की ने बन्दर से पूछा — "तुम मुझे खिलाओगे क्या?"

बन्दर बोला — "मैं तुम्हारे लिये लोगों के खेत से चावल चुरा कर लाऊँगा वही तुमको खिलाऊँगा।"

इस तरह वह लड़की बन्दर के साथ रहने लगी। बन्दर उस लड़की के लिये लोगों के खेतों से मक्का और चावल चुरा कर लाता था। वह उसी को पकाती थी और खाती थी।

वह लड़की उस बन्दर के साथ रहती जरूर थी पर वह हमेशा यही सोचती रहती कि किस तरह वह बन्दर के घर से भाग जाये।

एक दिन जब उसका बन्दर पति बाहर गया हुआ था तो उसने उसकी बूढ़ी माँ को जो उसी घर में रहती थी मार दिया। उसने उसकी खाल निकाल ली और खुद उसको पहन कर बैठ गयी।

जब बन्दर घर वापस आया तो उसने माँ को देख कर उससे पूछा — "माँ, मेरी पत्नी कहाँ है?"

उसकी पत्नी जो उसकी माँ बनी बैठी थी बोली — "बेटा, मुझे क्या मालूम तेरी पत्नी कहाँ है, कहीं भाग गयी होगी।"

यह सुन कर बन्दर पति बहुत गुस्सा हुआ और बोला — "तुमको नहीं पता कि मेरी पत्नी कहाँ भाग गयी? अच्छा तो यह है कि तुम भी भाग जाओ।"

और उसने उसको डंडे से कई बार पीटा।

लड़की यह सुन कर बहुत खुश हुई और बोली — “ठीक है, यदि तुम मुझे इस घर में नहीं देखना चाहते तो मैं अभी इस घर से चली जाती हूँ।”

और यह कह कर वह लड़की जितनी तेज़ भाग सकती थी उतनी तेज़ वहाँ से भाग ली।

भागते भागते वह अपने भाइयों के घर आ पहुँची और सारा हाल उसने अपने भाइयों को बताया। यह सब सुन कर उसके भाई भी बहुत गुस्सा हुए और बहिन के बन्दर पति को अपनी बन्दूक से गोली मारने चल दिये पर वह बन्दर पति उनको कहीं मिला ही नहीं सो वे उसको बिना मारे ही वापस लौट आये।

कुछ दिनों बाद उस लडकी के बच्चा हुआ। अब था तो वह बन्दर का बच्चा ही न, इसलिये वह बन्दर जैसा ही था।

लड़की के भाइयों को अपनी बहिन का यह बन्दर बच्चा फूटी आँख नहीं भाता था। वे उसको मारना चाहते थे मगर लड़की का तो वह अपना बच्चा था इसलिये वह उनको उसे मारने नहीं देती थी।

धीरे धीरे वह बन्दर बच्चा बड़ा हो गया। एक दिन उसकी माँ ने कहा — “मेरे बेटे, अब तू बड़ा हो गया है। अब तुझे जंगल चले जाना चाहिए और अपने पिता के पास ही रहना चाहिए।”

यह सुन कर वह बन्दर बच्चा जंगल चल दिया। वह पहाड़ियों के पास आराम करता था, पेड़ों पर चढ़ता था पर बोलता नहीं था।

जिस दिन वह बन्दर बच्चा जंगल की तरफ चला उसके जाने के कुछ देर बाद ही उसकी माँ ने जिन मशीन से कपास साफ करनी शुरू की।

जब उस मशीन की आवाज बन्दर बच्चे के कानों में पड़ी तो वह बोला — "ओह मेरी माँ अकेली कपास साफ कर रही है।" यह सोच कर वह बहुत दुखी हो गया और तुरन्त ही घर की तरफ दौड़ चला।

बन्दर बच्चे की माँ को भी अपने बेटे की बहुत याद आ रही थी पर वह अपने भाइयों के डर से अपने बन्दर बच्चे को साथ रखने में डरती थी। सो जब उसका बेटा घर आया तो वह उसको देख कर तो बहुत खुश हुई पर फिर जंगल भेजने पर मजबूर हो गयी।

अगले दिन उसने फिर बन्दर बच्चे को जंगल भेज दिया और उस दिन उसने कपास साफ करने वाली मशीन नहीं चलायी। सो बन्दर का बच्चा भी जब पेड़ पर चढ़ा तो उसे जिन की आवाज नहीं सुनायी दी और वह फिर हमेशा के लिये जंगल की तरफ चला गया।



8 जादूगर नर[16]

एक बार की बात है कि लाइथा[17] नाम के एक आदमी ने शादी की। कुछ दिनों बाद उसको पता चला कि उसकी पत्नी माँ बनने वाली थी तो यह सुन कर लाइथा बहुत खुश हुआ।

उन लोगों का चावल का खेत था सो वे लोग वहीं काम करते थे। लाइथा की पत्नी भी वहीं काम करती थी सो वे दोनों वहीं काम करते रहे।

एक दिन लाइथा की पत्नी जब खेत पर काम करने जा रही थी तो उसका बच्चा उसके पेट में से ही बोला — "माँ, आज बहुत तेज़ बारिश होने वाली है पानी से बचने के लिये तुम खजूर का एक पत्ता साथ लेती जाओ।"

माँ बोली — "तुम तो अभी मेरे पेट के अन्दर ही हो तुम्हें बारिश का क्या पता?"

उसने बच्चे की बातों पर ध्यान नहीं दिया और वह खेत पर काम करने चली गयी। वहाँ पहुँचने के बाद तो इतनी ज़ोर की बारिश हुई कि वह तो वहाँ सारी की सारी भीग गयी।

[16] The Magician Nar – a folktale from Lakher Tribe of North-Eastern part of India, Asia. Taken from the book "Discovery of North-East India: Geography, History, Culture. Vol 8. Edited by Suresh Kant Sharma, Usha Sharma. Delhi, Mittal Books. It is availabale on Internet.

[17] Liatha – name of the man

उसको यह सोच कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसके पेट में बच्चे को कैसे पता चला कि आज इतनी ज़ोर की बारिश आने वाली है।

अगले दिन जब वह फिर खेत जाने के लिये तैयार हुई तो वह बच्चा फिर बोला — "माँ, आज बहुत गर्म होने वाला है, खेत पर अपने साथ पानी ले जाओ पीने के लिये।"

पर माँ ने फिर वही जवाब दिया — "कल तो कितनी तेज़ बारिश हुई थी ओर आज तुम गर्मी के बारे में बता रहे हो। तुम मौसम के बारे में इतना सब कैसे जानते हो, तुम तो अभी मेरे पेट के अन्दर ही हो?"

और वह खेतों को पीने का पानी लिये बिना ही चली गयी बल्कि वह खजूर का एक पत्ता साथ में ले गयी।

पर खेतों पर पहुँचने पर वह खजूर का पत्ता तो काम नहीं आया क्योंकि उस दिन दिन वाकई बहुत गर्म था पर हाँ क्योंकि वह पानी साथ में ले कर नहीं गयी थी इसलिये वह घर प्यासी जरूर लौटी।

कुछ दिनों बाद वह बच्चा पैदा हुआ। उसका नाम रखा गया नर।

खेतों पर इस समय फसल पक चुकी थी उसकी कटाई हो रही थी सो दोनों पति पत्नी खेत काटने में लगे हुए थे। वे नर को कहाँ छोड़ते इसलिये वे उसको अपने साथ ही खेतों पर ले जाते थे।

खेत पर ही उनका एक छोटा सा घर था उसके बरामदे में वे उसको लिटा देते थे और खुद खेतों में काम करते रहते थे।

एक दिन नर ने अपने ऊपर एक पतंग उड़ती हुई देखी। वह रो रही थी। उसको रोते देख कर नर ने उससे पूछा — "ओ पतंग, तुम क्यों रो रही हो? क्या आज बहुत बारिश होने वाली है? या फिर आज का दिन बहुत गर्म होने वाला है?"

नर के माता पिता ने जो थोड़ी ही दूर पर काम कर रहे थे किसी आदमी के बात करने की आवाज सुनी तो उनको लगा कि घर में कोई आदमी है जो बोल रहा है सो नर का पिता ज़ोर से बोला — "कौन है, थोड़ा शान्त रहो। इतनी ज़ोर से मत बोलो मेरा बेटा जाग जायेगा।"

पर बच्चे ने पतंग से अपना सवाल फिर से किया तो पिता को फिर से बात करने की आवाज सुनायी दी। वह फिर बोला — "कौन है हमारे घर में जो इतना शोर मचा रहा है? मैं कह रहा हूँ कि शान्त हो जाओ और वह है कि सुनता ही नहीं।"

इतना कहते कहते वह घर की ओर दबे पाँव बढ़ा कि देखूँ तो वहाँ कौन है। पर वहाँ जा कर उसे सिवाय अपने बच्चे के और कोई भी दिखायी नहीं दिया।

उसने सोचा कि या तो उसको कुछ वहम हो गया था और वहाँ कोई था ही नहीं और अगर वहाँ कोई था भी तो लगता है कि वह वहाँ से भाग गया है।

अगले दिन नर ने पतंग से फिर बात की तो नर के पिता ने फिर किसी के बात करने की आवाज सुनी।

अबकी बार वह घर की तरफ दबे पॉव बढ़ा कि देखूँ तो सही कौन है। पर वहॉ जा कर उसने देखा कि वहॉ तो उसका अपना बच्चा ही बात कर रहा था।

यह देख कर उसको बहुत दुख हुआ और उसे डर लगा कि एक दिन उसका बेटा उसकी सारी जादुई ताकतें उससे ले लेगा क्योंकि वह तो खुद ही एक बहुत अच्छा जादूगर था।

सो इससे बचने के लिये उसने नर की जीभ का एक छोटा सा टुकड़ा काट लिया। लाइथा ने अपना जादू अपनी पीठ पर बने एक गूमड़[18] में रखा हुआ था जो उसके कन्धे की हड्डी के बिल्कुल नीचे था।

नर जब बारह साल का हो गया तो वह चिड़ियों का शिकार करने लायक हो गया था। एक दिन वह एक गली से जा रहा था कि वहॉ उसने एक लड़की को बैठे कपड़ा बुनते हुए देखा।

उसने उसको छेड़ना शुरू कर दिया। उसने उस लड़की की कपड़ा बुनने की शटल फेंक दी। यह सब उस लड़की को अच्छा नहीं लगा।

[18] Translated for the word "Bump". It is a raised part on any part of body such as Koobad a hunchback has.

लड़की बोली — "मुझे तंग मत करो। यदि तुम मुझे तंग नहीं करोगे तो मैं तुम्हें बताऊँगी कि तुम असल में क्या हो।"

नर ने उसको तंग करना बन्द कर दिया और उससे पूछा — "अब बताओ मैं असल में क्या हूँ।"

वह लड़की बोली — "तुम्हारे पिता ने बचपन में ही तुम्हारी जीभ में से एक टुकड़ा काट लिया था ताकि वह तुम्हारा जादू ले सकें।"

नर तुरन्त ही घर गया और पेट के दर्द का बहाना बना कर पड़ गया। उसके पिता ने उसके ऊपर बहुत से जादू किये पर उसका कोई जादू उसके पेट के दर्द पर काम नहीं कर सका।

फिर नर ने अपने पिता से कहा कि यदि वह उसको अपनी पीठ पर बिठा कर थोड़ी देर घुमा दे तो शायद उसके पेट का दर्द ठीक हो जाये।

उसके पिता ने उसको उठा तो लिया पर इस डर से कि कहीं वह उसका जादू न चुरा ले उसको अपनी जाँघ पर बिठा कर घुमाने लगा।

पर इससे तो नर का काम नहीं बनता था सो वह बोला — "पिता जी मुझे थोड़ा सा और ऊपर की तरफ कर लीजिये।"

अबकी बार उसके पिता ने उसको अपने सिर से भी ऊँचा कर लिया।

नर फिर बोला — "पिता जी अब मैं बहुत ऊपर हो गया। थोड़ा सा और नीचे।"

आखिर उसके पिता ने उसको अपने कन्धे पर बिठा लिया। जैसे ही वह पिता के कन्धे पर बैठा उसने पिता के गूमड़ में काट लिया और उस काटे हुए हिस्से को सारा का सारा निगल गया।

हालाँकि उसके पिता ने उससे बहुत कहा कि कम से कम वह थोड़ा सा जादू तो उसके लिये छोड़ दे पर उसने जवाब दिया — "पिता जी अब तो मैंने वह सारा का सारा निगल लिया।"

नर की अक्लमन्दी

जब नर और बड़ा हो गया तो उसने अपनी अक्लमन्दी और ताकत को जाँचना चाहा सो एक दिन उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी, आपको क्या लगता है सूअर के ज़्यादा पैसे मिलेंगे या चाव[19] के?"

उसके पिता ने कहा — "इसमें भी कोई पूछने की बात है, सूअर के पैसे ज़्यादा मिलेंगे।"

"देखते हैं" कह कर यह बताने के लिये कि चाव के पैसे ज़्यादा मिलेंगे वह चाव बेचने के लिये चला गया और अपने पिता को सूअर बेचने के लिये भेज दिया।

---

[19] Chaaw – a kind of an animal

लोगों ने सूअर खरीदने की तो हिम्मत नहीं की पर चाव क्योंकि सभी खाते थे इसलिये उसे हर आदमी थोड़ा थोड़ा लेना चाहता था। इस तरह चाव तो जल्दी खत्म हो गया पर उसके पिता का सूअर नहीं बिका।

नर ने अपने पिता से पूछा — "पिता जी, आप ठीक थे या मैं?"

उसके पिता ने जवाब दिया — "बेटा तुम ही ठीक थे। तुम तो टौसौ[20] हो। तुम तो जब अपनी माँ के पेट में थे तुम तभी से बहुत अक्लमन्द हो।"

कुछ दिन बाद नर ने अपने पिता से पूछा — "पिता जी, अगर एक हिरन और एक चूहा दोनों सड़क पर भागे जा रहे हों तो लोग किसका पीछा करेंगे, हिरन का या चूहे का?"

उसके पिता ने तुरन्त जवाब दिया — "यह भी कोई पूछने की बात है लोग हिरन का पीछा करेंगे।"

नर ने अपने पिता को फिर से गलत साबित करने के लिये खुद तो एक चूहा सड़क पर छोड़ दिया और अपने पिता से एक हिरन छुड़वा दिया।

जैसे ही हिरन को छोड़ा गया वह तो तुरन्त ही भाग गया मगर जब चूहा छोड़ा गया तो उसे सबने देखा। वे सब उसके पीछे दौड़े, उसको पकड़ा और उसको मार दिया।

---

[20] Tawsaw

इस प्रकार नर ने यह फिर से साबित कर दिया कि वह सही था और उसका पिता गलत था पर नर के पिता ने उसे फिर से वही जवाब दिया जो उसने उसे पहले दिया था।

नर और नसाईपौ[21]

नर अब बहुत होशियार जादूगर हो गया था और अब वह किसी से डरता भी नहीं था। एक दिन नर का पिता एक गाँव के सरदार नसाईपौ से मिलने गया।

नसाईपौ भी एक बहुत बड़ा और होशियार जादूगर था। जब नर का पिता नसाईपौ के पास पहुँचा तो नसाईपौ ने उससे पूछा — "तुम यहाँ तक मौत की नदी पार कर के आये हो, है न?"

नर के पिता ने कहा — "हाँ, मैं मौत की नदी पार कर के आया हूँ।"

इसके बाद नसाईपौ ने बीयर खोली। उसमें से उसने खुद भी ली और नर के पिता को भी दी। जैसे ही नर के पिता ने बीयर चखी वह मर गया। नसाईपौ ने उस बीयर को नरक के पिता को देने से पहले ही उसके ऊपर जादू कर दिया था।

नर ने जब यह सुना कि नसाईपौ ने उसके पिता को मार डाला तो वह बहुत गुस्सा हो गया और उसने नसाईपौ से बदला लेने का विचार किया। वह नसाईपौ के गाँव चल दिया।

[21] Nasaipaw – the Chief of the village

नसाईपौ ने नर को अपने घर की तरफ आते देख लिया था तो उसने अपने जादुओं को बुलाया और उनको खाने पर, पूरे घर में और घर के दरवाजे पर तैनात कर दिया ताकि नर उसको कोई नुकसान न पहुँचा सके।

नर भी होशियार था। उसने भी यह सब दूर से ही देख लिया था।

नसाईपौ अपने घर के बाहर पहरा दे रहा था सो नर एक चूहा बन गया और रात के समय नसाईपौ के घर में एक छेद में से हो कर घुस गया। वह एक भट्टी के पास जा कर निकला और वहाँ जा कर वह फिर से आदमी बन गया।

थोड़ी देर में नसाईपौ अपने घर के अन्दर आया तो नर को घर के अन्दर देख कर हैरान रह गया। उसने पूछा — “तुम यहाँ अन्दर कैसे आये? क्या मौत की नदी से हो कर?”

नर बोला — “नहीं, मैं तो ज़िन्दगी की नदी से हो कर तुम्हारे घर चावल और माँस खाने आया हूँ।”

नसाईपौ ने उसका स्वागत किया और अगले दिन सुबह नर के आने की खुशी में बीयर की एक दावत दी। उसने नर की बीयर की नली में जिससे वह बीयर पीने वाला था एक बड़ा सा साँप घुसा दिया।

नर को भी पता चल गया कि उसकी बीयर पीने वाली नली में एक सॉप है सो उसने नसाईपौ को सामने वाले दो पहाड़ों की तरफ देखने के लिये कहा जो आपस में लड़ते से दिखायी दे रहे थे।

जब नसाईपौ उधर देख रहा था तो उसने खुद चील बन कर उस नली में से सॉप को बाहर निकाल कर फेंक दिया और वह फिर से नर बन कर बैठ गया।

उसने अपनी बीयर पीनी शुरू कर दी और नसाईपौ की बीयर पर जादू डाल दिया।

नसाईपौ ने अपनी बीयर पी तो उसके होठ बीयर पीने वाली नली से चिपक गये और उसका पेट बीयर के बर्तन से चिपक गया।

अब तो वह हिल भी नहीं सकता था। थोड़ी देर में ही वह मर गया। नर ने उसका सारा सामान लिया, उसके सारे दास लिये और घर वापस आ गया।

नर की चीता आदमी से मुलाकात

एक बार नर मछली पकड़ने के लिये नदी पर गया। वहॉ उसने मछली पकड़ने के लिये नदी के ऊपर की तरफ जाल फेंका तो उसका जाल एक चीता आदमी[22] के जाल में फॅस गया क्योंकि उस समय चीता आदमी ने भी अपना मछली पकड़ने वाला जाल नदी में फेंक रखा था। वह उसने नदी के नीचे की तरफ फेंका था।

[22] Tigerman – the man who can change his shape both in Tiger and the human being

नर ने चीता आदमी को मारना चाहा और चीता आदमी ने नर को खाना चाहा पर दोनों ही अपनी अपनी कोशिशों में नाकामयाब रहे।

दोनों ने एक दूसरे के नाम पूछे। नर ने बताया कि उसका नाम नर था और चीता आदमी ने बताया कि उसका नाम कियाथ्यू[23] था। दोनों दोस्त बन गये और दोस्ती के तौर पर उन्होंने अपनी अपनी पकड़ी हुई मछलियाँ एक दूसरे से बदल लीं।

पर नर ने देखा कि कियाथ्यू की मछलियों के तो सिर ही नहीं थे क्योंकि कियाथ्यू ने जैसे ही अपनी मछलियाँ पकड़ीं वैसे ही उनके सिर खा लिये थे। वह चीता आदमी था न? सो नर को बिना सिर की मछलियाँ ही अपने घर ले जानी पड़ीं।

कियाथ्यू भी एक बहुत बड़ा जादूगर था। वह एक मधुमक्खी बन गया और नर के पीछे उड़ चला। नर भी पहचान गया कि कियाथ्यू उसके पीछे मधुमक्खी बना चला आ रहा था। जब नर घर पहुँचा तो उसने अपनी सारी मछलियाँ माँ को दे दीं।

माँ ने उनको देखते ही कहा — “अरे बेटा, आज यह कैसे हुआ कि आज जितनी भी मछलियाँ तुमने पकड़ीं उनका किसी का भी सिर नहीं है?”

[23] Kiatheu – name of the Cheetah Man

नर बोला —"मॉ, आज मैंने उन सबके सिर काट दिये थे और उनको पका कर खा गया हूॅ।" उसकी मॉ यह सुन कर चुप हो गयी।

जब कियाथ्यू ने देखा कि नर ने अपनी मॉ को सच बात नहीं बतायी कि वह एक चीता आदमी का दोस्त बन गया था तो वह बहुत खुश हुआ और मन ही मन नर की तारीफ करते हुए अपने घर चला गया।

कियाथ्यू नर से बहुत खुश था सो एक दिन उसने नर को कहलवाया कि वह उससे मिलना चाहता था और वह बहुत खुश होगा अगर वह उसके पास आ कर कुछ दिन उसके पास ही ठहरे।

नर ने भी कियाथ्यू को कहला भेजा कि वह जरूर आयेगा और उसको अपने आने का दिन भी बता दिया।

कियाथ्यू के गॉव के सारे लोग चीता आदमी थे इसलिये उसने उन सब लोगों से कह दिया कि उसका एक दोस्त उससे मिलने आ रहा था इसलिये वे सब आदमियों की शक्ल में दिखायी देने चाहिये, चीते की शक्ल में नहीं।

नर अपने बताये दिन पर कियाथ्यू के गॉव आ पहुॅचा। नर ने आते ही पहला सवाल कियाथ्यू से यह पूछा — "मेरे दोस्त, तुम्हारे माता पिता कहॉ हैं?"

कियाथ्यू ने उसको टालने के लिये कहा — "मेरे माता पिता बहुत गरीब हैं और वे इस लायक नहीं हैं कि उनसे मिला जाये।"

नर बोला — "ऐसा नहीं हो सकता कि किसी के भी माता पिता चाहे वे कितने भी गरीब क्यों न हों कि वे मिलने के लायक न हों। तुम मुझे उनसे मिलाओ मुझे उनसे मिल कर बहुत खुशी होगी।"

जब नर ने बहुत जिद की तो कियाथ्यू ने नर को बता दिया कि वे कहाँ थे और फिर वह उसको उनसे मिलाने ले गया।

वे एक टोकरी में बैठे थे। नर ने उनको जब टोकरी में देखा तो वहाँ तो दो चीते बैठे हुए थे।

उन्होंने तुरन्त ही नर को काटने की कोशिश की तो तुरन्त ही नर ने कहा — "तुम्हारे माता पिता कितने सुन्दर हैं, कियाथ्यू।"

यह सुन कर कियाथ्यू के माता पिता बहुत खुश हुए और तुरन्त ही एक आदमी और एक औरत के रूप में आ कर नर के साथ बैठ गये।

नर ने उनको कुछ कपड़े दिये और उन लोगों ने नर के लिये एक दावत का इन्तजाम किया। नर के आदर में और उसके आने की खुशी में एक सूअर भी मारा गया।

कियाथ्यू के पास एक पेड़ था जिस पर बजाय फल और फूल लगने के बहुत सारे तरह के मोती लगते थे। उसने नर को वह पेड़ दिखाते हुए कहा कि वह उस पेड़ पर से जितने जी चाहे मोती ले सकता था।

नर ने दस थैले मोती से भर लिये और फिर उनको अपने जादू के ज़ोर से थोड़े से मोतियों में बदल कर उनको अपने तम्बाकू वाले डिब्बे में रख लिया ताकि उनको ले जाने में आसानी हो।

नर कियाथ्यू के पास पॉच दिन रहा और फिर घर वापस आ गया। नर के वहॉ से चलने से पहले कियाथ्यू ने उसको सावधान कर दिया था कि जब वह घर जाये तो रास्ते में पॉच दिन तक कहीं न रुके। और यदि उसे टट्टी पेशाब भी जाना हो तो उसको वह खमीर[24] से ढक दे।

उसने नर को यह भी बताया कि — "मैं अपने गॉव वालों को बता दूॅगा कि तुम अभी यहीं हो। मैं अपना ढोल भी पॉच दिन तक बजाऊॅगा क्योंकि अगर उनको पता चल गया कि तुम यहॉ से चले गये हो तो वे तुम्हारा पीछा करेंगे और तुम्हें खा जायेंगे।"

नर ने उसको उसकी इस सलाह के लिये धन्यवाद दिया और अपने घर चल दिया पर अपनी बेवकूफी की वजह से वह रास्ते में एक दिन के लिये रुक गया।

इधर जब नर को गये पॉच दिन बीत गये तब कियाथ्यू ने अपने गॉव वालों को बताया कि नर चला गया है। यह सुनते ही गॉव वाले नर के पीछे दौड़ पड़े।

---

[24] Translated for the word "Yeast"

मगर कियाथ्यू को डर लगा कि यदि कहीं रास्ते में किसी भी वजह से नर को रुकना पड़ा तो मुश्किल हो जायेगी इसलिये वह खुद भी उनके साथ ही भाग लिया।

कियाथ्यू का शक सही था। नर बीच में एक दिन के लिये रुक गया था सो उन लोगों ने नर को जल्दी ही पकड़ लिया।

नर को पहले ही पता चल गया कि गॉव वाले उसके पीछे आ रहे थे सो वह जंगली सूअर के इकट्ठे किये हुए पत्तों के एक ढेर में छिप कर बैठ गया।

कियाथ्यू को भी पता चल गया कि नर पत्तों के ढेर में छिपा हुआ था सो वह उसी पत्तों के ढेर पर बैठ गया और गॉव वालों को थोड़ी देर आराम करने को कहा। गॉव वाले भी आराम करने बैठ गये।

कुछ देर बाद वह उनसे बोला — "मेरे भाइयो, तुम लोग सबसे ज़्यादा किससे डरते हो?"

गॉव वाले बोले — "हम वही सोचते हैं जो तुम सोचते हो और हम भी सबसे ज़्यादा उसी से डरते हैं जिससे तुम डरते हो।"

कियाथ्यू बोला — "मैं अपनी बात बताऊॅ तुम्हें? मुझे लगता है कि मैं तो सबसे ज़्यादा बादल से डरता हूॅ। यदि बादल मेरे चारों तरफ आ जायें तो मैं तो बहुत ही डर जाऊॅ और जिस पत्ते के ढेर पर मैं बैठा हूॅ यदि उसमें से कोई बहुत ज़ोर की आवाज आ जाये तब तो मैं बहुत ही डर जाऊॅ।"

नर यह सब बातें सुन रहा था। उसने अपने जादू से चारों तरफ बादल फैला दिये और जितनी ज़ोर से वह चिल्ला सकता था उतनी ज़ोर से वह चिल्ला दिया।

चारों तरफ बादल देख कर और वह ज़ोर की आवाज सुन कर सारे चीता आदमी डर के मारे वहॉ से भाग लिये केवल कियाथ्यू रह गया। कियाथ्यू ने तो उनसे यह सब केवल इसी लिये कहा था ताकि वे लोग वहॉ से भाग जायें सो वो भाग गये।

उनके जाने के बाद कियाथ्यू ने नर से कहा — "तुमने यह क्या बेवकूफी की कि तुम रास्ते में रुक गये?"

नर बोला — "हॉ, वाकई यह मेरी बेवकूफी थी। मुझे माफ कर दो।"

फिर वह अपने घर वापस आ गया। वहॉ आ कर उसने अपने उन थोड़े से मोतियों को दस थैले मोतियों में बदल लिया और काफी सारे मोती उसने अपने दोस्तों में बॉट दिये।

नर का भाई

इसके बाद नर के बड़े भाई ने भी, जो थोड़ा सा बेवकूफ था, सोचा कि वह भी नर की तरह जायेगा और मोती इकट्ठे कर के लायेगा। सो वह भी कियाथ्यू के गॉव की तरफ चल दिया। जब वह कियाथ्यू के घर पहुॅचा तो नर की तरह से उसने भी कियाथ्यू के माता पिता के बारे में पूछा।

कियाथ्यू ने उसको टालने के लिये कहा — “मेरे माता पिता बहुत गरीब हैं और वे इस लायक नहीं हैं कि उनसे मिला जाये।”

नर के भाई ने भी नर की ही तरह ही जवाब दिया — “दुनियाँ में किसी के भी माता पिता ऐसे नहीं हो सकते जिनसे न मिला जाये चाहे वे कितने भी गरीब क्यों न हों। तुम मुझे उनसे मिलाओ, मुझे उनसे मिलने में अच्छा लगेगा।”

जब नर के भाई ने बहुत जिद की तो कियाथ्यू उसको उनसे मिलाने ले गया पर जब उसने टोकरी में देखा तो वहाँ तो दो चीते बैठे हुए थे।

उनको देख कर वह डर गया और बोला — “मुझे तो डर लगता है।”

कियाथ्यू के माता पिता ने नर के भाई को झूठ मूठ काटने का बहाना किया पर यह सोच कर कि वह एक बेवकूफ है उसे माफ कर दिया।

कियाथ्यू ने नर के भाई को भी अपना वह पेड़ दिखाया जिस पर बजाय फल और फूलों के कई तरह के मोती आते थे और उससे कहा कि वह उस पेड़ पर से जितने चाहे उतने मोती ले ले।

नर के भाई ने उस पेड़ पर से जितने मोती वह आसानी से ले जा सकता था उतने मोती ले कर घर जाने को तैयार हुआ।

कियाथ्यू ने उससे भी कहा — “तुम सीधे घर जाना। रास्ते में कहीं रुकना नहीं नहीं तो मेरे गाँव वाले जो चीते हैं तुम्हारा पीछा

करेंगे और तुम्हें खा जायेंगे। मैं पॉच दिन तक ढोल बजाऊँगा और उस बीच में तुम अपने घर ठीक से पहुँच जाओगे।"

सुन कर नर का भाई अपने घर चला गया।

पर वह बेवकूफ रास्ते में दो दिन रुका। इसलिये कि वह मोतियों को एक साथ रखने के लिये धागा ढूँढता रहा। पॉच दिन के बाद कियाथ्यू के गॉव वालों ने उसका पीछा किया और उसको पकड़ लिया और खा लिया।

कियाथ्यू ने गॉव वालों से कहा — "तुमने मेरे दोस्त नर के भाई को खाया अब नर बहुत गुस्सा होगा। तुम उसको उगल दो।"

सारे चीतों ने मिल कर कियाथ्यू का कहना माना और नर के भाई को उगल दिया।

कियाथ्यू ने उसके शरीर के सारे टुकड़े जमा कर के जोड़ दिये पर उसके शरीर का एक टुकड़ा एक बूढ़े चीते की दाढ़ में फॅसा रह गया। उस टुकड़े को वह किसी तरह भी नहीं निकाल सका।

इसलिये नर के भाई का शरीर पूरा नहीं हो सका और उसकी एक बगल में एक छेद रह गया। उस छेद को उन्होंने मधुमक्खी का मोम भर कर पूरा कर दिया और उसको घर भेज दिया।

नर का भाई जब घर पहुँचा तो उसने नर से कहा — "देखो, मैं भी थोड़े से मोती ले आया हूँ।"

पर नर ने कहा — "नहीं भाई, यह तुम नहीं हो यह तो तुम्हारी लाश है जो घर वापस आयी है क्योंकि चीतों ने तो तुम्हें खा ही लिया था।"

नर के भाई ने कहा — "नहीं, यह झूठ है। मैं तो अभी ज़िन्दा हूँ मुझे क्यों मरना चाहिये?"

नर बोला — "यदि तुम मेरी बात नहीं मानते तो तुम अपनी बगल देखो उसमें मधुमक्खी का मोम भरा है। अगर तुम इस मोम को निकाल दोगे तो ज़िन्दा नहीं रहोगे।"

नर के भाई ने जैसे ही वह मोम अपनी बगल से निकाला कि वह मरा हुआ जमीन पर गिर गया।

नर अपने भाई की मौत पर बहुत गुस्सा था उसने कियाथ्यू से पूछा — "तुमने मेरे भाई को क्यों मारा? अब हमको लड़ना पड़ेगा।"

कियाथ्यू ने जवाब दिया — "मैंने कुछ नहीं किया, मैंने तो उसको मोती भी दिये, उसको ठीक से रखा भी। तुम्हारे भाई की मौत उसकी अपनी गलती से हुई है पर इस पर भी यदि तुम लड़ना चाहो तो लड़ सकते हो मैं तैयार हूँ।"

लड़ने से पहले दोनों ने आपस में यह तय किया कि लड़ाई में जो भी मरेगा दूसरा आदमी उसके सिर को ट्रोफी की तरह से अपने घर के बरामदे में नहीं लगायेगा। हाँ, वह अपने शत्रु के ऊपर

जीतने की रस्म जरूर पूरी कर सकता है। और इस प्रकार वे दोनों लड़ने के लिये तैयार हो गये।

कियाथ्यू नर को नहीं देख पा रहा था और नर कियाथ्यू को नहीं देख पा रहा था। सो नर ने अपनी मोम की एक मूर्ति बनायी और उसको खेत में बने एक घर के चबूतरे पर रख दिया। उस मूर्ति को चबूतरे पर रख कर वह खुद उस घर के अन्दर अपना तीर कमान ले कर बैठ गया।

कियाथ्यू भी नर के पीछे पीछे गया और चबूतरे पर रखी मूर्ति को नर समझा और उसको मार डाला। जैसे ही कियाथ्यू ने नर की मूर्ति को मारा, नर ने उसे दो तीर मारे और घायल कर दिया।

कियाथ्यू नीचे गिर गया और लेटे लेटे नर से बोला — "मेरे दोस्त, तुम मुझसे ज़्यादा ताकतवर हो मैं तुमसे हार गया।"

और यह कह कर वह मर गया।

नर ने कियाथ्यू का सिर तो ले लिया पर उसने उसके एक दास को मार कर उस पर अपनी जीत की रस्म पूरी की।

अपने वायदे के मुताबिक उसने कियाथ्यू का सिर अपने घर के बरामदे में दूसरी ट्रोफियों के साथ नहीं टॉगा। इसी लिये आज भी लखेर जनजाति के लोग चीते या आदमी का सिर अपने घरों में नहीं लटकाते।

नर की मौत

इस घटना के बाद नर ने अनजाने में एक चीता लड़की वौरी[25] से शादी कर ली। वौरी जब नर घर पर नहीं होता था तो उसके दोस्तों को खा जाती थी।

उसके दोस्तों ने एक बार उससे कहा — "नर, तुम्हारी पत्नी चीता लड़की है। जब तुम नहीं होते तो वह हमको मार देती है और खा जाती है। तुमको उसे मार देना चाहिये नहीं तो एक दिन वह हम सबको खा जायेगी।"

यह सुन कर नर बहुत दुखी हुआ क्योंकि वह वौरी को अपने हाथों से नहीं मारना चाहता था पर वह उस चीता लड़की के साथ रह भी नहीं सकता था।

सो एक दिन उसने बॉस के पानी भरने के एक बर्तन में छेद कर दिया और अपनी पत्नी पर जादू डाल कर उससे कहा कि वह नदी से उस बॉस के बर्तन में पानी भर लाये।

नर के जादू की वजह से वौरी उस बर्तन का छेद नहीं देख पायी और उसने उस बर्तन में पानी भरना शुरू किया।

जब वह पानी भर रही थी तो नर ने नदी पर अपना जादू फेंका। उसके जादू की वजह से उस नदी में ऊपर से बहुत सारा पानी आ गया और उसकी पत्नी को अपने साथ बहा कर ले गया।

[25] Vawri – name of the wife of Nar

जब नर उस पानी के बहाव का इन्तजार कर रहा था तो वह रो पड़ा। उसको रोते हुए देख कर उसकी पत्नी ने पूछा "नर, तुम क्यों रो रहे हो?"

नर बोला — "बहुत तेज़ बारिश आने वाली है तुम जल्दी से पानी भर लो और फिर घर चलो।"

कह कर उसने जादू के कुछ शब्द बोले और तुरन्त ही ज़ोर की बारिश, हवा और नदी का पानी सब एक साथ आ गये और वौरी को बहा कर ले गये।

यह सब देख कर नर बहुत दुखी हो कर अपने घर चला आया। वह इतना दुखी हुआ कि वह दस दिन तक कुछ खा ही नहीं सका।

उसके सम्बन्धियों को लगा कि वह अपनी पत्नी की वजह से बीमार हो गया है इसलिये उन्होंने उसको सलाह दी कि वहीं जा कर अपनी जान दे दे जहाँ उसकी पत्नी की जान गयी थी।





नर यह सुन कर बहुत खुश हुआ उसने एक तुम्बा[26] और एक सूत लपेटने वाली एक अटेरन[27] ली और नदी की ओर चल दिया। उसने तुम्बा और अटेरन दोनों नदी में फेंक दीं और बोला — "ओ

[26] Gourd – dry outer cover of any pumpkin type fruit or white gourd
[27] Translated for the word "Distaff". See its picture above.

तुम्बे और अटेरन, तुम तैर कर वहाँ जाओ जहाँ मेरी पत्नी है।"

तुम्बा और अटेरन तैरते हुए चले और समुद्र के पास आ कर रुक गये। इससे नर को पता चल गया कि उसकी पत्नी वहीं थी।

वह अपने आपको समुद्र में फेंकने जा ही रहा था कि उसने किनारे पर बहुत सारे सिपाही खड़े देखे। उसने उनसे कहा — "ओ छोटे बालों वाले विदेशियों, तुम मेरी तलवार ले लो।"

यह कह कर उसने अपनी तलवार पानी में फेंक दी। सिपाहियों ने वह तलवार पकड़ ली और रख ली और बोले — "ओ लाइथा के बेटे, तुम्हारी ताकत तो बिजली की तरह है।"

नर फिर बोला — "मैं अब पानी के अन्दर जा रहा हूँ लेकिन उससे पहले जो कुछ मेरे पास है वह मैं बाहर फेंकना चाहता हूँ – मेरी अक्लमन्दी, मेरी ताकत, मेरा जादू। जो कोई चाहे वह इन्हें ले सकता है।" और ऐसा कह कर उसने अपना सब कुछ बाहर फेंक दिया और पानी में कूद गया।

कहते हैं कि उन सिपाहियों ने अपनी अपनी पगड़ी फैला कर नर की सब चीज़ें ले लीं इसी लिये आज की सारी अक्लमन्दी, ताकत, जादू और लिखने की कला भी सब नर से ही आयी है।



9 जादुई कपड़ा[28]

भारत के असम प्रान्त में बहुत सारी जनजातियाँ रहती हैं जिनमें बहुत सारी लोक कथाऐं प्रचलित हैं। हर जनजाति के अपने रीति रिवाज हैं, अपने अपने विश्वास हैं और अपनी अपनी लोक कथाऐं हैं।

इन जनजातियों में गाम और गारो[29] जनजातियाँ बहुत मशहूर हैं। गारो जनजाति के लोगों का कहना है कि वे मूल रूप से तिब्बत के रहने वाले है। तिब्बत चीन का एक प्रदेश है जो भारत के उत्तर में स्थित है। इसे "संसार की छत"[30] भी कहते हैं।

इस लोक कथा के बारे में यह तो पता नहीं कि पहली बार यह कब कही गयी थी पर यह वहाँ कई पीढ़ियों से चलती चली आ रही है।

एक बार की बात है कि असम के एक गाँव में गारो जाति का एक सरदार रहता था। क्योंकि उसके पुरखे भी जाति के सरदार रह चुके थे इसलिये वह काफी अमीर था।

---

[28] The Magic Wrap – a folktale from Assam, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/31/the_magic_wrap_indian_folktale.htm

[29] Gam and Garo tribes

[30] Tibet is called "Roof of the World" because it is situated at the highest altitude of the world. It is averagely 16,000 feet high.

उसका मकान वहाँ पर मिलने वाले सबसे मजबूत बाँस का बना हुआ था और उसके दरवाजे और खिड़कियों पर वहाँ की सबसे बढ़िया बेंत की चटाइयाँ पड़ी हुई थीं। उसके घर की दीवारों में बने हुए गड्ढों में चमचमाते हुए ताँबे के लैम्प जलते थे।

सरदार और उसकी पत्नी एक बहुत ही बढ़िया ज़िन्दगी बिता रहे थे। उनको अपना घर भी बहुत अच्छा लगता था और अपना जंगलों वाला देश भी जहाँ वे रहते थे।

पर सबसे ज़्यादा उनको अपनी बेटी प्यारी थी। वह उनकी अकेला बच्चा थी। वह देखने भालने में भी बहुत अच्छी थी और उसका स्वभाव भी बहुत अच्छा था। सरदार और उसकी पत्नी को अपनी बेटी पर बहुत गर्व था।

जब वह बड़ी हो गयी तो उसको अपनी ही जाति के एक नौजवान से प्यार हो गया। सरदार और उसकी पत्नी को भी लड़का बहुत पसन्द था सो उनकी शादी पक्की हो गयी। शादी के बाद दुलहा और दुलहिन दोनों ही सरदार के घर में रहने वाले थे।

शादी की शाम सरदार की पत्नी अपनी बेटी को घर के एक तरफ ले गयी और इसको बताया कि शादी में उसको दुनियाँ की सबसे मुलायम सिल्क के कपड़े और लाल और पन्ने से जड़े सोने के गहने दिये जायेंगे।

लेकिन उसके लिये एक और भेंट भी होगी जो इन सब कीमती चीज़ों से भी कीमती होगी।

फिर उसकी माँ ने उससे फुसफुसा कर कुछ कहा और लकड़ी की एक मजबूत सी सन्दूकची निकाली जिसमें से उसने बहुत ही बढ़िया सिल्क का एक कपड़ा निकाला जिस पर इन्द्रधनुष के रंगों में हजारों फूल कढ़े हुए थे। वे फूल इतने चमक रहे थे कि आँखों को चकाचौंध कर रहे थे।

वह लड़की तो उसको देख कर ही खुशी के मारे चीख पड़ी। उत्सुकता से उसने उसको छूने की इच्छा से अपने हाथ बढ़ाये पर माँ ने बेटी को सावधान किया कि बिना उसकी कहानी जाने उसको उसे नहीं छूना चाहिये। तब उसने उसको उसकी कहानी सुनायी।

वह कपड़ा उसकी परदादी[31] को एक देवी ने उनकी शादी पर भेंट में दिया था जो तभी से यह माँ से बेटी को दिया जाता रहा है। यह कोई साधारण कपड़ा नहीं है।

इसको छूने से पहले इसके ऊपर एक जादू पढ़ना चाहिये। अगर इसको कोई बिना इसके ऊपर बिना जादू पढ़े हुए छुएगा तो उस आदमी के ऊपर आफत आ जायेगी।

कह कर उसने अपनी बेटी को वे जादू के शब्द बताये। लड़की ने वे जादू के शब्द तुरन्त ही याद कर लिये और अपनी माँ को यह विश्वास दिलाया कि बिना जादू के शब्द कहे हुए वह वह कपड़ा किसी हालत में में भी नहीं छुएगी।

[31] Translated for the word "Great Grandmother"

जब उसने मन भर कर उस कपड़े की तारीफ कर ली तो उसको फिर से सन्दूकची में रख दिया गया और सन्दूकची का ताला लगा दिया गया। अगले दिन शाम को लड़की की शादी हो गयी और वे दोनों खुशी खुशी वहीं सरदार के घर में रहने लगे।

लड़के को इस कपड़े के भेद के बारे में कुछ भी पता नहीं था। उसने जानने की कोशिश भी नहीं की। साल पर साल गुजरते गये। सरदार और उसकी पत्नी बूढ़े हो गये फिर मर गये। अब उनकी बेटी और दामाद दोनों बॉस के उस बड़े से घर में अकेले रह गये।

वह कपड़ा अभी भी लड़की के पास था। उसने इस डर से कि वह कहीं खराब न हो जाये उसे कभी पहना ही नहीं था। पर हॉ कभी कभी वह उसे सन्दूकची में से एक बार बाहर जरूर निकाल कर उसके फूलों को हवा लगाती थी। उस समय वे जवाहरात की तरह से चमकते थे।

हर साल में एक बार वह ऐसा करती थी और फिर तुरन्त ही हवा लगा कर उसे बन्द कर के रख देती थी। वह उसको निकालने से पहले जादू के वे शब्द कहना कभी नहीं भूलती थी पर उसके पति को अभी भी यह पता नहीं था कि उस सन्दूकची में क्या था और न ही उसने कभी जानने की कोशिश की।

एक दिन सरदार की बेटी को लगा कि आज उस कपड़े को हवा लगानी चाहिये सो उसने चुपचाप जादू के शब्द पढ़े उस लकड़ी की सन्दूकची का ढकना खोला और उस कपड़े को बड़ी सावधानी से

निकाल कर बाहर फैला दिया ताकि उसको पहाड़ों की हवा लग जाये।

कुछ देर के लिये तो उस कपड़े के फूलों की चमक से बॅधी वह वहॉ खड़ी उसको देखती रही पर फिर उसको याद आया कि उसके पति ने अपने दोपहर के खाने के लिये उससे केंकड़ा बनाने के लिये कहा था।

सो उस कपड़े को वहीं वैसे ही सूखता छोड़ कर उसने एक टोकरी उठायी और केंकड़े लाने के लिये पास की एक नदी पर चली गयी। जब वह जल्दी जल्दी नदी की तरफ बढ़ी जा रही थी तो उसको उसका पति मिल गया। वह पास के गॉव से आ रहा था।

सरदार की बेटी ने उससे उस कपड़े का ध्यान रखने के लिये तो कहा ही था पर किसी भी हालत में उसे छूने के लिये भी मना किया था। पति ने उसकी बात सुनी तो पर उसने अपनी पत्नी की इस चेतावनी पर कोई ज़्यादा ध्यान नहीं दिया कि उस कपड़े को किसी भी हालत में छूना नहीं चाहिये।

इत्तफाक से जैसे ही उसकी पत्नी चली गयी काले काले बादल छा गये और बारिश शुरू हो गयी। पति को चिन्ता हो गयी। उसने अपनी पत्नी को जितनी ज़ोर से वह पुकार सकता था पुकारा पर बादलों की गर्ज बहुत तेज़ थी। उसकी आवाज बादलों की गर्ज और बिजली की कड़क की तेज़ आवाज में डूब गयी।

बारिश आती देख कर उसकी पत्नी भी जल्दी जल्दी घर लौटी पर इसके लिये उसको पहाड़ी पर चढ़ना था और वह उतनी तेज़ नहीं चल सकी।

जल्दी ही बारिश की बड़ी बड़ी बूँदें पड़ने लगीं और पति सचमुच में चिन्ता करने लगा। अगर उसने जल्दी ही कुछ न किया तो वह कपड़ा तो बिलकुल ही खराब हो जायेगा। पत्नी की चेतावनी भूलते हुए वह तुरन्त ही बाहर गया कपड़ा उठाया और उसको ले कर अन्दर भागा।

पर जैसे ही उसने वह कपड़ा छुआ वह तो डर के मारे जम सा गया। उसने अपने अन्दर एक बदलाव महसूस किया। बिजली की चमक के समय के अन्दर ही वह एक बड़ी नर चिड़िया में बदल गया और वह कपड़ा उसके इन्द्रधनुषी पंख और पूँछ बन गये।

उसी समय भागती हुई उसकी पत्नी वहाँ आ गयी। चीखते हुए उसने उस कपड़े का एक छोर पकड़ कर खींचा जो तभी भी उसके पति के पंख नहीं बन पाया था और उसके पति के शरीर से लिपटा हुआ था।

उसने उस कपड़े को अपने पति के शरीर से अलग करने की कोशिश की पर जैसे ही उसने ऐसा किया वह खुद भी एक मादा चिड़िया बन गयी।

अब ये दोनों मोर और मोरनी बन गये थे। क्योंकि आदमी के शरीर पर उस कपड़े का एक बहुत बड़ा हिस्सा लिपटा हुआ था इसी

लिये मोर पर ज़्यादा और ज़्यादा चमकीले पंख हैं और उसकी इतनी शानदार पूँछ है। जबकि मोरनी के न तो इतने ज़्यादा पंख और इतनी शानदार पूँछ हैं और न ही वे चमकीले रंगों के हैं।

मोर मोरनी बन कर वे दोनों घर से बाहर उड़ गये। वे अब खाने के लिये दाना और नर्म घास ढूँढने के लिये दूसरी चिड़ियों के साथ रहने लगे – कभी जंगलों में कभी खेतों में।

मोर हमारी सबसे सुन्दर चिड़िया है पर वह हमेशा ही अपने पंखों के बारे में चिन्तित रहता है।

जब बारिश के बादल आते हैं और आसमान में बिजली और बादल की गर्ज इधर से उधर दौड़ती है तब मोर बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाते हैं। लोगों का कहना है कि वे शायद बारिश से डरते हैं कि कहीं बारिश उनके पंख खराब न कर दे।



बंगाल की लोक कथाऐं

10 कहानी कहने वाले की कहानी[32]

कहानियाँ तो बहुत सारे लोग सुनते हैं पर उनका क्या जो कहानियाँ सुनाते हैं और इतनी सुनाते हैं कि कभी कभी सुनने वाले लोग उनकी कहानियों से तंग हो जाते हैं। यह कहानी भी एक ऐसी ही कहानी सुनाने वाले की है। तो लो पढ़ो यह कहानी एक कहानी सुनाने वाले की जो भारत के बंगाल प्रान्त में रहता था।

एक कहानी सुनाने वाला था जिसको इतनी सारी कहानियाँ आती थीं कि वह बस एक के बाद एक कहानी सुनाता ही रहता था। उसकी पत्नी यह सब सुन कर बहुत तंग थी। रोज रोज रोज रोज वही की वही कहानियाँ।

एक दिन उसको अपने पति पर गुस्सा आ गया वह बोली — "मैं तो आपकी इन कहानियों से तंग आ चुकी हूँ। आप अपनी इन सब कहानियों को एक थैले में बन्द कीजिये और इन्हें कहीं दूर फेंक आइये। न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।"

कहानी कहने वाले ने अपनी सब कहानियाँ एक थैले में बन्द कीं और उनको कहीं दूर फेंकने चल दिया। सुबह से शाम हो गयी। शाम को वह घर लौटा।

---

[32] Story of a Story Teller – a folktale from Bengal. Adapted from the Web Site : http://www.thedailystar.net/supplements/naboborsho-special-1422/bangla-folktales-stories-wisdom-wit-and-wonder-77180
[This story has been written by the Senior Editorial Assistant of "Daily Star" – sajen1986@gmail.com]

उसकी पत्नी उसका यह सोच कर खुशी से स्वागत किया कि आज उसको अपने पति की कहानियों से छुटकारा मिल जायेगा। उसने उससे पूछा — "क्या आप अपनी बेवकूफी भरी वे सब कहानियॉ फेंक आये?"

पति बेचारा थका हारा था सॉस लेने के लिये चारपाई पर बैठ कर और अपना कहानियों वाला थैला नीचे रख कर बोला — "मुझे अपना यह थैला खाली करने का समय ही नहीं मिला क्योंकि मेरे साथ एक बहुत ही मजेदार घटना घट गयी। तुम सुनोगी तो तुमको भी उसे सुन कर मजा आयेगा।

मैं उस थैले को कहीं दूर फेंकना चाहता था सो मैं गॉव से बाहर की तरफ निकल गया। रास्ते में मुझे एक चीता[33] मिल गया। उसको देख कर मैं डर कर भाग लिया। अब मैं आगे आगे और वह मेरे पीछे पीछे।

मैं कुछ घनी झाड़ियों की तरफ भाग लिया जहॉ जा कर मैं छिप सकूॅ। पर इससे पहले कि वह मुझे पकड़ सकता मैं एक केले के पेड़ की शाख पर चढ़ गया। वह चीता भी मेरे पीछे पीछे उस पेड़ पर चढ़ने लगा तो मैं भी उस पेड़ पर और ऊॅचा और और ऊॅचा चढ़ने लगा।

[33] Translated for the word "Tiger". Tigers are found plentily in Bengal and are very famous all over the world.

चढ़ते चढ़ते हम बादलों के पास तक पहुँच गये। केले का पेड़ हिलने लगा और चरचरा कर टूट गया। सौभाग्य से चीता तो जंगल में जा कर पड़ा और मैं तुम्हारे भाई के घर की छत से हो कर उनके घर में जा कर पड़ा।

तुम्हारे भाई की पत्नी उस समय चावल की केक बना रही थी। सो घर आने से पहले उसने मुझे कुछ केक दिये। तुम्हें विश्वास नहीं होता? तो लो तुम भी उनमें से एक चावल का केक चख कर देखो।"

यद्यपि कहानी कहने वाले की पत्नी अपने पति पर बहुत गुस्सा थी कि सारा दिन बाहर रहने पर भी वह अपनी कहानियाँ फेंकने में सफल नहीं हो पाया था फिर भी उसकी यह बात सुन कर वह हँस पड़ी।

वह बोली — "आप अपनी कहानियाँ कहने से कभी बाज़ नहीं आ सकते। आइये खाना खा लीजिये खाना तैयार है।"

इस कहानी के यहाँ कहने का तात्पर्य यह है कि कहानी कहने वाले को किसी कहानी को सुनाने के लिये उसे याद करने की आवश्यकता नहीं होती वह तो बस उसकी एक लगन है जो उसको कहीं भी कोई भी कहानी सुनाने के लिये तैयार रखती है।



11 शैतान चीता[34]

हर देश में मॉऐं दादियॉ और नानियॉ छोटे बच्चों को कहानियॉ सुनाया करती है बंगला देश भी इसका कोई अपवाद नहीं है। यह लोक कथा बंगला देश में कही सुनी जाती है।

एक बार पास के एक देश में एक बहुत ही प्रसिद्ध राजा रहता था। उसके भी प्रसिद्ध होने का एक कारण था और वह थे उसके अजीबोगरीब शौक। उसका एक अजीबोगरीब शौक था अजीब अजीब जानवरों को इकट्ठा करने और उनको पालने का शौक पर एक दिन उसको एक नया शौक लगा कि वह इन जानवरों से बात करे।

सो उसने अपने राज्य के मन्त्री को बुलवाया और उससे कहा — "संसार के सबसे बुद्धिमान व्यक्तियों को बुलाओ। मैं चाहता हूॅ कि ये जानवर बात करें।"

मन्त्री तो यह सुन कर डर के मारे कॉप गया फिर भी बोला — "महाराज यह काम कैसे सम्भव है?"

पर राजा ने उसके डर की ओर ध्यान न देते हुए कहा — "मुझे तुम्हारे सन्देह और डर नहीं सुनने बस तुम सब बुद्धिमान लोगों को बुलाओ।"

---

[34] Naughty Tiger – a folktale from Bangla Desh. Adapted from the Web Site : http://www.aobbangladesh.org/node/178

बेचारे मन्त्री ने दूर और पास सभी देशों में देश के दूत भेजे। राजा का सन्देश सुन कर दस ऐसे बुद्धिमान लोग राज्य में आ पहुँचे। काफी कड़ी ट्रेनिंग के बाद वे पाँच जानवरों को बात करना सिखा सके।

राजा तो यह देख कर बहुत ही खुश हो गया। उसने उन लोगों को भरपूर इनाम दिया और फिर संसार के दूसरे देशों के राजाओं को अपना यह नया काम देखने के लिये बुलाया।

जब यह सब अवसर मनाया जा रहा था तो राजा ने एक चीते को सोने के पिंजरे में बन्द कर के अपने महल के दरवाजे पर खड़ा कर दिया।

अब जो भी महल में आता चीता उसे नमस्ते करता और कहता — "मेहरबानी कर के इस पिंजरे का दरवाजा थोड़ा सा खोल दीजिये।"।

आने वाले लोग यह सुन कर आश्चर्य तो प्रगट करते पर डर के मारे उसका दरवाजा खोलने का साहस कोई नहीं करता। तभी वहाँ सीधासादा एक ब्राह्मण भी आया। वह वास्तव में एक बहुत ही भला आदमी था।

जैसे जैसे वह सड़क पर चलता चला आ रहा था चीते ने उसका भी स्वागत किया और उसको कई बार सिर झुका कर नमस्ते की। वह जब उसके पास आ गया तो उसने उससे भी वही प्रार्थना की जो वह सबसे करता आ रहा था — "मेहरबानी कर के इस पिंजरे का

दरवाजा थोड़ा सा खोल दीजिये। मैं यहाँ इस पिंजरे में कई दिनों से बन्द हूँ। मैं थोड़ी देर बाहर मैदान में घूमना चाहता हूँ।"।

अब क्योंकि ब्राह्मण एक बहुत ही भला व्यक्ति था उसने सोचा कि शायद यह चीता इस पिंजरे में काफी देर से बन्द होगा सो उसने उसके पिंजरे का दरवाजा खोल दिया।

जैसे ही चीते के पिंजरे का दरवाजा खुला वह उसमें से कूद कर बाहर आ गया और एक अँगड़ाई ले कर ब्राह्मण को बहुत झुक कर प्रणाम किया और दहाड़ कर बोला — "अब ब्राह्मण देवता मैं आपको खाऊँगा।"

ब्राह्मण तो यह सुन कर सकते में आ गया वह बोला — "यह तुम क्या कह रहे हो। मैंने तो तुम्हारे ऊपर दया की है और तुम्हें पिंजरे से बाहर निकाला है और फिर भी तुम कह रहे हो कि तुम मुझे खाना चाहते हो। तुम्हारा यह व्यवहार तो मेरे साथ ठीक नहीं है।"

चीता बोला — "ऐसा क्यों? सारे लोग इसी तरह से व्यवहार करते हैं।"

ब्राह्मण बोला — "नहीं। असम्भव। ऐसा नहीं हो सकता। तुम दो लोगों से पूछ कर देख लो कि वे क्या कहते हैं।"

चीता राजी हो गया और बोला — "यदि दो लोग आपसे राजी हो गये तो मैं आपको छोड़ दूँगा पर यदि वे मेरी ओर से बोले तो मैं आपको निश्चित रूप से खा जाऊँगा।"

ब्राह्मण और चीता दोनों मैदान में चल दिये। वहॉ एक बड़ा सा बरगद का पेड़ खड़ा हुआ था। ब्राह्मण उसको देख कर बोला — “यह मेरा पहला गवाह होगा।”

चीता बोला — “ठीक है आप पहले पेड़ से पूछें।”

ब्राह्मण ने बरगद के पेड़ से पूछा — “बरगद भाई। यदि मैं किसी का भला करूॅ तो क्या उसे मुझे नुकसान पहॅुचाना चाहिये।”

बरगद ने एक लम्बी सी सॉस भरते हुए कहा — “कभी कभी ऐसा होता है बाबा। अब मुझे ही देख लो। इस मैदान में मैं एक अकेला पेड़ खड़ा हॅू। जब कड़ी धूप पड़ती है तो मैं लोगों को छाया देता हॅू। गर्मी में उनको ठंडक देता हॅू।

पर बदले में मुझे क्या मिलता है। अपनी गायों और बकरियों के खाने के लिये वे मेरी शाखें काट लेते हैं और मेरी पत्तियॉ चुरा लेते हैं।’

यह सुन कर चीते ने हॅस कर अपने होठ चाटे और बोला — “बाबा आपने अपने गवाह की बात सुनी?”

ब्राह्मण बोला — “पर अभी तो मेरा एक गवाह और बचा है।” तभी पेड़ पर बैठा एक चिड़ा बोल पड़ा।

चीता बोला — “इस गवाह से पूछो।”

ब्राह्मण ने सिर ऊपर उठा कर चिड़े से पूछा — “चिड़े भाई यदि मैं किसी का भला करूॅ तो क्या उसे मुझे नुकसान पहॅुचाना चाहिये।”

चिड़े ने हॉ में अपना सिर हिलाया — "हॉ बाबा कभी कभी ऐसा भी होता है। मुझे ही देख ले। मैं लोगों को खुश करने के लिये यहॉ बैठा बैठा सारा दिन मीठे मीठे गाने गाता रहता हूँ। जब वर्षा समाप्त हो जाती है तो बहुत सारे कीड़े खा जाता हूँ। इसके अतिरिक्त मैं लोगों को और भी कई मुश्किलों से बचाता हूँ फिर भी वे मुझे मार देते हैं।"

चीता बोला — "बाबा सुना आपने?"

ब्राह्मण सोच में पड़ गया पर उसने आस नहीं छोड़ी वह बोला — "अच्छा मुझे एक अवसर और दो। मैं एक और गवाह से पूछ लूँ। बस अन्तिम बार।"

चीते को अपने ऊपर पूरा विश्वास था सो उसने ब्राह्मण को एक और अवसर दे दिया — "ठीक है बाबा पर यह आपका अन्तिम अवसर है इसके बाद और नहीं।"

तभी एक गीदड़ वहॉ घूमता घूमता आ गया। ब्राह्मण तुरन्त ही उसकी ओर बढ़ा और बोला — "यह आ गया मेरा अन्तिम गवाह।"

वह चाचा गीदड़ की ओर बढ़ा और उससे पूछा — "चाचा गीदड़ यदि मैं किसी का भला करूँ तो क्या उसे मुझे नुकसान पहुँचाना चाहिये।"

गीदड़ ने अपनी ऑखों में प्रश्न लिये ब्राह्मण की ओर देखा और पूछा — "क्या बात है बाबा। ज़रा साफ साफ कहो। मुझे ज़रा खोल कर बताओ कि तुम मुझसे क्या पूछना चाहते हो। यदि तुम मुझे खोल कर नहीं बताओगे तो मैं समझ नहीं पाऊँगा।"

तब ब्राह्मण ने सावधानी से पूरी घटना का रिहर्सल किया — "मैं महल के घास के मैदान में जा रहा था और यह चीता एक सोने के पिंजरे में बन्द था। इसने मुझसे कहा... ।"

जब गीदड़ ने ब्राह्मण की सारी कहानी सुन ली तो बोला — "मुझे लगता है कि यह काफी मुश्किल मामला है क्योंकि जब तक मैं महल की सड़क और पिंजरा न देख लूँ तब तक मैं कुछ कह नहीं सकता।"

सो तीनों पिंजरे की ओर चल दिये। वहॉ जा कर गीदड़ बोला — "अब देख कर मुझे लग रहा कि मैं कुछ कुछ समझ रहा हूँ। पर फिर भी अब तुम मुझे दोबारा बताओ।"

ब्राह्मण ने फिर से दोहराया — "जब मैं राजा के महल की ओर जा रहा था तो चीता एक सोने के पिंजरे में बन्द था... ।"

गीदड़ एक हल्की सी हॅसी हॅसा — "अब ठीक है अब मेरी समझ में आ गया। तुम पिंजरे में थे और चाचा चीता सड़क पर थे। तब... ।"

चीता गुस्से में चिल्लाया — "चाचा गीदड़ तुम तो विल्कुल ही बेवकूफ हो। पिंजरे में वह नहीं मैं था।"

गीदड़ बोला — "नहीं नहीं चीते चाचा। ओह यह तो बड़ा मुश्किल सा मामला है चीज़ें मेरे दिमाग में आसानी से नहीं घुस रही हैं।"

चीता गुस्से से चिल्लाया — "इसमें मुश्किल क्या है चाचा गीदड़। मुझे नहीं मालूम था कि आप इतने बेवकूफ हैं। यह इतना सीधा सा मामला है और आपकी समझ में ही नहीं आ रहा है। देखिये न मैं कहाँ था।"

कह कर चीता पिंजरे की ओर गया और उसमें जा कर खड़ा हो गया। गीदड़ बस यही तो चाह रहा था। जैसे ही चीता पिंजरे के अन्दर घुसा गीदड़ ने आगे बढ़ कर पिंजरे का दरवाजा बन्द कर दिया।

फिर बोला — "हाँ बाबा अब ठीक है। अब मेरी समझ में आ गया। चीता चाचा ठीक कह रहे थे। अगर आप किसी बुरे आदनी की सहायता करते हैं तो वह आपको नुकसान पहुँचाने की अवश्य ही कोशिश करेगा।

बाबा आप तो बहुत भले और बुद्धिमान आदमी हैं। आपको चाचा चीते जैसे लोगों से सवधान रहना चाहिये। इस संसार में ऐसे बहुत सारे लोग उन जैसे हैं जो आपको नुकसान पहुँचा सकते हैं।"

फिर गीदड़ चाचा चीते से बोला — "चाचा चीते मैं बेवकूफ अवश्य हूँ पर आप क्या हैं?"

कह कर वह हॅसता हुआ अपने रास्ते चला गया और ब्राह्मण राजा के महल चला गया।



12 एक लोमड़ा और एक मगर[35]

बहुत दिन पहले की बात है कि एक बहुत सुन्दर झील के किनारे एक गाँव बसा हुआ था। उस झील के किनारे एक चालाक लोमड़ा और उसका एक बहुत ही वफादार दोस्त मगर रहता था।

दोनों दोस्त करीब करीब रोज ही मिलते थे और अपने अपने खानों के बारे में बात करते थे कि कैसे वे दोनों अपना अपना खाना बिना किसी परेशानी के इकट्ठा कर सकते थे।

जाड़ों के मौसम में खाना थोड़ी मुश्किल से मिलता था सो लोमड़े को गाँव के लोग जो अपना बचा हुआ खाना अपने घर के बाहर फेंक दिया करते थे उस खाने को चुराना पड़ जाता था।

पर लोमड़े के लिये यह काम थोड़ा सा खतरनाक था क्योंकि एक बार गाँव वालों ने इस डर से कि लोमड़ा कहीं उनकी मुर्गियाँ न खा जाये उसको पत्थरों से मारा।

उनके ऐसे खराब व्यवहार से परेशान हो कर भूखा और घायल लोमड़ा अपनी माँद में भाग आया। यह देख कर मगर उसकी सहानुभूति के लिये उसके पास आ गया।

[35] The Fox and the Crocodile – a folktale from Bangla Desh – Adapted from the Web Site : http://leverettfolktales.blogspot.ca/2015/12/folktale-from-bangladesh-fox-and.html

एक दिन लोमड़े को एक विचार आया सो वह अपने जिगरी दोस्त मगर के पास पहुँचा और उससे बोला — "मेरे दोस्त मुझे एक विचार आया है कि क्यों न अपना खाना हम खुद ही उगायें।"

अब मगर तो पानी का जानवर था उसको तो जमीन का ज़्यादा पता नहीं था सो वह बोला — "यह तो बड़ा अच्छा विचार है पर हम लोग वहाँ किस चीज़ की खेती करेंगे? हम लोग वहाँ क्या उगायेंगे?"

लोमड़ा बोला — "हम लोग वहाँ पर चावल की खेती कर सकते हैं। चावल को बहुत पानी चाहिये सो हम उसको इस झील के पास ही बोयेंगे।"

मगर बोला — "यह तो बहुत ही अच्छा विचार है पर दोस्त यह चावल खाने में लगता कैसा है।"

लोमड़ा बोला — "अरे चावल? वह तो बहुत ही स्वादिष्ट होता है – मुलायम और मीठा। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि माँस के मुकाबले में हम उसको आसानी से खा सकते हैं।"

मगर बोला — "यह तो बहुत ही बढ़िया है। मैं तो चावल के बोने का इन्तजार भी नहीं कर पा रहा।"

सो मगर ने लोमड़े को चावल बोने में सहायता की और उसने चावल के पौधों की तब तक देखभाल भी की जब तक वे बड़े नहीं हो गये।

एक दिन लोमड़ा बोला — "अब हमारी फसल काटने लायक हो गयी है सो अब हमको अपनी फसल काट लेनी चाहिये।"

लोमड़े की यह बात सुन कर मगर के मुँह में पानी भर आया और वह अपने होठ चाटने लगा।

लोमड़ा बोला — "मेरे दोस्त अभी ज़रा सा इन्तजार करो। अब हम इस फसल को पहले बाँट लें।"

कह कर उसने कुछ देर सोचने का बहाना किया और फिर बोला — "मुझे एक विचार आया है। क्योंकि पिछले कुछ महीनों से तुमने इसको उगाने में बहुत मेहनत की है तुम इसका वह सारा हिस्सा ले सकते हो जो जमीन के नीचे उगता है और मैं इसका वह हिस्सा ले लेता हूँ जो जमीन के ऊपर उगता है।"

अब मगर को तो चावल के बारे में कुछ मालूम नहीं था सो वह बोला — "तुम्हारी बड़ी मेहरबानी। तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद।"

पर जैसे ही उन्होंने चावल के पौधे जमीन में से निकालने शुरू किये तो मगर ने देखा कि जमीन के नीचे तो चावल की केवल जड़ ही उग रही थी और चावल के पके हुए दाने जमीन के ऊपर उग रहे थे।

चालाक लोमड़ा हँसने लगा पर लोमड़े की इस हरकत से मगर का दिल टूट गया और वह उससे कुछ गुस्सा हो गया। पर उसने अपना गुस्सा लोमड़े पर जाहिर नहीं किया और चावल के पौधों कै जड़ें लेता हुआ बोला — "अगली बार हम कुछ और बोयेंगे।"

लोमड़े को कुछ पता नहीं चला कि मगर के दिमाग में क्या चल रहा था सो वह उसकी इस बात पर राजी हो गया। वह बोला — "इस बार हम आलू बोयेंगे।"

सो पिछली बार की तरह से इस बार भी मगर ने लोमड़े को उसकी आलू की फसल बोने में सहायता की और उनकी अच्छी तरह से देखभाल की जब तक आलू के पेड़ बड़े नहीं हो गये।

जब आलू के पेड़ बड़े हो गये तो लोमड़े ने कहा कि आओ अब अपनी आलू की फसल काटते हैं। मगर ने यह सुन कर फिर से अपने होंठ चाटे।

चालाक लोमड़ा फिरबोला — "मेरे दोस्त थोड़ा इन्तजार करो। अब हम इस फसल को बॉट लें। पर हम इसको बॉटेंगे कैसे। मैं बताता हूँ कि हम इसे कैसे बॉटेंगें। क्योंकि तुमने इन पिछले महीनों में इस खेत के ऊपर बहुत मेहनत की है तुम इसका... ।"

पिछली बार के अन्याय की बात याद कर के मगर बीच में ही बोला — "अगर तुम्हें इसमें कोई ऐतराज न हो तो इस बार ऊपर का हिस्सा मैं लूँगा।"

लोमड़ा यह सुन कर बहुत खुश हुआ और उसने आलू के पेड़ के पत्ते उसको दे दिये। मगर को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि आलू तो जमीन के नीचे हुए थे। उसने आलू के थोड़े से पत्ते खाये तो उनको उसने तुरन्त ही थूक दिया क्योंकि वे तो बहुत बेस्वाद थे। सो इस बार भी मगर ने धोखा खाया।

अबकी बार मगर बोला — "इस बार हम कुछ और बोयेंगे। इस बार हम नारियल बोयेंगे। मैंने देखा है कि बच्चे पेड़ पर चढ़ कर नारियल तोड़ते रहते हैं।"

सो अगली बार लोमड़े ने नारियल बोये। हर बार की तरह से इस बार भी मगर ने नारियल के पेड़ों की भी बहुत देखभाल की। जब नारियल के पेड़ों पर नारियल आ गये तो फिर एक बार नारियल तोड़ने का समय आया।

लोमड़ा बोला — "अब नारियल बढ़ कर पक गये हैं अब हम इनको तोड़ लेते हैं।"

मगर के साथ पिछली बार भी बहुत धोखा हुआ था सो अबकी बार लोमड़ा मगर से बोला — "मगर अबकी बार तुम बताओ कि तुम नारियल का कौन सा हिस्सा लोगे।

मगर अबकी बार नारियल के ऊपर के चिकने खोल से धोखा खा गया सो उसने उसका बाहर वाला हिस्सा लेने का निश्चय किया और उसके अन्दर का मीठा रसीला सफेद गूदा छोड़ कर उसने लोमड़े के लिये छोड़ दिया।

वह बोला — "अगर तुमको कोई ऐतराज न हो तो दोस्त लोमड़े मैं अबकी बार नारियल का ऊपर का हिस्सा ले लेता हूँ।"

पर जब नारियल तोड़ा गया तो मगर ने देखा कि हरे रंग के नीचे एक कत्थई रंग का खोल था। कत्थई रंग के खोल के नीचे का

हिस्सा सफेद गूदेदार था और उसमें दूधिया सफेद नारियल का पानी भी था।

यह देख कर मगर बहुत गुस्सा हो गया वह बोला — "लोमड़े मेरे साथ चालाकी खेलना बन्द करो। अबकी बार अगर हम कुछ बोयेंगे तो अबकी बार मैं अन्दर का हिस्सा लूँगा।"

लोमड़ा इस पर भी राजी हो गया। अगली बार उन्होंने आम की फसल बोयी। मगर के कहे अनुसार अबकी बार उसको आम का बीज मिला। मगर यह देख कर तो बिल्कुल पागल सा ही हो गया।

वह अपने इस निर्दयी दोस्त की पूँछ काटने ही वाला था कि इस बीच लोमड़ा सोच रहा था कि इस गुस्से से भरे मगर से अपने आपको कैसे बचाये कि उसके दिमाग में एक नया विचार आया।

उसने मगर को अपने नये काम के बारे में बताया कि वह अब की बार गन्ना उगायेगा। वह उसको गन्ने के पत्ते और जड़ दोनों देने को तैयार था कि मगर की मुस्कान देख कर रुक गया।

लोमड़े ने पूछा — "क्या बात है क्यों मुस्कुरा रहे हो?"

दयालु मगर एक बड़ी सी मुस्कान अपने चेहरे पर ला कर बोला — "तुम्हारे किसी भी विचार से मुझे एक और अच्छा विचार आया है। इस विचार के अनुसार हम उपज को ज़्यादा अच्छी तरह से और ज़्यादा न्यायपूर्वक बाँट सकेंगे। अगर हम उसको मानेंगे तो फिर हमको भूखे भी नहीं रहना पड़ेगा।"

लोमड़ा तो इस अचानक नये विचार से आश्चर्य में ही पड़ गया।

उसने पूछा — "क्या विचार है तुम्हारा?"

मगर बोला — "हमको सारी फसल को बराबर बराबर बॉट लेना चाहिये न कि उसका कोई खास हिस्सा तुम लो और कोई खास हिस्सा मैं लूॅ।"

आखिर लोमड़े की समझ में आ गया कि अब वह मगर को और धोखा नहीं दे पायेगा सो वह मगर की शर्तों पर राजी हो गया। फिर उसके बाद उनको कभी खाने की कमी नहीं हुई।



13 आधी रात की कहानी[36]

एक बार की बात है कि बंगाल के एक गॉव में एक बूढ़े पति पत्नी रहते थे — काका मोशाय और काकी मॉ। उनके पास उनका एक घर था और थोड़ी सी जमीन थी। उनके पास दो गायें और एक बैल भी था। बैल का नाम उन्होंने निताई रखा हुआ था।

काका एक लम्बे आदमी थे और अपनी बड़ी उम्र के बावजूद सीधे चलते थे। वह बहुत कम बोलते थे। जबकि काकी छोटी थीं भरे बदन की थीं और देखने में शानदार लगती थीं।

काकी बोलती बहुत थीं। जब वह बोलना शुरू करती थीं तो काका अपने खेतों में अपने काम पर चले जाते थे। काका काकी के कोई बच्चा तो नहीं था पर वे दोनों एक दूसरे को प्यार बहुत करते थे।

उनकी शादी को चालीस साल हो गये थे। तबसे वे अपनी उसी फूस की छत की झोंपड़ी में रहते चले आ रहे थे। उनकी यह झोंपड़ी गॉव के एक किनारे पर बनी हुई थी।

पर एक दिन क्या हुआ कि काका मोशाय और काकी मॉ में बहुत ज़ोर का झगड़ा हुआ। उनका यह झगड़ा ऐसे हुआ —

---

[36] Adventure by Midnight – a folktale from Bengal – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/32/bengali_folktale_indian_folktale.htm

एक दिन काका अपने घर के पास की एक नदी में नहाने गये। ऐसे तो वह वहाँ रोज ही नहाने जाते थे पर उस दिन उनकी बस किस्मत कुछ अच्छी थी।

उन्होंने अपना गमछा[37] पानी पर तैरा दिया था तो एक मछली उनके गमछे में आ कर फँस गयी। यह देख कर काका तो खुशी से उछल पड़े। उनको मछली की सब्जी बहुत अच्छी लगती थी।

उन्होंने उस मछली को अपने हाथ में पकड़ लिया और अपना गमछा उठाते हुए घर की तरफ भागे। काकी उस समय अपने घर के सामने का बरामदा बुहार रही थी।

काका ने आ कर काकी को अपनी मछली दिखायी। काकी ने इससे पहले कभी इतनी ताजी कटला[38] मछली कभी नहीं देखी थी। वह उसको देखते ही बोली कि वह उस दिन उस मछली की बहुत सारा नारियल और हरी मिर्च डाल कर एक खास सब्जी बनायेंगी।

काकी ने तुरन्त ही अपनी झाड़ू तो उठा कर रख दी और मछली को रसोई में ले गयी। उन्होंने उसको साफ किया उसके लिये मसाले पीसे नारियल कद्दूकस किया हरी मिर्चें काटीं और तेल गर्म कर के उसको पकने रख दिया।

जल्दी ही आग पर मछली उबलने लगी और उसकी स्वादिष्ट खुशबू चारों तरफ उड़ने लगी। वह खुशबू तो काका मोशाय तक

[37] Gamachhaa is piece of cloth, ¾ to 1 yard wide and about 2 yards long which most villagers keep on their shoulder and use it for many purposes – to wipe body after bath, to spread on the ground to sit up on, to wipe sweat etc etc. Before it was very common but now its use has been fading away.
[38] Katla is a kind of fish

भी पहुँच गयी जहाँ वह अपने खेतों पर काम कर रहे थे। उस खुशबू को सूँघ कर उनको भी बहुत अच्छा लगा। काका जानते थे कि काकी बहुत अच्छा खाना बनाती थीं।

पर उस दिन काकी का दिल खाना बनाने में नहीं था। उनको उसी दिन एक चिट्ठी मिली थी कि उनके भाई के लड़के की जल्दी ही शादी होने वाली थी। और यही नहीं बल्कि वह लड़की कोलकाता की थी।

काकी इस खबर से बहुत खुश थीं क्योंकि उनको लग रहा था कि यह शादी बहुत शानदार होगी। दुलहिन बहुत बढ़िया बढ़िया कपड़े और गहना पहन कर आयेगी।

इसके अलावा दूसरी स्त्रियाँ भी वैसे ही सज कर आयेंगी। पर काकी खुद वहाँ क्या पहनेंगी। वह अपनी साड़ी के बारे में सोचती रहीं जबकि उस समय उनको मछली के बारे में सोचना चाहिये था।

इस बीच मछली की सब्जी आराम से उबलती रही। धीरे धीरे उसका पानी सूख गया और मछली के टुकड़े जलने लगे। एक बार फिर से काका के पास मछली की सब्जी की खुशबू पहुँची तो अबकी बार वह बैल की तरह से गुस्सा हो गये।

वह तुरन्त ही घर भागे आये और उन्होंने आग पर रखी कढ़ाई की तरफ देखा तो काकी को डाँटना शुरू किया कि उन्होंने मछली जला क्यों दी। काकी को भी गुस्सा आ गया सो दोनों लड़ने लगे।

वे दोनों इतना लड़े इतना लड़े कि काका की तो बस बोलते बोलते साँस ही फूल गयी। अब उनको तो ज़्यादा बोलते की आदत नहीं थी सो वह तो कुछ देर तक तो बोले पर फिर खुद ही पलट कर अपने खेतों पर चले गये।

पर काकी अभी नहीं रुकी थीं उन्होंने काका की पीठ पीछे ही कहा कि वह उनसे तब तक नहीं बोलेंगी जब तक निताई के सींग नीले नहीं पड़ जायेंगे।

काकी फिर अपने रसोईघर में गयीं और वहाँ जा कर बर्तन पटकने लगीं जब तक उनका गुस्सा थोड़ा शान्त नहीं हो गया। उसके बाद उन्होंने जली हुई मछली फेंकी और दोपहर के खाने के लिये आलू उबलने रखे।



खाना खाते समय काका एक शब्द भी नहीं बोले और न ही काकी बोलीं। खाना खाने के बाद काका घर के बाहर पीछे की तरफ लगे कटहल[39] के पेड़ के नीचे जा कर लेट गये।

काकी ने पहले बर्तन साफ किये फिर रसोईघर साफ किया फिर वह भी ऑगन में जा कर अपने पैर धूप में कर के लेट गयीं। वह बहुत थक गयी थीं सो जल्दी ही सो गयीं।

[39] Translated for the word "Jackfruit". See its picture above.

जब काकी सो कर उठीं तो सूरज नारियल के पेड़ों की चोटी के पीछे जा चुका था। शाम होने वाली थी अब तो चाय का समय भी हो चला था।

उन्होंने काका को चाय पीने के लिये बुलाने के लिये अपना मुँह खोला ही था कि उनको अपने कहे हुए शब्द याद आये कि वह उनसे तब तक नहीं बोलेंगीं जब तक निताई के सींग नीले नहीं हो जायेंगे। अब वह अपने कहे से कैसे फिर सकती थीं।

पर काकी को लगा कि उन्होंने बहुत बड़ी गलती कर दी है। वह तो काका से बात करने के लिये मरी जा रहीं थीं पर जो कुछ उन्होंने काका से कह दिया था उसके बाद तो अब काका से बोलना सम्भव ही नहीं था। गाय के सींग तो भूरे ही रहे।

काका और काकी को बिना बात किये एक और दिन बीत गया। अब काकी को लगने लगा कि अब यह चुप्पी वह और नहीं सह सकेंगीं। उनको काका से बात करने की इतनी आदत पड़ गयी थी कि वह घर में होने वाली छोटी छोटी बातें भी उनसे कहे बिना नहीं रह सकती थीं।

वह उनसे हर बात में राय लेतीं और खास कर के तब अपनी तारीफ सुनने का इन्तजार करतीं जब वह उनके लिये कोई खास खाना बनातीं। वह यह सोच ही नहीं सकती थीं कि वह और काका आपस में बात नहीं करेंगे।

सो काकी ने अपना मन पक्का किया। अब क्योंकि गाय के सींग अपने आप से तो नीले नहीं होंगे सो उन्हें उनको उन्हें रंगना ही पड़ेगा।

काकी के पास धोबी के नील का एक छोटा सा थैला था। उस नील को काकी काका के सफेद कपड़ों को और ज़्यादा सफेद करने के लिये इस्तेमाल करती थीं। उन्होंने उसको निताई के सींग रंगने के लिये इस्तेमाल करने का निश्चय किया।

अब यह काम वह दिन में तो कर नहीं सकती थीं क्योंकि काका यह देखने के लिये दिन में कई बार गायों के बाड़े में जाते थे कि उनके कीमती जानवर ठीकठाक थे कि नहीं।

अगर उन्होंने काकी को निताई के सींगों को रंगता देख लिया तो वह हमेशा ही उनका मजाक बनाते रहेंगे। इसलिये काकी को यह काम रात को ही करना पड़ेगा।

काकी ने रात को भी काफी देर तक इन्तजार किया यानी जब तक काका गहरी नींद नहीं सो गये। जब काकी को पूरा भरोसा हो गया कि काका गहरी नींद सो गये तब वह दबे पैरों उठीं पिछले दरवाजे तक धीरे धीरे गयीं बहुत सावधानी से चुपचाप दरवाजा खोला और ॲधेरे में बाहर निकल गयीं।

उस ॲधेरे में जाना ऐसे जाना था जैसे वह किसी कुॅए में जा रही हों। काकी को यह पता ही नहीं चल रहा था कि वह किधर जा रही थीं।

उस दिन चॉद भी नहीं निकल रहा था और आसमान में बादल भी छाये हुए थे तो तारे भी नहीं चमक रहे थे। बाहर हवा भी बह निकली थी तो वह पेड़ों को हिला रही थी और उनके हिलते हुए साये भूतों का सा डर पैदा कर रहे थे।

काकी डर गयीं पर उन्होंने भगवान को याद किया अपनी साड़ी को अपने शरीर के चारों तरफ कस कर लपेटा पास में रखी बालटी में से अपने हाथों में थोड़ा सा पानी लिया और एक कोने में खड़ी हो गयीं।

वहॉ खड़े हो कर उन्होंने नील और पानी का घोल बनाया और निताई के सींगों पर मल दिया।

जब काकी को पूरा भरोसा हो गया कि उन्होंने अपना काम ठीक से कर दिया तो वह वापस जाने के लिये घूमीं। पर जैसे ही वह दरवाजे के पास पहुॅचीं तो उन्होंने देखा कि कोई आदमी उनका रास्ता रोके खड़ा था।

उसको देखते ही काकी डर गयीं और उन्होंने अपने हाथ ऊपर उठा दिये और चिल्लाना शुरू कर दिया। उनको चिल्लाता सुन कर दोनों गायें और निताई भी ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगे।

इस सब चिल्लाने का इतना शोर मचा कि काका की आवाज तो सुनायी ही नहीं दी।

पर जैसे ही काकी ने काका की आवाज सुनी तो काकी कुछ होश में आयीं। उन्होंने काका से पूछा कि वह इतनी रात गये उस गायों के बाड़े में क्या कर रहे थे।

काका बोले कि वह नील का थैला तलाश कर रहे थे और यह कह कर वह ज़ोर से हॅस पड़े। काकी भी उतने ही ज़ोर से हॅस पड़ीं।

निताई और गायें यह सोचते ही रह गये कि यह सब क्या हो रहा था और काका और काकी वहॉ से बाहर निकल आये और अपने घर में घुस गये।

वहॉ जा कर वे दोनों फिर से वैसे ही बातें करने लगे जैसे पहले किया करते थे।



14 राजा और टुनटुनी[40]

टुनटुनी एक बहुत छोटी सी दरजिन चिड़िया होती है। सो एक टुनटुनी चिड़िया का घोंसला एक महल के बागीचे में था। वह हमेशा महल के आस पास उसकी खिड़कियों से अन्दर झॉकती घूमती रहती थी कि देखूँ अन्दर क्या हो रहा है।

एक दिन उसने राजा को अपने नौकरों को हुक्म देते सुना कि वे उसके चॉदी के सिक्के जो उसके बक्से में रखे थे धो दें और उन्हें धूप में सुखाने के लिये रख दें।

बस टुनटुनी तो उस छज्जे की तरफ उड़ गयी जहॉ राजा के नौकरों ने उसके चॉदी के सिक्के धो कर सूखने डाले थे। वे तो बहुत ही चमकीले थे और धूप में तो वे बहुत ही चमक रहे थे।

टुनटुनी उस छज्जे पर कूद गयी और अपनी चोंच में एक चॉदी का सिक्का दबाये वहॉ से बाहर आ गयी। ओह वह सिक्का कितना चमकीला था। टुनटुनी इतनी सुन्दर चीज़ पा कर बहुत खुश थी। उसने वह सिक्का ला कर अपने घोंसले में रख लिया।

टुनटुनी सारा दिन उस सिक्के को देखती रही और सोचती रही कि वह तो अब राजा के जितनी अमीर हो गयी थी।

---

[40] The King and Tuntuni – a folktale from Bengal – Adapted from the Web Site : http://creative.sulekha.com/the-king-and-tuntuni-a-folktale-from-undivided-bengal_437647_blog Written by Swapna Dutta

और बस यह सोच कर वह पेड़ की एक शाख पर बैठ गयी और खुशी से गाने लगी —

हे भगवान मैं तो राजा के बराबर अमीर हो गयी
राजा के पास चाँदी है और मेरे पास भी

राजा ने उसका गाना सुना, राजा के मन्त्रियों ने उसका गाना सुन, शाही महल में हर आदमी ने उसका गाना सुना। राजा ने पूछा यह चिड़िया क्या कह रही है।

राजा के दरबारियों ने कहा — "योर मैजेस्टी टुनटुनी कह रही है कि वह आपके बराबर ही अमीर है क्योंकि आपके पास भी चाँदी है और उसके पास भी चाँदी है।"

राज ने पूछा — क्या सचमुच? जाओ और जा कर देखो कि उसके घोंसले में क्या है।"

सारे दरबारी उस पेड़ की तरफ दौड़े गये जहाँ उसने अपना घोंसला बना रखा था। उन्होंने उसमें झाँक कर देखा तो उनको उसमें तुरन्त ही एक चाँदी का सिक्का दिखायी दे गया।

जब वे लोग वापस आये तो राजा ने उनसे पूछा — "इसने वहाँ क्या छिपा रखा है?"

दरबारी बोले — "योर मैजेस्टी इसके घोंसले में एक चमकता हुआ चाँदी का सिक्का है।"

राजा यह सुन कर बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा और बोला — "उसने वह सिक्का वहॉ से उठाया होगा जहॉ मेरे नौकरों ने उनको धोने के बाद सूखने के लिये डाला होगा। वह सिक्का मेरा है। जाओ और टुनटुनी के घोंसले से उसे निकाल कर ले आओ।"

एक दरबारी दौड़ा हुआ गया और वह सिक्का उसके घोंसले में से निकाल कर ले आया। टुनटुनी इस बात से बहुत दुखी हुई। इस बार उसने और तेज़ गाया —

मुझे बड़े दुख से गाना पड़ रहा है कि हमारा राजा इतना नीच और इतना छोटा है
मेरे पास केवल एक सिक्का था और यह सच है कि राजा ने उसे भी छीन लिया

यह सुन कर तो राजा के हॅसते हॅसते पेट में बल पड़ गये। उसने अपने दरबारियों से कहा — "लगता है कि उस सिक्के के चले जाने से टुनटुनी वास्तव में बहुत दुखी है। मेरे पास से अगर एक सिक्का चला जाये तो मुझे क्या फर्क पड़ता है। जाओ वह सिक्का उसके घोंसले में रख आओ।"

सो एक दरबारी गया और वह सिक्का उसके घोंसले में रख आया। टुनटुनी को लगा कि वह तो राजा से जीत गयी तो उसने फिर गाना गाना शुरू कर दिया —

राजा डर गया क्योंकि उसने मेरा सिक्का मुझे वापस कर दिया

राजा ने टुनटुनी के गाने के ये शब्द सुने तो वह बहुत गुस्सा हुआ। वह चिल्लाया "उस छोटी सी चिड़िया की यह हिम्मत कि वह

मुझे डरपोक कहे। जाओ उसे तुरन्त ही पकड़ कर लाओ। मैं आज उसको तेल में तलवाता हूँ और उसे दोपहर के खाने में खाता हूँ।"

कुछ लोग दौड़े गये और तुरन्त ही इस छोटी चिड़िया को पकड़ कर ले आये। राजा ने उसको अपने एक हाथ में कस कर पकड़ा और उससे कहा — "तो मैं तुझसे डरता हूँ? मैं तुझे अभी बताता हूँ।"

कह कर राजा टुनटुनी को अन्दर ले गया जहाँ उसकी सात रानियाँ उसके दोपहर के खाने की देखभाल कर रही थीं। उसने अपनी सबसे बड़ी रानी को उसे दिया और कहा — "लो यह टुनटुनी लो इसको ले जाओ और इसको तल कर ले आओ मैं इसको अभी दोपहर के खाने में खाना चाहता हूँ।"

रानी ने उस चिड़िया को राजा के हाथ से ले कर अपने हाथ में कस कर पकड़ लिया ताकि वह कहीं उड़ न जाये। उसको देखते ही उसकी दूसरी रानियों के मुँह से निकला — "ओह कितनी सुन्दर चिड़िया है। कितने दुख की बात है कि राजा इसको अपने दोपहर के खाने में खाना चाहते हैं।"

दूसरी रानियों को भी वह चिड़िया इतनी प्यारी लगी कि उन्होंने बड़ी रानी से कहा कि वह वह चिड़िया उनको भी पकड़ने के लिये दे दें क्योंकि वे भी उसको अपने हाथ में पकड़ना चाहती हैं।

बड़ी रानी ने उसको एक दूसरी रानी को दे दिया। दूसरी रानी ने उसको तीसरी रानी को दिया। जब वे इस तरह से उस चिड़िया

को एक दूसरे को दे रही थीं तो टुनटुनी किसी तरह से उनके हाथों से फिसल गयी और उड़ गयी।

यह देख कर बड़ी रानी गुस्से से चिल्लायी — "अरे देखो न तुम लोगों ने क्या किया। उस चिड़िया को उड़ा दिया। अब हम राजा को खाने में क्या देंगे। वह तो बहुत गुस्सा होंगे।"

राजा थोड़ा गुस्से वाला था सो सभी उससे डरते थे। दूसरी रानी कुछ उपाय सोचती हुई बोली — "पर हमको राजा को कुछ न कुछ तो देना ही पड़ेगा सो हम उनको कुछ और देंगे और बतायेंगे कि वह वही चिड़िया है।"

तभी तीसरी रानी ने एक मेंढक की तरफ इशारा किया और बोली — "हम यह मेंढक पकड़ लेते हैं और इसको तल देंगे। हम इसको टुकड़े टुकड़े कर के तलेंगे इससे राजा इस मेंढक में और उस चिड़िया में कोई अन्तर नहीं कर पायेंगे।"

बड़ी रानी बोली — "मेरे ख्याल से हम यही कर सकते हैं। अब किसी दूसरी चिड़िया को पकड़ने का समय भी तो नहीं है। राजा यहाँ खाने के लिये अब बस कभी भी आते होंगे।"

सातों रानियों ने मेंढक पकड़ा और उसको काट कर बहुत सारे मसालों के साथ तल दिया।

बस तभी राजा खाना खाने के लिये आ पहुँचे। आते ही उन्होंने पूछा — "कहाँ है मेरी तली हुई चिड़िया?"

रानियों ने चुपचाप और कई तली हुई चीज़ों के साथ उनको तला हुआ मेंढक परोस दिया। राजा उसको खाते खाते बोले — "अरे वाह यह चिड़िया तो बहुत स्वदिष्ट है। अब उस चिड़िया को शाही परिवार के प्रति बदतमीज़ होने का सबक मिल जाना चाहिये।"

इस बीच टुनटुनी वहीं एक पेड़ पर बैठी यह सब तमाशा देख रही थी। उसने बड़ी तेज़ और साफ आवाज में गाया —

राजा तो बेवकूफ है वह मेंढक खा रहा है और सोचता है कि वह मुझे खा रहा है

राजा ने टुनटुनी को देखा भी और सुना भी तो वह अपनी रानियों पर उसको बेवकूफ बनाने पर बहुत गुस्सा हुआ। उसने अपने सिपाहियों को बुलाया और उनको अपनी रानियों की नाक का अगला हिस्सा काटने का हुक्म दिया। इससे वे बहुत ज़्यादा घायल तो नहीं हुईं पर वे बहुत ज़ोर से चिल्लायीं जरूर।

टुनटुनी ज़ोर से हँस दी और बोली —

टुनटुनी चिड़िया की ताकत देखो और देखो कि मैंने क्या मुसीबत खड़ी कर दी है

यह सुन कर राजा फिर चिल्लाया — "फिर पकड़ लो इस नीच चिड़िया को। मुझे इसे बस खाना है।"

राजा के आदमी भागे और उन्होंने एक बार फिर उस चिड़िया को पकड़ लिया। राजा के दरबारियों में से एक ने राजा को सलाह

दी कि इस बार इसको पकाने के लिये न दिया जाये क्योंकि इस तरह से यह फिर उड़ सकती है।

राजा बोला — "तुम ठीक कहते हो। अबकी बार मैं इसको पूरा का पूरा ऐसे ही पानी के साथ निगल जाऊँगा।"

सो उसने चिड़िया को कस कर पकड़ा और पूरा का पूरा ही निगल गया। पर क्योंकि राजा उस चिड़िया को पूरा का पूरा ही निगल गया था सो वह मरी नहीं। वह राजा के गले में ही अपने पंख फड़फड़ाने लगी। इससे राजा को बहुत परेशानी हुई।

राजा बोला — "एक काटने वाला तैयार रखो। अगर मैं अपना मुँह खोलूँ और वह चिड़िया मेरे मुँह से बाहर निकले तो तुम लोग उसको तुरन्त ही काट देना। इस बार वह भागने न पाये।"

उसको बहुत ज़ोर से खाँसी आयी तो उसका मुँह बहुत बड़ा सा खुल गया इससे वह चिड़िया उसके मुँह से बाहर निकल आयी और उड़ गयी।

चिड़िया के राजा के मुँह से बाहर निकलते ही राजा के आदमी ने काटने वाला चिड़िया की गर्दन काटने वाला चिड़िया के ऊपर मारा मगर चिड़िया तो उड़ गयी और वह काटने वाला राजा की नाक के अगले हिस्से पर जा कर लगा जिससे राजा की नाक का अगला हिस्सा कट गया। जैसे उसकी सातों रानियों का कटा था।

टुनटुनी पेड़ पर जा कर बैठ गयी और जा कर हँस हँस कर इस तरह गाने लगी —

नाक कटे राजा का हाल देखो वह चिल्ला रहा है और मैं गा नाच रही हूँ

पर टुनटुनी वहाँ अब उस राज्य में ठहरने वाली नहीं थी जहाँ का राजा अपनी ही प्रजा की रक्षा करने की बजाय उसे तकलीफ पहुँचाता हो।

उसको मालूम था कि उससे भी और अच्छे राज्य थे और उस राजा से भी ज़्यादा दयावान राजा थे। सो टुनटुनी वहाँ से उड़ गयी और एक ऐसे राज्य में चली गयी जहाँ का राजा उस राजा से ज़्यादा दयावान था।



15 आठ शाही पेड़[41]

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके सात रानियाँ थीं। यह राजा एक बहुत ही अच्छा और दयालु राजा था पर उसका कोई वारिस नहीं था और इस बात से वह बहुत दुखी था।

एक दिन उसको खबर मिली कि उसकी सबसे छोटी और सबसे सुन्दर रानी को बच्चे की आशा हो गयी है। राजा इस खबर से बहुत खुश हुआ और राज्य भर में खूब खुशियाँ मनायी गयीं।

राजा की बड़ी रानियों ने भी यह खबर सुनी तो वे तो ईर्ष्या से जल उठीं क्योंकि उन्होंने देखा देखा कि राजा अब अपना ज़्यादा ध्यान उसी की तरफ लगा रहा है। वह उसके लिये बहुत सारी भेंटें भी ला रहा है उसका बहुत ख्याल भी रख रहा है।

जब आखिरी दिन आ पहुँचा तो छोटी रानी ने एक नहीं दो नहीं बल्कि आठ आठ बच्चों को जन्म दिया – सात सुन्दर बेटे और एक सुन्दर बेटी।

बड़ी रानियों को जब यह पता चला तो क्योंकि वे खुद बच्चों की माँ नहीं बन सकती थीं सो उन्होंने एक नीच चाल चली। रात को इससे पहले कि राजा अपने बच्चों को देखता हर रानी ने उसका

[41] Eight Royal Trees – a folktale from Bengal – Adapted from the Web Site : http://worldstories.org.uk/stories/eight-royal-trees/

एक एक बच्चा चुरा लिया। उन्होंने उनको मार दिया और महल के बागीचे में दफ़ना दिया जहाँ वे किसी को कभी भी नहीं मिलते।

फिर उन्होंने हर बच्चे की जगह एक एक कुत्ते का बच्चा रख दिया। बच्ची की जगह एक बिल्ली का बच्चा रख दिया गया। इस सबके बाद उन्होंने राजा को जल्दी से उसके बच्चों को देखने के लिये छोटी रानी के महल में बुलाया।

राजा के आते ही राजा की पहली रानी बोली — "अरे इसने तो जानवरों को जन्म दिया है।"

दूसरी रानी बोली — "यह तो साफ जाहिर है कि यह किसी जादूगरनी काम है वरना कोई आदमी जानवरों के बच्चों को जन्म कैसे दे सकता है। राजा साहब आप इस रानी को हमारे राज्य से बाहर निकाल दीजिये।"

हालाँकि सबसे छोटी रानी ने अपनी सफाई में बहुत कुछ कहा पर राजा नहीं माना और उसने रानी को देश निकाला दे दिया और वह देश से बाहर रहने पर मजबूर कर दी गयी। उस बेचारी को कभी भी यह पता नहीं चला कि उसके बच्चों का क्या हुआ।



समय गुजरता गया कि एक दिन वसन्त में एक बहुत ही आश्चर्यजनक घटना घटी। जिस जगह नीच रानियों ने बच्चों को मार कर गाड़ा था वहाँ सात चम्पा के पेड़ और एक पारुल का पेड़ उग आये थे। सब सुन्दर थे खुशबू से भरे थे।

जब भी वे नीच रानियॉ उन पेड़ों के पास जाने की कोशिश करतीं और उनके सुन्दर फूल तोड़ने की कोशिश करतीं तो वे शाखाऐं उनकी पहुँच से कुछ ऊपर उठ जातीं और वे फूलों को छू भी नहीं पातीं। इस तरह वे फूल हमेशा उन पेड़ों की शाखों पर ही रहते।

तभी धीमी हवा में एक आवाज फैल जाती। देश निकाली रानी को यहॉ ले कर आओ फिर देखो कि वह हमारे फूल चुन सकती है या नहीं।

यह बात रानियों ने राजा से कही तो राजा ने अपने कुछ लोगों को हुक्म दिया कि वह देश निकाली हुई रानी को महल ले कर आयें। जब रानी महल आयी तो उसे उन पेड़ों के पास ले जाया गया और उससे उन पेड़ों से फूल तोड़ने के लिये कहा गया।

वह आगे बढ़ी और उसने चम्पा के एक पेड़ से एक फूल तोड़ लिया। उस फूल में से एक लड़का निकल आया और अपनी मॉ के गले लग गया। ऐसा ही दूसरे तीसरे और दूसरे चम्पा के पेड़ों के साथ हुआ।

वह हर पेड़ से एक चम्पा का फूल तोड़ती और उसमें से उसका एक बेटा बाहर निकल कर उसके गले लग जाता। जब रानी पारुल के पेड़ के पास पहुँची और उसने वहॉ से पारुल का एक फूल तोड़ा तो उसमें एक सुन्दर सी बच्ची निकल कर मॉ के गले से लिपट

गयी। राजा तो अपने सारे परिवार को एक जगह देख कर बहुत खुश हो गया।

उसने छोटी रानी से माफी मॉगी और उसे महल में वापस ले गया। जब राजा को पता चला कि यह नीच चाल उसकी बड़ी रानियों की थी तो उसने उन सबको उम्र भर के लिये कैद में डलवा दिया और फिर उनके बारे में कभी नहीं सुना गया।

अपनी छहों रानियों के कैद में जाने के बाद राजा अपनी सबसे छोटी रानी और अपने आठ बच्चों के साथ बहुत दिनों तक हॅसी खुशी रहा।



तमिल नाडु की लोक कथाऐं

16 पॉसा पलट गया[42]

बहुत सारी लोक कथाऐं न्याय के ऊपर आधारित होती हैं। वे इस बात पर ज़ोर देती हैं कि अपराधी को न्याय मिलना ही चाहिये। इस तरह से चोर धोखा देने वाले और दूसरे बुरे आदमियों को सजा मिलनी ही चाहिये। और ईमानदार आदमी को उसकी ईमानदारी का इनाम भी मिलना ही चहिये।

इस कहानी में यह एक सादा सा न्याय है। इसमें कोई कानून की बहस नहीं है कोई वकील नहीं है बल्कि एक जज एक सादा सा जाल बिछा कर अपराधी को पकड़ता है।

पॉसा पलट गया तमिल नाडु की एक बहुत पुरानी लोक कथा है इसमें वहॉ की पारम्परिक शादी के रीति रिवाज और हाथी की महत्ता दिखायी गयी है। हाथी वहॉ पर अभी बहुत लोकप्रिय है और बहुत सारे मौकों पर इस्तेमाल में आता है।

एक बार की बात है कि तमिल नाडु के गॉव में एक कुम्हार रहता था। उसके केवल एक ही बच्चा था और वह था एक बेटा। कुम्हार होने की वजह से वह कोई अमीर आदमी तो नहीं था पर उसने अपने बेटे के बारे में बहुत कुछ सोच रखा था।

---

[42] Table Turned – a folktale from Tamil Nadu, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/32/tamil_folktale_indian_folktales.htm

वह अपने बेटे के खाने और कपड़ों पर बहुत अच्छी तरह से खर्च करता था और अपने बेटे को स्कूल भी भेजता था। धीरे धीरे उसका बेटा बड़ा हो गया और एक सुन्दर नौजवान हो गया। अब वह अपनी कमाई अपने आप करने लायक हो गया था। इसलिये अब उसकी शादी करने का समय आ गया था।

कुम्हार ने अपने बेटे की तरफ देखा तो उसका सीना गर्व से फूल गया। उसने अपने बेटे की शादी के बहुत अच्छे अच्छे प्लान बना रखे थे जिसमें उसने बहुत बढ़िया गाने बजाने वालों को बुलाना था। बहुत अच्छी सजावट करवानी थी। बहुत अच्छे फूल लगवाने थे। और बहुत अच्छा खाना खिलवाना था।

शादी के बाद उसको अपने बेटे और बहू को हाथी पर चढ़ा कर गॉव भर में घुमाना था। जैसे अमीर आदमियों के बच्चे हाथी पर चढ़ कर शहर भर में घूमने निकलते हैं ऐसे ही उसको भी उनको हाथी पर चढ़वाना था।

उसी गॉव में एक तेल बेचने वाला भी रहता था जिसके पास एक हाथी था। वह अपना हाथी कुछ पैसों के बदले में किराये पर दिया करता था।

कुम्हार उस तेल बेचने वाले के पास उसका हाथी मॉगने गया और उससे उसका हाथी एक दिन के लिये किराये पर ले लिया। उस रात उस कुम्हार ने अपने बेटे बहू का एक बहुत ही शानदार जुलूस निकाला।

दुलहा और दुलहिन दोनों ने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहन रखे थे। दोनों हाथी पर बैठे थे जिसको उस मौके के लिये खास तरीके से सजाया गया था।

उनके पीछे पीछे बहुत सारे खुश खुश आदमी स्त्रियाँ बच्चे चल रहे थे। ढोल बजाने वाले और गवैये उनके साथ साथ चल रहे थे। कि अचानक हाथी गिर पड़ा और मर गया।

यह देख कर कुम्हार तो बेचारा सकते में आ गया क्योंकि हाथी अभी तक तो ठीक था फिर इतनी जल्दी उसको क्या हो गया कि वह मर गया। किसी की भी समझ में नहीं आया कि उसको अचानक क्या हो गया था।

कुम्हार बेचारा रात भर घटनाओं पर विचार करता रहा। अगली सुबह वह तेल बेचने वाले के पास गया और बोला — "मुझे बहुत अफसोस है कि आपका हाथी मर गया।" कह कर उसने उसको या तो दूसरा हाथी या फिर हाथी की पूरी कीमत देने का वायदा किया।

तेल बेचने वाला स्वभाव से ही झगड़ालू आदमी था। वह खड़ा हो कर कुम्हार पर चिल्लाने लगा कि उसको तो अपना वही हाथी चाहिये था जिसको उसने पाला था।

अब यह तो साफ था कि कुम्हार वही हाथी वापस नहीं ला सकता था क्योंकि वह तो मर गया था। इसलिये तेल बेचने वाले ने कचहरी में शिकायत कर दी।

जब उनका मामला सुनने का दिन आया तो जज ने तेल बेचने वाले से उसकी शिकायत पूछी। तेल बेचने वाला बोला कि कुम्हार ने एक दिन के लिये उसका हाथी किराये पर लिया था पर वापस नहीं किया।

अब जज ने कुम्हार से पूछा कि उसने तेल बेचने वाले का हाथी क्यों वापस नहीं किया तो कुम्हार ने जज को सारी कहानी बता दी और वही कहा जो उसने तेल बेचने वाले से कहा था कि वह उसको या तो दूसरा हाथी दे देगा या फिर उसके हाथी की पूरी कीमत दे देगा।

जज ने सोचा कि यह सौदा ठीक भी था। उसने तेल बेचने वाले को समझाने की बहुत कोशिश की कि इन हालात में यह सौदा ठीक था पर वह था कि कुछ भी सुनने को तैयार ही नहीं था।

वह अपनी जिद पर अड़ा हुआ था कि उसको तो अपना वाला हाथी ही चाहिये और जज से कहा कि वह कुम्हार को इस बात के लिये ज़ोर दें कि वह उसका अपना हाथी वापस कर दे।

जज एक अक्लमन्द आदमी था। उसने देखा कि तेल बेचने वाले से बहस करने से कोई फायदा नहीं है सो उसने मुकदमा अगले दिन के लिये रख दिया।

यह सुन कर तेल बेचने वाला वहाँ से चला गया। जब वह वहाँ से चला गया तो जज ने कुम्हार को बुलाया और उससे कहा कि उसको मालूम था कि उसका सौदा एक ईमानदारी का सौदा था फिर

भी वह तेल बेचने वाले को उस सौदे पर राजी नहीं कर सका। इसलिये उसने कुम्हार को एक प्लान समझाया।

कह कर उसने कुम्हार के कान में कुछ फुसफुसाया। उसको सुन कर कुम्हार वहाँ से हँसता मुस्कुराता चला गया।

अगले दिन सुबह को जब कचहरी खुली तो वहाँ कुम्हार कहीं नहीं था। तेल बेचने वाला यह कहता हुआ इधर से उधर घूम रहा था कि यह कुम्हार तो लगता है कचहरी से डर कर भाग गया।

थोड़ी देर तक इन्तजार करने के बाद तेल बेचने वाले ने जज से कहा "ऐसा लगता है कि कुम्हार कचहरी आने में डर रहा है इसलिये वह अपने घर में छिपा बैठा है।"

सो उसने कचहरी से कुम्हार के घर जाने और उसको खुद वहाँ से लाने की इजाज़त माँगी। जज ने यह इजाज़त उसको तुरन्त ही दे दी और साथ में कचहरी का एक जूनियर औफीसर साथ कर दिया।

दोनों कुम्हार के घर पहुँचे। तेल बेचने वाले ने उसके घर का दरवाजा बहुत ज़ोर से खटखटाया पर अन्दर से कोई जवाब नहीं आया। उसने दरवाजे पर अपने घूँसे से भी मारा और अपनी सबसे ऊँची आवाज में कुम्हार का नाम ले कर भी पुकारा पर अन्दर तो बिल्कुल ही शान्ति थी कोई आवाज नहीं थी।

यह देख कर तेल बेचने वाले को बहुत गुस्सा आ गया और गुस्से में भर कर उसने दरवाजे को एक बहुत ज़ोर का धक्का दिया।

अब उसको यह तो पता नहीं था कि दरवाजे के पीछे कुम्हार ने अपने मिट्टी के बर्तन लगा रखे थे सो जैसे ही उसने दरवाजे में धक्का मारा तो उसके सारे बर्तन टूट गये।

बस उसी समय कुम्हार अपने पिछले दरवाजे से वहॉ आ गया और रोते हुए उस पर अपने मिट्टी के बर्तन तोड़ने का इलजाम लगा दिया।

वह बोला कि तेल बेचने वाले ने उसके पुरखों के दिये हुए बर्तन तोड़ डाले थे और वे बर्तन अब किसी भी तरह से वापस नहीं लाये जा सकते थे। अब वह तेल बेचने वाले से अपने वही बर्तन वापस मॉग रहा था जो तेल वाले से टूट गये थे।

अब परेशान होने की बारी तेल बेचने वाले की थी। उसने कुम्हार से सौदा किया कि अगर वह उससे अपने वही मिट्टी के बर्तन नहीं मॉगे तो वह भी उससे अपना वही हाथी नहीं मॉगेगा और मुकदमा वापस ले लेगा।

कुम्हार काफी देर तक ना नुकुर करने का बहाना करता रहा पर आखीर में उसने उसकी बात मान ली और मामला तय हो गया कि न तो कुम्हार अपने वही बर्तन मॉगेगा और न ही तेल बेचने वाला अपना वही हाथी मॉगेगा। मुकदमा वापस ले लिया गया।

इस तरह तेल बेचने वाला दोनों तरफ से हार गया। उसका हाथी भी गया और उसको हाथी का पैसा भी नहीं मिला।

हालाँकि कुम्हार के भी थोड़े से बर्तन टूट गये पर वे इतने कीमती नहीं थे जितना कि तेल बेचने वाले का हाथी। एक हफ्ते के अन्दर अन्दर ही उसने नये बर्तन बना लिये थे।



17 गुरू परमार्थ और उनके पॉच मूर्ख शिष्य[43]

यह एक हॅसी और ज्ञान की लोक कथा है जो दक्षिण भारत के तमिल नाडु प्रान्त में कही सुनी जाती है।

यह एक बहुत ही बेकार के गुरू जी और उनके जैसे ही पॉच महामूर्ख शिष्यों की कहानी है। इसमें इनकी छह कहानियॉ है जो हिन्दू धर्म के छह वैदिक विचारों के खिलाफ बोलती हैं। यहॉ वे वैदिक विचार तो नहीं दिये गये हैं केवल उनकी कहानियॉ ही दी हुई हैं।

यह बहुत पुरानी बात है कि दक्षिण भारत के एक छोटे से गॉव में एक बहुत ही गरीब सीधा सीधा बूढ़ा रहता था जिसका नाम था परमार्थ। वह एक बहुत ही बेकार का गुरू था।

उन गुरू जी के पॉच शिष्य थे जो उन्हीं की तरह मूर्ख थे। उनके नाम भी उनके गुणों के अनुसार ही थे – खर दिमाग, मूर्ख, कमजोर, बेवकूफ और गधा[44]।

क्योंकि उन दिनों सब गुरू और शिष्य आश्रमों में रहते थे ऐसे ही वे सब भी रहते थे और इसी लिये उनके पास बहुत सारे काम थे और उनको बहुत सारे अनुभव होते रहते थे।

---

[43] Guru Paramarth and His Five Foolish Disciples – a folktales told and heard in Tamil Nadu, Southern India. Taken from the Web Site : http://www.indiadivine.org/guru-paramartha-and-his-five-foolish-disciples/

[44] Mudhead, Fool, Weakling, Idiot and Rascal

1 पहली घटना – गुरू जी और नदी

एक दिन गुरू जी और उनके पॉचों शिष्य सुबह सुबह मन्दिर जाने के लिये निकले। यह मन्दिर उनके आश्रम के पास के एक गॉव में ही था। सो जब वे सब मन्दिर जा रहे थे तो रास्ते में गुरू जी अपने शिष्यों को जीवन के बारे में बताते जा रहे थे।

वह बोले — "बच्चो, जीवन बहुत आसान है। जीवन वही है जो सब जीवधारियों के पास होता है सारे जीवधारी उसी से चलते फिरते हैं। देखो यह पेड़ देखो। इसकी पत्तियॉ हिल रही है इसलिये यह हम यकीन से कह सकते हैं कि इस पेड़ में जीवन है।"

गुरू जी के सारे शिष्य एक साथ बोले — "गुरू जी, यह तो आपने बहुत अच्छी बात बतायी। आप तो इतनी मुश्किल बातों को भी कितनी आसानी से समझा देते हैं। हम कितने भाग्यशाली हैं कि हम आप जैसे गुरू के शिष्य हैं।"

कुछ देर बाद ही एक नदी आ गयी। गुरू जी ने अपने सबसे पुराने शिष्य गधे से पूछा — "ओ गधे, ज़रा यह देख कर तो बताओ कि यह नदी सो रही है कि जाग रही है? मुझे अपने पुराने अनुभवों से पता है कि यह नदी बहुत ही चालाक नदी है।

हमको इसके साथ बर्ताव करने में बहुत ही सावधान रहना चाहिये। इससे पहले कि हम इस नदी को पार करें हमको यह पता कर लेना चाहिये कि यह नदी इस समय सो रही है या जागी हुई।

सो तुम जाओ और पता लगा कर लाओ कि यह सो रही है या जाग रही है।"

गधा गुरू जी को खुश करने के लिये तुरन्त ही नदी के किनारे की तरफ दौड़ा गया। उसने यह जानने के लिये एक प्लान सोचा और उसके अनुसार पेड़ की एक सूखी डंडी ढूँढी और उसमें आग लगा दी।

वह बोला — "मैं इस नदी को जला दूँगा और इस तरह से पता कर लूँगा कि यह सो रही है या जाग रही है। अगर यह इस डंडी की आग के जलने से चिल्लायी तो समझो कि यह जाग रही है नहीं तो यह सो रही है।"

अपने इस प्लान के अनुसार उसने वह डंडी जला कर नदी में फेंक दी। जैसे ही उसने वह जलती डंडी नदी में फेंकी कि उसने फिस्स की एक आवाज सुनी।

वह बेचारा तो उस आवाज को सुन कर इतना डर गया कि वहीं गिर पड़ा।

फिर वह कॉपता चिल्लाता उठ कर अपने गुरू जी के पास भागा और जा कर बोला — "गुरू जी गुरू जी अभी हमको यह नदी पार नहीं करनी चाहिये क्योंकि यह नदी तो बिल्कुल जागी हुई है। जैसे ही मैंने इसको छुआ तो इसने बहुत ज़ोर से हिस्स की आवाज की और मुझे धुँए से ढक दिया।

यह तो मेरे ऊपर इतनी गुस्सा थी कि मुझे डर लगा कि यह तो अभी उठेगी और मुझे मारेगी। यह तो केवल आपकी और अपने माता पिता की दया से मैं यहाँ तक ज़िन्दा वापस आ सका वरना तो यह न जाने मेरा क्या हाल करती। उफ़ मुझ पर कितनी बुरी बीती।”

गुरू जी ने गधे को शान्त किया और बोले — “तो अब हम क्या करें? इसको तो हमको भगवान की इच्छा समझ कर मान लेना चाहिये। ठीक है हम तब तक इन्तजार करते हैं जब तक यह नदी सो नहीं जाती।”

सो वे सब नदी के सोने का इन्तजार करने के लिये पास के एक बागीचे में चले गये और वहीं बैठ कर उस नदी के चालाक स्वभाव के बारे में बाते करने लगे।

गुरू जी के पाँचों शिष्यों में से मूर्ख[45] को दर्शन[46] बहुत अच्छा लगता था। वह बोला — गुरू जी, मैंने नदी के दिमाग के बारे में बहुत कुछ सुना है और खास कर के इस नदी के दिमाग के बारे में। हमको इसकी ताकत को कम नहीं आँकना चाहिये।

मेरे बाबा का तो अपना एक अनोखा ही अनुभव है इसके बारे में। वह मैं आपको बताता हूँ।

---

[45] Fool

[46] Translated for the word “Philosophy”

मेरे बाबा एक बहुत बड़े सौदागर थे। एक बार वह अपना काम धन्धा कर के वापस आ रहे थे तो वह इसी रास्ते से गुजरे। उनके नौकर और दो नमक से लदे हुए गधे उनके साथ थे।

गर्मी के दिन थे सो दिन काफी गर्म था। इसलिये उन लोगों ने सोचा कि वे लोग इस नदी में नहा लें और गधों को भी थोड़ा सुस्ता लेने दें।

सो आदमी और गधे दोनों नदी में नहाने के लिये पानी में घुसे और नहा कर पेड़ की ठंडी छाँह में बैठ गये। फिर जब गर्मी थोड़ी कम हो गयी तो वे फिर चल दिये।

वे बहुत दूर नहीं गये थे कि मेरे बाबा का एक नौकर चिल्लाया — "ओह नहीं मालिक, ये नमक के बोरे अभी भी ठीक से बन्द तो हैं पर ये भीगे हैं और इनमें नमक भी नहीं है। इनका नमक कहाँ गया? किसने लिया इनका नमक?"

मेरे बाबा कुछ सोच कर बोले — "हम लोग बड़े भाग्यशाली हैं। अगर इस नदी ने हमारा नमक न लूट लिया होता तो यह बहुत गुस्सा हो जाती और हम सबको खा जाती।

हम सबको भगवान ने बचा लिया कि इसने केवल हमारा नमक ही खाया हमको नहीं खाया इसलिये हम लोग तो बहुत भाग्यशाली हैं।"

यह सुन कर सारे नौकर सन्तुष्ट हो गये और आगे बढ़ गये।

जब वह मूर्ख अपने गुरू जी से इस तरह से नदी का दिमाग बता रहा था कि तभी एक आदमी घोड़े पर सवार हो कर उनके पास से गुजरा।

वह आदमी नदी की तरफ जा रहा था सो शिष्यों ने उसको चेतावनी दी कि वह अभी नदी में न जाये क्योंकि वह नदी अभी जाग रही थी और उसका कुछ भी बुरा कर सकती थी पर उसने उनकी चेतावनी पर कोई ध्यान नहीं दिया और अपना घोड़ा नदी के अन्दर से दौड़ाता हुआ नदी के उस पार पहुँच गया।

यह देख कर गुरू जी तो हक्का बक्का रह गये और उनके मुँह से निकला — "ओह यह आदमी कितना बहादुर है।"

उनके सारे शिष्य भी एक साथ बोले — "हॉ यह तो है।"

अब तक तो वह घुड़सवार नदी पार कर के उसके दूसरी तरफ गायब भी हो चुका था।

उसको नदी के दूसरी ओर गायब होते देख कर कमजोर[47] नाम का शिष्य बोला — "गुरू जी, अगर आपके पास भी एक ऐसा ही घोड़ा होता तो हमारी सब मुश्किलें आसान हो जातीं।

तब हमको इन चालाक नदियों की चिन्ता नहीं करनी पड़ती। हम उनको आसानी से पार कर जाते। तो हम लोग एक घोड़ा क्यों नहीं खरीद लेते?"

[47] Weakling

गुरू जी बोले — "यह बात हम बाद में करेंगे। अभी तो हमको और बहुत सारी जरूरी बातों पर सोच विचार करना है। अब शाम होने आ रही है तो शायद अब यह नदी सो रही होगी नहीं तो वह घुड़सवार इतनी आसानी से यह नदी पार कैसे कर जाता? मुझे पूरा यकीन है कि यह अब सो रही है। खरदिमाग[48], ज़रा जा कर देखना तो कि अब यह सो गयी या नहीं।"

खरदिमाग गुरू जी को खुश तो रखना चाहता था पर वह उनके पॉचों शिष्यों में सबसे कम अक्ल वाला था।

उसने सोचा — "यह तो बहुत ही मुश्किल काम है पर मैं अपने गुरू जी को भी तो नाखुश करना नहीं चाहता सो मैं भी यह जानने के लिये कि नदी सो रही है या जाग रही है वही तरीका इस्तेमाल करता हूॅ जो गधे ने किया था।

अच्छा तो यही है कि पहले से आजमाया हुआ तरीका ही इस्तेमाल किया जाये। सो कहॉ है वह डंडी जो उस गधे ने इस्तेमाल की थी?"

आखिर उसे वह डंडी मिल ही गयी जिसे गधे ने नदी के जागने सोने को जॉचने के लिये इस्तेमाल किया था – पानी में भीगी हुई और एक तरफ से जली हुई।

वह उस बुझी हुई गीली डंडी को ले कर नदी की तरफ भागा। डरते हुए उसने वह डंडी पानी में डुबोयी। भगवान का लाख लाख

[48] Mudhead

धन्यवाद कि नदी के पानी में से कोई धुँआ नहीं निकला और कोई आवाज भी नहीं आयी।

वह मुस्कुराया और बोला — "अब गुरू जी खुश हो जायेंगे।"

वह चुपचाप अपने साथियों के पास पहुँचा और गुरू जी से बोला — "गुरू जी, मैंने नदी को जाँच लिया। यही समय है जब हमको यह नदी पार कर लेनी चाहिये। यह मौका इतनी आसानी से फिर नहीं आयेगा क्योंकि नदी इस समय गहरी नींद में सो रही है।

शोर नहीं मचाना और सँभाल कर पैर रखना। अगर हम अभी चलें और सावधानी से चलें तो नदी नहीं जागेगी और हम उसको आसानी से पार कर जायेंगे। आओ।"

जब गुरू जी और उनके दूसरे शिष्यों ने यह सुना वे बहुत सावधानी से उठे और एक एक कदम धीरे धीरे रख कर नदी पार करने लगे।

उनके सबके दिल धड़क रहे थे। उनके कान छोटी से छोटी आवाज सुनने के लिये तैयार थे। इस तरह से वह नदी उनको पार करने में बहुत बड़ी लग रही थी।

आखिर वे सब नदी पार कर के उसके दूसरे किनारे पर पहुँच गये। वहाँ पहुँच कर तीन शिष्य तो नाचने गाने लगे।

वे बोले — "गुरू जी आप कितने अच्छे हैं। आपकी दया से हमने इस भयानक नदी को कितनी आसानी से पार कर लिया। आप कितने अक्लमन्द हैं, आप कितने ताकतवर हैं।"

मूर्ख बोला — "अभी इतना ज़्यादा खुश होने की जरूरत नहीं है। पहले हम यह तो देख लें कि हम लोग सब इधर आ गये कि नहीं।"

और इसके साथ ही उसने सबको गिनना शुरू कर दिया। जैसा कि उसके नाम से ही पता चलता था कि वह उन सबमें सबसे ज़्यादा अक्लमन्द तो नहीं था तो वह अपने सब साथियों को गिनता रहा – एक, दो, तीन, चार और यह पाँच।

उसकी गिनती पाँच पर आ कर रुक जाती थी। उसको मालूम था कि वे जब चले थे तो वे सब छह थे।

वह बोला — "गुरू जी, यह तो बड़ा गड़बड़ हो गया। हममें से एक आदमी खो गया है। जब हम नदी के किनारे बैठे हुए थे तब हम सब छह थे पर अब हम केवल पाँच ही हैं। हमारा एक आदमी कहीं खो गया है। यह नदी कितनी खराब है।"

गुरू जी बीच में ही बोले — "इतनी जल्दी मत करो। जल्दी करना किसी भले आदमी का काम नहीं है। चलो यहाँ बैठते हैं और अबकी बार मैं गिनता हूँ कि हम लोग कितने हैं।"

सब वहीं बैठ गये और गुरू जी ने गिनना शुरू किया। और जैसा कि तुमको मालूम है गुरू जी तो बहुत ही सीधे थे सो उन्होंने भी सबको पाँच ही गिना।

उन्होंने एक बार गिना, दो बार गिना, तीन बार गिना पर उनकी गिनती भी पॉच से आगे नहीं बढ़ी। वह परेशान हो गये तो वह पालथी मार कर[49] ध्यान लगा कर बैठ गये।

कुछ देर बाद उन्होंने अपनी ऑखें खोलीं और अपने शिष्यों से बोले — "हमको इसे भगवान की इच्छा ही समझना चाहिये कि हमारा केवल एक ही आदमी खोया है। यह नदी तो वाकई में बहुत ही खतरनाक है।

बल्कि यह तो इतनी खतरनाक निकली कि यहॉ तक कि जब यह सो रही थी तब भी इसने हमको तंग किया। इस नुकसान ने तो मेरा दिल ही तोड़ दिया पर क्या करें। हमको यह हमेशा याद रखना चाहिये कि हम लोग साधु हैं और ऐसे दुखों को हमको ज़्यादा नहीं सोचना चाहिये।"

सभी लोग बहुत परेशान थे सो इसी परेशानी की हालत में सब बार बार एक दूसरे को गिनने लगे पर पॉच से गिनती आगे ही नहीं बढ़ी। सब बहुत दुखी थे, रो रहे थे, सुबक रहे थे कि इसी हालत में गुरू जी और ज़्यादा परेशान हो गये और नदी को कोसने लगे।

वह बोले — "ओ चुड़ैल नदी, तुम कैसी हो, क्या तुम्हारे दिल में ज़रा सी भी दया नहीं है? क्या तुम्हारे कोई भाई बहिन नहीं है? क्या तुम्हारी समझ में नहीं आता कि तुम्हारे इस बर्ताव ने हमको कितना दुखी किया है?

---

[49] Sitting in a crosslegged position

मेरे सारे शिष्य कितने बढ़िया आदमी हैं। वे किसी भी गुरू की प्रेरणा हैं और तुमने कितनी निर्दयता से उनमें से एक को खा लिया है। हालाँकि हमने तुम्हारा कितना ख्याल भी रखा कि हमने तुम्हारी नींद में भी खलल नहीं डाला फिर भी तुमने हमको धोखा दिया।

हम साधु हैं इसलिये हम तुमको कोई सजा तो नहीं देंगे पर तुम यकीन रखो कि एक दिन तुम भी धोखा खाओगी।"

इस तरह से गुरू जी और उनके चेले पागलों की तरह से नदी को कोसे जा रहे थे और रोये जा रहे थे।

तभी एक और आदमी मन्दिर की तरफ जा रहा था। वह इन सबको रोते देख कर कुछ परेशान सा हो गया। उसने सोचा "इतने सारे लोग क्यों परेशान हैं? क्या बात हो सकती है?"

ऐसा लगता है कि इनके साथ कुछ बहुत ही भयानक घटना घट गयी है। देखता हूँ चल कर पूछता हूँ कि क्या मामला है।"

सो वह उनकी तरफ गया और उनसे पूछा — "जनाब क्या बात है आप सब इतने दुखी क्यों हैं? क्या आपका कोई मर गया है? आप मुझे बतायें। शायद मैं कुछ आपकी सहायता कर सकूँ।"

गुरू जी रोते हुए बोले — "दोस्त, शायद तुम हमारे दर्द को न समझ सको। पहले मेरे पाँच बहुत अच्छे शिष्य थे पर इस धोखेबाज नदी की वजह से अब केवल चार ही रह गये हैं। अब मैं क्या करूँ। इस नुकसान की वजह से हम सब बहुत दुखी हैं।"

उस आदमी ने यह सुन कर उन सब पर एक नजर डाली तो पाया कि वे तो पाँच नहीं बल्कि छह ही थे। वह अपने मन में मुस्कुराया कि ये लोग कितने सीधे सादे लोग हैं। चलो इन लोगों से थोड़ा आनन्द लिया जाये।

सबसे पहले उसने गुरू जी को झुक कर प्रणाम किया फिर बोला — "मैं आपका दुख समझ सकता हूँ गुरू जी। यह नदी तो वाकई में बहुत धोखेबाज है। शायद मैं आपकी कुछ सहायता कर सकूँ।

मुझे अथर्व वेद[50] का बहुत अच्छा ज्ञान है। मैं भूतों यक्षिणी गन्धर्व आदि को भी अच्छी तरह जानता हूँ और ये सब मेरे काबू में रहते हैं। मैं जैसा कहूँगा वे वैसा ही करेंगे। अगर आप मुझे थोड़ी सी दक्षिणा दें तो मैं आपके उस खोये हुए शिष्य को नदी से वापस ला सकता हूँ। यह मेरा फर्ज है कि मैं आपकी सहायता करूँ।"

यह सुन कर गुरू जी तो खुशी से पागल हो उठे। वह बोले — "लगता है कि आपको हमारे लिये भगवान ने भेजा है। मैं आपसे बहुत ज़्यादा प्रभावित हूँ कि इतने ज्ञानी होते हुए भी आप हम गरीब साधुओं की सहायता कर रहे हैं।

हम आपको बहुत धन्यवाद देते हैं और जो कुछ थोड़ा बहुत हमारे पास है उसे हम आपको दक्षिणा में देने को तैयार हैं। आप

[50] Ved are the main scriptures of Hindu Dharm. They are four – Rig Ved, Yajur Ved, Saam Ved and Atharv Ved

बस मेरा शिष्य वापस ला दें। हम आपको पैंतालीस सोने के सिक्के देंगे।"

वह आदमी यह सुन कर बहुत खुश हुआ कि बिना किसी काम के उसको पैंतालीस सोने के सिक्के मिल जायेंगे तो वह बहुत जल्दी ही अपने काम पर लग गया।

उसने नाटकीय ढंग से एक डंडी उठायी और बोला — "आप सब यहाँ एक लाइन में झुक कर और अपनी आँखें बन्द कर के खड़े हो जायें। पर जब भी मैं आप लोगों में से जिसको छुऊँ तो वह अपना नाम बताये। इस तरह से मैं आपके उस खोये हुए आदमी को वापस ला सकता हूँ। आप लोग समझ गये न?"

"ठीक।" और वे तुरन्त ही झुक कर और आँखें बन्द कर के एक लाइन में खड़े हो गये। अपने सीधेपन की वजह से उनको उस आदमी पर पूरा विश्वास था कि वह उनके खोये हुए साथी को वापस ला देगा।

वह आदमी फिर बोला — "सो अब हम शुरू करते हैं।"

और अगले ही पल उन्होंने एक सड़ाक की आवाज सुनी।

और उसके बाद आयी दूसरी आवाज काँपती हुई सी — "मैं परमार्थ गुरू।"

और फिर आयी तीसरी आवाज उस आदमी की "एक"।

कॉपते घुटनों और अधखुली ऑखों से शिष्यों ने देखा कि वहॉ क्या हो रहा था। उन्होंने देखा कि उनके गुरू जी उस डंडी की मार से नीचे गिरे पड़े हैं और कराहते हुए उठने की कोशिश कर रहे हैं।

डरते हुए और अपने मन में घबराते हुए सबने गधे की तरफ देखा। गधा उन सबमें गुरू जी का सबसे पुराना शिष्य था। पर वह क्या करे? पर उसने हालात की गम्भीरता को समझा और फिर अब चाहे जो हो सोच कर एक अच्छी मिसाल कायम करने का विचार किया।

वह यह सोच ही रहा था कि उसके ऊपर भी एक डंडी की मार पड़ी और वह ज़ोर से चिल्लाया — "मैं गधा।"

और उस आदमी ने गिना "दो।"

इस तरह से वह आदमी सबको डंडी मारता गया। पहले सब अपना अपना नाम बोलते गये और बाद में वह सबकी गिनती बोलता गया। इस तरह से उसने उनके छह आदनी गिन दिये।

छह आदमी गिन कर उसने कहा — "अब आप लोग अपनी अपनी ऑखें खोल सकते हैं। अब आप छह हैं। मैंने आपका खोया हुआ आदमी वापस ला दिया। अब आप पैंतालीस सोने के सिक्के मुझे दे दें।"

गुरू जी ने फिर अपने शिष्यों की गिनती की और जब उनको यह विश्वास हो गया कि उनके पॉचों शिष्य वहॉ मौजूद हैं तो उन्होंने

उस आदमी को खुशी से पैंतालीस सोने के सिक्के दे दिये। वह आदमी उन सिक्कों के ले कर वहाँ से मुस्कुराता हुआ चला गया।

गुरू जी ने अपने सब शिष्यों को गले से लगाया और अपनी खुशकिस्मती पर खुश होते हुए मन्दिर की तरफ चल दिये। पर लौटते समय वे अपने आश्रम के पुल पर से हो कर वापस आये नदी में से हो कर नहीं। वे फिर से ऐसा कोई खतरा मोल लेना नहीं चाहते थे।

2 दूसरी घटना – गुरू जी और घोड़ा

बहुत दिनों तक गुरू जी और उनके शिष्य अपने उस धोखेबाज नदी को पार करने की बातें करते रहे जिसमें उन्होंने कितनी सावधानी बर्तने के बाद भी एक शिष्य खोया।

फिर उन्होंने भगवान के गुण भी गाये जिसने उनके लिये अपना एक देवदूत भेजा जो उस शिष्य को केवल पैंतालीस सोने के सिक्के ले कर ही वापस ले आया।

इस बीच जिस बुढ़िया का वह आश्रम था उसने आश्रम की सफाई के लिये एक स्त्री को रख लिया था। हालाँकि वह स्त्री अन्धी थी पर उसके कान बहुत अच्छे थे और वह हर बात बड़े ध्यान से सुनती थी। वह हाजिरजवाब भी बहुत थी।

जब वह गुरू जी और उनके शिष्य अपनी पुरानी बातें कर रहे थे तो वह उनकी बातें बड़े ध्यान से सुन रही थी।

सुन कर वह बोली — "मेरे बच्चो तुमको तो बुरी तरह से धोखा दिया गया। तुमने तो वे पैंतालीस सोने के सिक्के बेकार में ही खोये। तुम्हारी मुश्किल कोई बहुत बड़ी मुश्किल नहीं थी।

मैं बताती हूँ तुमको कि तुम लोग जब इस तरह से बाहर जाया करो तो क्या किया करो। जब भी कभी तुम नदी पार करो और लोगों को गिनना चाहो तो एक बहुत ही आसान और सस्ता तरीका है।

वह यह कि जब भी तुम कहीं जाओ तो साथ में गाय का गोबर ले जाओ और जब तुम नदी पार करो तो उसमें थोड़ा सा पानी मिला कर उसको आटे की तरह से मल लो। फिर उसकी एक गोल शक्ल की रोटी सी बना लो और उसको नीचे रख कर उसके चारों तरफ बैठ जाओ।

उसके बाद सावधानीपूर्वक एक के बाद एक अपनी नाक उसमें रखो जिससे उसमें तुम्हारी नाक की एक साफ तस्वीर बन जाये।

उसके बाद तो फिर सब कुछ बिल्कुल आसान है। इस तरह से तुम यह पता कर सकोगे कि कितने लोग हैं और तुम अपने पैंतालीस सोने के सिक्के भी बचा पाओगे।"

गुरू जी तो यह सुन कर उछल पड़े — "यह तो बड़ा अच्छा विचार है। यह स्त्री तो बहुत होशियार है। खरदिमाग, अगली बार जब हम लोग जायें तो तुम गाय का गीला गोबर ले जाना मत भूलना।"

इस बीच कमजोर अपना ही कुछ प्लान बना रहा था। वह बोला — "गुरू जी, हम अपना एक घोड़ा क्यों नहीं खरीद लेते? क्या आपको याद है कि उस घोड़े पर बैठ कर वह आदमी कितनी आसानी से नदी पार कर गया था। हमारी ज़िन्दगी कितनी आसान होती अगर हमारे पास भी हमारा अपना एक घोड़ा होता तो।"

"हूँ। यह तो है।" गुरू जी ने उसकी बात पर सोचना शुरू किया तो उन्होंने उससे पूछा — "यह घोड़ा कितने का आता होगा कमजोर?"

गधा बोला — "सौ सोने के सिक्के से कम का तो क्या आता होगा गुरू जी। और इतने पैसे तो हमारे पास हैं नहीं।"

गुरू जी बोले — "तो अभी हम इस बात को यहीं छोड़ते हैं फिर देखेंगे।" और ज़िन्दगी ऐसे ही चलती रही।

एक दिन ऐसा हुआ कि आश्रम की गाय जिसको घास के मैदान में चरने के लिये भेजा गया था खो गयी। सो गुरू जी ने अपने शिष्यों को उसको ढूँढने के लिये भेजा।

गुरू जी की सेवा करने के लिये उन शिष्यों ने उसको सब जगह ढूँढा पर वह कहीं नहीं मिली। वे सब आपस में रुआँसे हो कर एक दूसरे से कहने लगे कि अब हम क्या करें। हम बिना गाय के गुरू जी के पास वापस कैसे जायें इससे तो गुरू जी गुस्सा हो जायेंगे।

खरदिमाग बोला — "सुनो भाइयो, मैं तो जब तक वह गाय नहीं मिल जाती आश्रम वापस नहीं जा रहा। मैं उसको ढूँढने के

लिये दूसरे शहर जा रहा हूँ और फिर तीसरे शहर भी अगर मुझे जाने की जरूरत पड़ी तो। अच्छा तो मैं चला।" और यह कह कर वह वहाँ से चल दिया।

उसके साथी लोग भौंचक्के से खड़े उसको जाते हुए देखते रह गये। गधा बोला चलो हम सब लोग आश्रम चलते हैं।

खरदिमाग तीन दिन तक वहाँ से गायब रहा। चौथे दिन वह बिना गाय लिये ही वापस लौट आया पर खुश था।

गुरू जी ने पूछा — "अरे खरदिमाग तुम इतना खुश क्यों हो? तुम आश्रम से चार दिन तक गायब रहे और तुम केवल हँसते हुए वापस लौट रहे हो। गाय कहाँ है?"

खरदिमाग बोला — "गुरू जी, खुशखबरी का ज़रा इन्तजार तो कीजिये। यह सच है कि मैं गाय नहीं ला पाया पर मैं कुछ और ज़्यादा काम की चीज़ पा गया। मुझे एक बहुत ही सस्ता घोड़ा मिल गया।"

इसको सुन कर तो गुरू जी के चेहरे से गुस्सा चला गया और कुछ मुस्कुराहट आ गयी। वह बोले — "क्या सचमुच? यह तो बड़ी अच्छी बात है। मुझे सब बातें खोल कर बताओ यह सब कैसे हुआ।"

खरदिमाग बोला — "मैं आश्रम की गाय ढूँढ रहा था। मैंने पास के कई शहर देखे – लोगों के बागीचे, शहरों के बागीचे, साधुओं के आश्रम। पर वह मुझे कहीं नहीं मिली।

मैंने उसको ढूँढने से कोई जगह नहीं छोड़ी पर जब वह नहीं मिली तो मैं कुछ दुखी हो गया सो मैं एक झील के किनारे चला गया।

वहाँ मैंने आपकी और भगवान की दया से चार घोड़ियाँ एक साथ घास चरती देखीं। उनमें से एक घोड़ी के पास घोड़ी के दो बड़े बड़े अंडे रखे थे। वे अंडे बहुत ही बड़े थे। उनमें से एक अंडा भी दोनों हाथों से नहीं उठाया जा सकता था।

तभी मैंने एक गाँव वाला वहाँ से जाता देखा। मैंने उससे पूछा — "जनाब, आपको पता है कि ये घोड़ियाँ किसकी हैं?"

वह बोला — "पास में ही एक अमीर सौदागर रहता है ये घोड़ियाँ उसी की हैं। ये बहुत ही अक्लमन्द हैं। इतनी अक्लमन्द कि तुम इनको जो कुछ भी सिखाना चाहोगे ये बहुत जल्दी सीख जायेंगी।"

तो मैंने उसको बीच में ही टोका — "क्या वह मुझे एक अंडा बेचेंगे?"

उसने कहा — "मुझे यकीन है कि वह तुमको यह अंडा जरूर बेच देंगे। और मुझे यह भी लगता है कि वह इस अंडे का तुमसे पाँच सोने के सिक्के से ज़्यादा नहीं लेंगे। क्या तुमको नहीं लगता कि एक बहुत ही बढ़िया घोड़े को खरीदने के लिये यह पैसा बहुत ही ठीक है?"

यह सुन कर गुरू जी ने खुशी से ताली बजायी और बोले यह तो वाकई तुमने बहुत ही बढ़िया काम किया। फिर वह अपने दूसरे शिष्यों की तरफ देखते हुए बोले "तुम्हारा क्या विचार है?"

गधा बोला — "अगर उसकी कीमत पाँच सोने के सिक्के ही है तो हम कोई ज़्यादा नुकसान में तो हैं नहीं।"

दूसरे भी चिल्लाये — "यह तो बहुत ही अच्छी बात है बल्कि यह तो हम लोगों के फायदे में ही रहेगा।"

गुरू जी ने कहा — "खरदिमाग और गधे, मैं चाहता हूँ कि तुम दोनों जाओ और वहाँ से घोड़ी का सबसे अच्छा अंडा खरीद कर ले आओ। लो ये पाँच सोने के सिक्के ले जाओ और कुछ पैसे अपनी यात्रा के लिये ले जाओ। हम तुम्हारा इन्तजार करेंगे।"

फिर गुरू जी ने दोनों के सिरों पर आशीर्वाद का हाथ रखा और वे दोनों गुरू जी को सिर झुका कर चले गये।

उनके जाने के कुछ समय बाद बेवकूफ[51] कुछ सोचता हुआ गुरू जी से बोला — "गुरू जी, यह तो बहुत ही अच्छी बात है कि हम को इतनी कम कीमत में घोड़े का इतना अच्छा अंडा मिल गया। पर गुरू जी मुझे माफ करें, मेरी एक बात समझ में नहीं आ रही है। मेरा एक सवाल है कि अंडे में से एक घोड़ा कैसे निकलता है?

[51] Fool

गॉव में मैंने अंडे में से मुर्गी के बच्चे तो निकलते देखे हैं। वहॉ मैंने मुर्गी को पॉच छह अंडे भी देते देखे हैं। वे फिर उन पर तब तक बैठती हैं जब तक कि उनमें से बच्चे नहीं निकल आते।

पर अब जैसा कि खरदिमाग बता रहा था कि वह अंडा इतना बड़ा था कि वह दो हाथों से भी नहीं उठाया जा सकता था। तो हम अगर घोड़े के इतने बड़े अंडे पर पचास मुर्गियॉ भी बिठायें तो वे काफी नहीं होंगी। तो गुरू जी हम उस अंडे में से घोड़े को बाहर निकालेंगे कैसे?"

अब यह तो गुरू जी ने सोचा ही नहीं था कि यह सब कैसे होगा। यह सुन कर तो वह गहरे सोच में पड़ गये।

वह बोले — "बेवकूफ यह तो वाकई कुछ गड़बड़ है। मुझे तुम्हारे सवाल के जवाब देने में कुछ समय लगेगा।"

यह कह कर गुरू जी फिर से पालथी मार कर बैठ गये और ध्यान करने लगे। तीन दिन के बाद गुरू जी अपने ध्यान से बाहर निकले और अपने शिष्यों को बुलाया और उनसे बोले।

"प्यारे शिष्यो, मैंने इस बेवकूफ के सवाल पर सोच विचार किया है। इसका जवाब बहुत ही साफ है।

हममें से एक उस अंडे पर बैठेगा क्योंकि इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं है। अगर हमको एक अक्लमन्द घोड़ा चाहिये तो एक अक्लमन्द आदमी को ही उसके ऊपर बैठना पड़ेगा।

तुम सब लोग बहुत अक्लमन्द हो। तो अब मुझे बताओ कि तुममें से कौन उस अंडे पर बैठेगा?" कह कर उन्होंने अपने सभी शिष्यों की तरफ देखा तो उनकी निगाह मूर्ख[52] पर जा कर ठहर गयी।

मूर्ख ने देखा कि गुरू जी उसी की तरफ देख रहे हैं तो वह हकलाते हुए बोला — "गुरू जी, मैं सारा दिन उस घोड़े के अंडे पर कैसे बैठ सकता हूँ?

मुझे तो नदी से पानी लाना होता है आग जलाने के लिये लकड़ी काट कर रसोई में रखनी होती है। मुझे तो बहुत काम करने होते हैं। मुझे माफ करें पर मैं आपका हुक्म नहीं मान सकता।"

इसके बाद बेवकूफ[53] बोला — "मैं भी यह काम नहीं कर सकता, गुरू जी। मैं तो रात दिन रसोई में ही काम में लगा रहता हूँ। छह आदमी तो हम हैं और फिर नौकर। रसोई में बहुत काम हो जाता है।

मुझे कितने सारी तो सब्जियाँ काटनी पड़ती हैं और फिर कितनी सारी चीज़ें बनानी पड़ती हैं। और गुरू जी आपको तो रोटी पसन्द है सो मुझे वह भी बनानी पड़ती है। मुझे तो रसोई में ही सारा दिन लग जाता है। मेरे ख्याल से मैं तो अंडे के ऊपर बिल्कुल ही नहीं बैठ सकता।"

[52] Fool

[53] Idiot

कमजोर[54] बोला — "मैं भी नहीं बैठ सकता गुरू जी। मुझे तो सबसे पहले जागना पड़ता है। पहले मैं नदी जा कर अपने दाँत साफ करता हूँ फिर नहाता धोता हूँ।

आश्रम में आने से पहले मैं ऐसा नहीं करता था सो यह सब अब करने में मुझे बहुत मुश्किल होती है। मुझे तो अपने कपड़े भी अपने आप ही धोने होते हैं।

मुझे माला बनाने के लिये फूल भी चुन कर लाने होते हैं। फिर मैं सारे लैम्प साफ करता हूँ। मुझे तो इतने सारे काम हैं कि मैं तो उनको बताता बताता भी थक जाऊँ। मैं अंडे पर नहीं बैठ सकता गुरू जी मेरे लिये तो यह बिल्कुल ही नामुमकिन है।"

गुरू जी बोले — "तुम ठीक कह रहे हो। यह तो बड़ी मुश्किल की बात है। गधा और खरदिमाग को भी बहुत काम हैं। केवल एक ही आदमी है जिसको कोई काम नहीं है और वह है मैं।

असल में एक अक्लमन्द घोड़े को पैदा करने के लिये कोई बहुत ही अक्लमन्द आदमी ही उस अंडे पर बैठना चाहिये। ठीक है, अगर और किसी के पास समय नहीं है तो फिर मैं ही बैठता हूँ उसके ऊपर। मैं उसको अपने सिर से ढक कर उसको अपनी छाती से लगा कर बैठ जाऊँगा और एक चादर[55] से ढक लूँगा।

---

[54] Weakling

[55] Cloth sheet

मैं उसकी बहुत अच्छे से और प्यार से देखभाल करूँगा और अगर भगवान ने चाहा तो उससे एक बहुत ही अक्लमन्द घोड़ा पैदा होगा। यह काम थोड़ा मुश्किल तो है पर अगर हो गया तो बहुत अच्छा रहेगा और मैं इसको जरूर करूँगा।"



इस बीच खरदिमाग और गधा दोनों ढाई घंटा चल कर झील के पास आये। वे चार घोड़े अभी भी वहाँ घास चर रहे थे और उनके आस पास बहुत सारे बड़े बड़े सफेद काशीफल[56] लगे हुए थे।

जैसे ही खरदिमाग ने उनको देखा तो वह चिल्लाया — "देखो वे कितने सारे घोड़े के अंडे। और वे कितने बड़े भी हैं। हमारे गुरू जी तो उनको देख कर बहुत खुश हो जायेंगे। चलो जल्दी से चल कर उस आदमी से मिलते हैं जिसके ये घोड़े हैं।"

और वे तुरन्त ही उस आदमी से मिलने चले गये जिसके वे घोड़े थे।

दोनों साधु भागते भागते उस सौदागर के घर के दरवाजे के अन्दर घुसे और उस सौदागर के पास आये। वह अमीर सौदागर जिसके वे घोड़े थे उस समय अपने बागीचे में बैठा हुआ था।

गधा हाँफते हाँफते बोला — "जनाब, हम कुतरालम[57] से आये हैं और हम साधु हैं। हम घोड़े का एक अंडा खरीदना चाहते हैं।

[56] White pumpkin – see its picture above

[57] Kutaralam – name of the place in Tamil Nadu State of India where Guru Ji lived.

आपके पास तो बहुत अच्छे घोड़े है। हम लोग बहुत गरीब हैं आप हमको घोड़े का एक अंडा पाँच सोने के सिक्कों में दे दीजिये।"

यह सुन कर उस सौदागर की आँखों में चमक आ गयी। वह बुदबुदाया — "ये लोग भी क्या बेवकूफ लोग हैं। ये पाँच सोने के सिक्कों मे केवल एक काशीफल खरीदना चाहते हैं?

देखता हूँ कि मेरे उन काशीफलों के जिनको ये घोड़े के अंडे समझ रहे हैं कितने पैसे मिलते हैं। और फिर ये काशीफल तो बहुत ही कम देखने में आते हैं और बहुत ही खास हैं मैं उनको इतना भी सस्ता नहीं बेचूँगा।"

सौदागर को सोचते देख कर गधे ने उसकी तरफ अपनी उँगली की और बोला — "और हाँ देखना, हमको धोखा देने की कोशिश नहीं करना। हम लोग साधु हैं और अक्लमन्द हैं। हमने इनकी कीमत पहले से ही शहर के किसानों से पता कर ली है।

उन्होंने हमको बताया कि पाँच सोने के सिक्के तो इनकी बहुत ही अच्छी कीमत है।"

वह सौदागर बोला — "तुम लोग बहुत अच्छे स्वभाव के साधु लगते हो और साथ में अक्लमन्द भी। मैं तुमको घोड़े का अंडा पाँच सोने के सिक्कों में दे दूँगा पर एक शर्त है।"

गधा और खरदिमाग एक साथ बोले — "वह क्या?"

सौदागर बोला — "वह यह कि तुम किसी और को यह नहीं बताओगे कि तुमने घोड़े का अंडा इतना सस्ता खरीदा है। लाओ

पाँच सोने के सिक्के मुझे दो और जो अंडा तुमको अपने आश्रम के लिये सबसे अच्छा और सबसे बड़ा लगे वह ले जाओ।"

खरदिमाग ने तुरन्त ही पाँच सोने के सिक्के उस सौदागर की गोद में डाले और गधे को साथ ले कर नदी के किनारे भाग गया।

वहाँ जा कर उन्होंने इधर उधर देख कर एक सबसे बड़ा काशीफल उठा लिया। कामयाबी की खुशी से पागल से होते हुए वे उस काशीफल को ले कर तुरन्त ही आश्रम की तरफ दौड़ चले। रास्ते भर गधा गुरू जी की जय बोलता चला गया।

"हमारे गुरू जी कितने पढ़े लिखे हैं। उनके पास कितनी ताकतें हैं। मैंने सुना है कि जिनके पास आध्यात्मिक ताकत होती है उनके लिये नामुमकिन काम भी मुमकिन हो जाते हैं। और अब तो हम यह अपनी आँखों से ही देख रहे हैं।

मैंने पहले कभी अंडे से घोड़ा पैदा होते नहीं सुना था और अब हमारे गुरू जी की ताकत से यह भी सच हो जायेगा। और यह केवल नामुमकिन से मुमकिन ही नहीं बल्कि यह सब इतना सस्ता हो रहा है – केवल पाँच सोने के सिक्कों में। यह तो जादू है जादू।"

खरदिमाग बोला — "तुम किसी काम को उसके नतीजे से ही माप सकते हो। हमारे गुरू जी के बड़प्पन की वजह से ही भगवान ने यह घोड़े का अंडा हमें भेजा है। हमारे गुरू जी महान हैं और अगर हम उनमें अपना विश्वास रखेंगे तो हम भी महान हो जायेंगे।"

तभी वे एक तंग रास्ते पर आ गये सो खरदिमाग ने जो उस अंडे को अपने सिर पर लिये जा रहा था बात करना बन्द कर दिया ताकि ध्यान बॅटने से उसका वह अंडा कहीं गिर न जाये।

हालॉकि वह बहुत ही सॅभाल कर चल रहा था पर फिर भी रास्ते में पड़ी एक डंडी से उसको ठोकर लग ही गयी और वह उस अंडे के साथ सड़क पर चारों खाने चित्त गिर पड़ा।

गधे ने उस अंडे को पकड़ने की कोशिश भी की पर वह उसको पकड़ न सका और वह अंडा धम्म से जा कर एक झाड़ी में गिर गया।

इत्तफाक से एक खरगोश उस झाड़ी में कुछ पत्ते खा रहा था सो जैसे ही वह अंडा उस झाड़ी में गिरा वह खरगोश डर गया और वहॉ से भाग निकला।

खरदिमाग ने जब उसे भागते देखा तो वह भी चिल्लाया — "गधे जल्दी करो, उसको पकड़ो, वह अपना घोड़ा है। वह भागा जा रहा है।"

सो दोनों उस खरगोश के पीछे भाग लिये। वे भागते रहे भागते रहे – पहाड़ी के ऊपर, पहाड़ी के नीचे, घंटों तक। पर खरगोश तो बहुत तेज़ भाग रहा था सो वे उसको पकड़ ही नहीं सके।

गधा बहुत थक गया था सो पहले तो वह एक चट्टान पर गिर गया और फिर एक कॉटों वाली झाड़ी में गिर गया। इससे उसकी बॉह में थोड़ी खरोंचें आ गयीं और सिर में एक गूमड़ा[58] पड़ गया।

वह दुखी सा खरदिमाग की तरफ देखता रहा फिर बोला — "मैं तो थक गया हूँ। मेरा बदन भी दर्द कर रहा है। और अब तो मुझे भूख भी लग आयी है।

हमने तो अपने गुरू जी का घोड़ा भी खो दिया और साथ में उनका पैसा भी। अब हम क्या करें। अब हमको आश्रम वापस चलना चाहिये।"

इस तरह से पैसा और घोड़ा दोनों खो कर वे दोनों भूखे साधु आश्रम की तरफ चल दिये।

जब वे गुरू जी के घर के पास आये तो उनको चिन्ता होने लगी कि अब गुरू जी उनकी बहुत पिटायी करेंगे। चिन्ता की वजह से वे अपनी छाती और पेट दोनों पीटने लगे। वे ऐसे रोने और चिल्लाने लगे जैसे कोई भेड़िया पूनम की रात को रोता और चिल्लाता है।

रोते रोते गुरू जी का नाम लेते हुए वे आश्रम में घुसे। अपना नाम सुन कर गुरू जी उनको बाहर तक लेने आये तो वे भूत की तरह से सफेद पड़ गये और उनके पैरों पर गिर कर बेहोश से हो गये।

---

[58] Translated for the word "Bump"

एक नौकर तुरन्त ही रसोई में भागा गया और एक कटोरा ठंडा पानी ले कर आया। उसने वह पानी उन दोनों को होश में लाने के लिये उनके चेहरों पर छिड़का। गधा पहले होश में आया।

वह बोला — "ओह वह घोड़ा कितना तेज़ भाग रहा था। मैंने इतनी तेज़ भागने वाला घोड़ा पहले कभी नहीं देखा। वह दो हाथ लम्बा था और खरगोश जैसा दिखायी देता था। उसके चार टाँगें थीं और दो बड़े बड़े कान थे।

वह बहुत छोटा था पर इतनी तेज़ भाग रहा था कि मुझे नहीं लगता कि वह कोई मामूली घोड़ा था। हम दोनों में से कोई भी उस घोड़े को नहीं पकड़ सका। और मैंने उसको पकड़ने की कोशिश भी की तो देखिये कि मेरा क्या हाल हुआ। इस सबके बाद हमने आश्रम लौटने का विचार कर लिया।"

गुरू जी ने उनकी कहानी सुनी, उस पर कुछ सोचा और फिर उन पर अपनी प्यार भरी नजर डाली और बोले — "तुमने पाँच सोने के सिक्के खो दिये यह कोई अच्छी बात नहीं है। साथ में घोड़ा भी चला गया। यह भी कोई अच्छी बात नहीं।

पर सच पूछो तो यह हमारे लिये अच्छी ही बात है। क्योंकि वह घोड़ा अगर इतनी छोटी उम्र में इतना तेज़ भाग रहा था तो फिर जब वह बड़ा हो जाता तब क्या करता।

मैं तो बूढ़ा हूँ। मैं ऐसे घोड़े पर यात्रा नहीं कर सकता। मुझे तो यह भगवान की बड़ी मेहरबानी ही लग रही है कि हमको वह

जानवर नहीं मिला नहीं तो उसने तो हमारे लिये कोई बहुत बड़ी मुश्किल ही खड़ी कर दी होती।

चलो इस बात को अब तुम लोग भूल जाओ। अच्छा हुआ कि हम पर केवल पॉच सोने के सिक्के खो कर ही गुजरी। तुम उसकी चिन्ता न करो।"

इस तरह से घोड़े का यह मामला खत्म हुआ और सब आराम करने चले गये।

3 तीसरी घटना – गुरू जी और बैल

कुछ समय बाद गुरू जी ने प्लान बनाया कि वे अपने शिष्यों के साथ एक लम्बी तीर्थ यात्रा पर जायेंगे। जैसे ही उनके शिष्यों ने यह सुना तो उनको तो चिन्ता हो गयी।

गधा बोला — "गुरू जी आप तो बूढ़े और कमजोर हैं। यह तो हमारे लिये बहुत ही शर्म की बात होगी अगर हम आपको इतनी दूर पैदल ले कर जायें। कम से कम हमको एक बैल किराये पर ले लेना चाहिये।"

गुरू जी बोले — "जैसा तुम चाहो। मेरी ज़िन्दगी तो अब तुम्हारे हाथों में है।"

सो गुरू जी को राजी होते देख कर वे एक बैल किराये पर लाने के लिये चल दिये।

उनकी किस्मत से पास के एक गॉव में एक किसान रहता था उसके पास एक बैल था जो खेती में इस्तेमाल करने लायक तो नहीं था पर वह यकीनन उनके बूढ़े गुरू जी को तीर्थ यात्रा पर ले जाने लायक ठीक था।

उन्होंने उस बैल को उस किसान से तीन सोने के सिक्के रोज पर किराये पर ले लिया और बड़ी शान से उस आश्रम ले आये।

हालॉकि उस गमी के मौसम में कुछ ज़्यादा ही गर्म हो रहा था फिर भी उन सबने अपना अपना सामान बॉध लिया। खरदिमाग को अपने आश्रम की नौकरानी की सलाह याद थी सो उसने गाय का ताजा गोबर भी अपने साथ रख लिया और फिर वे अपनी यात्रा पर चल दिये।

हालॉकि वे सब सुबह को बहुत जल्दी ही निकल पड़े थे पर फिर भी कुछ देर बाद ही बहुत गर्म हो गया। और कुछ देर बाद तो वे फिर एक ऐसी जगह आ पहुॅचे जहॉ घास भी दिखायी नहीं देती थी।

गर्म जमीन और पानी की कमी ने उन सबकी हालत बहुत ही खराब कर दी थी। बेचारे बूढ़े गुरू जी तो भूख प्यास से बेहोश ही हो गये और बैल से नीचे गिर पड़े।

उनके शिष्य यह देख कर और भी परेशान हो गये। उन्होंने गुरू जी को उठा लिया और कोई ऐसी जगह देखने लगे जहॉ वह

उनको आराम से लिटा सकें पर कहीं कुछ दिखायी ही नहीं दे रहा था।

आखिर खरदिमाग बोला — "हमारे पास और कोई रास्ता नहीं है सिवाय इसके कि हम इनको बैल की छॉह में लिटा दें। यहॉ तो हम इनके लिये केवल यही इन्तजाम कर सकते हैं।"

कमजोर ने अपनी चादर निकाली और उसको बैल के नीचे बिछा दी ताकि वे गुरू जी को उस पर लिटा सकें। सबने गुरू जी को बैल के नीचे उस चादर के ऊपर लिटा दिया। मूर्ख और नौकर ने उनको अपने अपने गमछों[59] से हवा करनी शुरू कर दी। धीरे धीरे गुरू जी होश में आ गये।

जैसे जैसे दिन ढलता गया गर्मी कम होती गयी और कुछ ठंडी हवा चलती गयी। शिष्यों ने गुरू जी को एक बार और बैल के नीचे आराम दिलवाया और फिर पास के गॉव में आराम कराने के लिये ले गये। इत्तफाक से बैल का मालिक भी इसी गॉव में ही रहता था।

अगली सुबह उन्होंने वह बैल उस बैल के मालिक को वापस कर दिया और उसको तीन सोने के सिक्के भी दे दिये।

किसान उन तीन सोने के सिक्कों को देख कर बोला — "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई कि तुम मुझे इतना थोड़ा सा पैसा दो। यह पैसे तो काफी नहीं हैं।"

[59] Gamachhaa is a 1 1/2 - 2 yards long and 2 feet broad cloth which people just keep on to their shoulder to do many miscellaneous jobs. Its cloth can be thick or thin.

गधा बोला — "पर जनाब आप ही ने तो कहा था कि इस बैल के हमको तीन सोने के सिक्के रोज के देने होंगे। अब अपना मन बदलना ठीक नहीं है।"

किसान बोला — "तीन सोने के सिक्के तो इस बैल पर सवार होने के लिये और इस पर यात्रा करने के लिये थे। दोपहर को जब तुम्हारे गुरू जी ने इसके नीचे आराम किया वह इन तीन सोने के सिक्कों में शामिल नहीं था इसलिये तुमको मुझे कुछ सोने के सिक्के और देने होंगे।"

मूर्ख बीच में ही बोला — "यह तो बेकार की बात है। हमने तुम्हारे बैल को एक दिन के लिये किराये पर लिया था। हम उसकी छाया के पैसे तुमको अलग से क्यों दें।"

अचानक किसान गुस्सा हो गया और वह और शिष्य दोनों में गर्मागर्म बहस छिड़ गयी। बहस सुन कर वहाँ कुछ लोग इकट्ठा हो गये।

कुछ देर बाद वहाँ एक बड़ी उम्र का आदमी आया और उसने पुछा — "क्या मामला है? तुम लोग आपस में क्यों लड़ रहे हो? तुम लोग अगर मुझे शान्ति से अपनी बात बताओ तो मैं तुम्हारा मामला सिलटाने की कोशिश करता हूँ।"

खरदिमाग यह सुन कर कुछ शान्त हुआ और उसने उस आदमी को अपना मामला बताया। उस आदमी ने भी उसकी कहानी बहुत ध्यान से सुनी।

उनकी कहानी सुनने के बाद वह आदमी बोला — "तुम्हारा मामला सिलटाने से पहले मैं तुम सबको अपनी ज़िन्दगी की एक घटना बताना चाहूँगा। उसके बाद उस आदमी ने अपनी कहानी सुनानी शुरू की —

"यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार मैं भी तुम दोनों नौजवानों की तरह से यात्रा कर रहा था। मेरे पास अपना खाना था और मैं बस उसको बैठ कर खाने के लिये और थोड़ा आराम करने के लिये जगह ढूँढ रहा था।

मुझे सड़क के किनारे एक होटल दिखायी दे गया तो मैं उस होटल के मालिक के पास पहुँचा और उससे पूछा — "जनाब क्या मैं आपके होटल में बैठ कर अपना खाना खा सकता हूँ और थोड़ा सा आराम कर सकता हूँ?"

वह बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं। आप आराम से बैठें। पर ध्यान रहे कि अगर आप हमारे होटल से कुछ खरीदेंगे तब आपको उसकी कीमत चुकानी होगी।"

मैंने हाँ में सिर हिलाया, हाथ धोये और अपना खाना खाने बैठ गया। मैं अपना खाना खा रहा था कि हवा वहाँ के ताजा बने हुए पकौड़ों की खुशबू उड़ा कर ले आयी।

उस होटल का एक रसोइया पकौड़े बना रहा था। उसके पकौड़े की खुशबू बहुत अच्छी आ रही थी। मैं तो बहुत गरीब था सो मैं तो

उनको खरीद नहीं सकता था सो मैं वहीं बैठा रहा और उनकी खुशबू सूँघता रहा और अपने चावल खाता रहा।

जब मैंने अपना खाना खत्म कर लिया तो मैं उस होटल के मालिक को वहाँ खाना खाने देने के लिये धन्यवाद दिया तो वह बोला — "पकौड़ों के पैसे देना मत भूलना।"

मैंने आश्चर्य से पूछा — "पकौड़े? पर पकौड़े तो मैंने खरीदे ही नहीं।"

"देखो मैं तुमको देख रहा था। मैंने देखा कि तुम अपने वह पुराने चावल केवल हमारे पकौड़ों की खुशबू सूँघ कर ही खा सके।"

मेरी तो समझ में ही नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूँ क्योंकि मैंने तो पकौड़े खरीदे ही नहीं थे। तभी होटल में काम कर रहे लोगों में से एक आदमी आया जो अपने मालिक की तरफदारी में बोलने आया था।

वह भी यही बोला — "हमारे होटल में बने पकौड़ों की खुशबू की वजह से ही तुम अपना चावल खा सके। इसके लिये तुम्हें कुछ तो फीस देनी पड़ेगी।

लोग जब हमारा पकौड़ा खाते हैं तो उसकी कीमत अक्सर सिक्कों में देते हैं। क्योंकि तुमने केवल उनको सूँघा है तो तुम उसकी कीमत केवल हमको पैसे सुँघा कर ही दे दो।"

मुझे यह सब बड़ा अजीब सा लग रहा था सो मैंने पूछा — "यह मैं कैसे करूँ?"

वह बोला — "तुम मुझे अपना बटुआ दो।"

मैंने उसको अपना बटुआ दिया तो उसने उसको अपनी नाक से लगा कर सूँघा।

उसने उसको कुछ देर तक सूँघा फिर रुक कर बोला — "तुम्हारे इस बटुए में पकौड़ों की खुशबू के बदले में लिये काफी कुछ देने के लिये है। मैं अपनी नाक खोना नहीं चाहता।"

फिर वह आदमी और होटल का मालिक दोनों होटल में अन्दर गये और उन्होंने देखा कि उन पकौड़ों की खुशबू के पैसे दे दिये गये हैं। उसके बाद ही मुझे वहाँ से जाने की इजाज़त मिल सकी। इस तरह से मुझे पकौड़ों को केवल सूँघने के ही पैसे देने पड़े।

सो जैसे मैंने पकौड़ों के सूँघने के लिये पैसे दिये ऐसे ही तुम भी बैल की छाया को इस्तेमाल करने के पैसे दे सकते हो। तुम आवाज से दे सकते हो। बस अपने बटुए को बैल के कान के पास थोड़ी देर के लिये हिलाओ और तुम्हारा उधार चुकता हो जायेगा।"

इस बड़े आदमी की बात सुन कर खरदिमाग को बहुत आश्चर्य हुआ और वह खुश भी बहुत हुआ। उसने तुरन्त अपना बटुआ निकाला और बैल के कान के पास बजा दिया।

वह किसान बोला — "बस बस, काफी है। बैल ने तुम्हारे सिक्कों की आवाज सुन ली है और तुमने बैल की छाया को इस्तेमाल करने के लिये पैसा दे दिया है।"

खरदिमाग और गधा दोनों ने ही उस किसान को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और अपने गुरू जी की तरफ चले। सारी शाम वे लोग अपनी इसी घटना के बारे में बात करते रहे।

4 चौथी घटना – गुरू जी और घोड़ा

अगले दिन गुरू जी और उनके सारे शिष्य काफी जल्दी उठ गये क्योंकि वे उतनी गर्मी में यात्रा करना नहीं चाहते थे।

कुछ घंटों तक चलने के बाद वे एक बहुत ही छायादार बागीचे में आ पहुँचे। उन सबने वहीं कुछ समय आराम करने का निश्चय किया ताकि वे लोग दोपहर की धूप की गर्मी से बच सकें।

इतना चलने के बाद भी मूर्ख को ज़्यादा थकान महसूस नहीं हो रही थी सो वह बागीचा देखने के लिये निकल गया।

चलते चलते उसको एक झील मिल गयी जो ताजा ठंडे पानी से ऊपर तक भरी हुई थी। बस उस पानी को देख कर उसको बहुत अच्छा लगा और उसमें उसकी नहाने की इच्छा हो आयी।

उसने कपड़े उतारे और वह उसमें नहाने के लिये घुस गया। पानी में घुसते ही उसकी ठंडक से वह तरोताजा महसूस करने लगा।

उस झील के किनारे पर ही उस गॉव के देवता ईयानार[60] का एक मन्दिर था। वहॉ के यह देवता भूत प्रेतों को काबू में रखने में भगवान शिव की सहायता किया करते थे सो इसके लिये यह बहुत जरूरी था कि उनको सुन्दर सुन्दर चीज़ों की भेंट चढ़ायी जाये।

दूसरे यह कि उस गॉव के लोगों में यह रिवाज भी था कि वे मिट्टी के घोड़े और हाथी बना बना कर चहारदीवारी की दीवार सजाया करते थे।

जब वह मूर्ख झील में आनन्द कर रहा था तो उसको झील में ऐसी ही एक पत्थर के घोड़े की परछाईं दिखायी दे गयी। वह उसको देख कर डर गया।

हालॉकि वह मूर्ति तो बिना हिले डुले ही खड़ी थी पर पानी में उसकी परछाईं हिल रही थी। मूर्ख ने बिल्कुल बिना हिले डुले खड़े रहने की कोशिश भी की पर फिर भी घोड़े की परछाईं हिलती रही।

उसने उस झील में से बाहर निकलने की कोशिश की तो वह तो और भी ज़्यादा हिलने लगी। उस परछाईं ने शोर तो नहीं मचाया पर वह हिल बहुत रही थी।

डर के मारे वह मूर्ख बहुत सावधानी से झील से बाहर निकला और अपने गुरू जी की तरफ भागा। जब वह अपने ठहरने की जगह आया तो उसके पैर कॉप रहे थे और उसकी सॉस फूल रही थी।

---

[60] Iyyanar – a god of Tamilians to help Shiv Ji to maintain control on ghosts and spirits.

गुरू जी ने देखा कि उनका शिष्य तो कुछ परेशान है तो वह तुरन्त ही अपनी जगह से उठे और अपने शिष्य की तरफ दौड़े।

उन्होंने उसके कन्धे पकड़े और बोले — "बच्चे, क्या हुआ? तुम तो इतने पीले दिखायी दे रहे हो जैसे तुमने कोई भूत देख लिया हो। मुझे बताओ तो हुआ क्या?"

हॉफते हॉफते मूर्ख बोला — "गुरू जी गुरू जी, पास की एक झील में एक बहुत ही भयानक घोड़ा है। मैं उस झील में चुपचाप नहा रहा था तो वह तो इतना परेशान हो गया जैसे मुझे खा ही जायेगा।

वह तो आपकी मेहरबानी से मैं वहॉ से निकलने में कामयाब हो गया वरना वह तो मेरी आज जान ही ले लेता। यहॉ पर नहाने के लिये वही एक झील है और उसमें यह डरावना जानवर मौजूद है। अब हम क्या करें?"

यह सुन कर गुरू जी कुछ ज़रा ज़्यादा ही परेशान हो गये। उन्होंने अपने दूसरे शिष्यों की तरफ देखा और बोले — "ऐसे हालात से निपटने के लिये ही तो मैंने तुम लोगों को ठीक से पढ़ाया लिखाया है। तो अब तुम लोग बताओ कि हम लोगों को क्या करना चाहिये।"

खरदिमाग तुरन्त बोला — "यह तो बहुत ही अच्छी बात है गुरू जी। हम लोग तो कितने दिनों से आपको एक घोड़ा देने वाले थे। आज हमको मौका मिला है।

घोड़ा तो बस तभी मुश्किल पैदा करता है जब वह डर जाता है। क्यों न हम उसको पकी हुई दाल खिला कर उससे दोस्ती कर लें और फिर उसको आश्रम ले चलें।"

गुरू जी बोले — "यह तो बड़ा अच्छा विचार है। चलो हम तुम्हारे ही इस विचार को मानते हैं। पर देखो मैं नहीं चाहता कि तुम लोगों में से कोई भी उस पानी में घुसे क्योंकि वह तुमको काट भी सकता है।

हम ऐसा करेंगे कि दाल को उसको पानी में घुस कर खिलाने की बजाय हम वह दाल किनारे पर रख देंगे और फिर देखेंगे कि हम उस घोड़े को उधर की तरफ ला सकते हैं या नहीं।"

गधा बोला — "गुरू जी, हम कुछ ऐसा क्यों नहीं करते जो आसान भी हो और जल्दी भी काम करे। मुझे यकीन है कि वह घोड़ा जरूर ही भूखा होगा। इसलिये क्यों न हम एक घास का गट्ठर पानी के ऊपर पकड़ कर रखें।

जैसे ही वह घास का गट्ठर देखेगा वह उसकी तरफ तुरन्त ही आने की कोशिश करेगा। और जैसे ही वह उधर आयेगा हम उस को पकड़ लेंगे।"

नौकर बीच में ही बोला — "यह भी कुछ ज़रा ज़्यादा ही है। हमको बस इतना करना है कि दूसरे घोड़े की तरह आवाज निकालनी है। अगर हम ठीक से दूसरे घोड़े की आवाज निकाल सके तो वह

समझ जायेगा कि कोई दूसरा घोड़ा बोल रहा है और वह पानी से बाहर आ जायेगा।

अगर यह तरकीब काम नहीं करेगी तो फिर हम एक भैंस को उस झील में घुसा देंगे। घोड़ा उसको देख कर परेशान हो जायेगा और मुझे पूरा यकीन है कि उसको देख कर वह पानी में से बाहर भी जरूर ही निकल आयेगा। दोनों हाल में हम उसको पकड़ने में कामयाब रहेंगे।"

मूर्ख जो अभी तक इन सब हालात पर विचार कर रहा था बोला — "ये सब विचार हैं तो बहुत अच्छे पर ये हालातों को ध्यान में नहीं रखते। सोचो ज़रा। घोड़ा झील में है तो क्यों न हम एक मछली पकड़ने वाला कॉटा बनायें और उसको उसी तरह से पकड़ लें जैसे हम मछली पकड़ते हैं।"

गुरू जी खुशी से बोले — "मूर्ख ने यह तो बहुत ही अच्छा सोचा। मूर्ख, तुम अब इतने मूर्ख भी नहीं लगते जितना कि हम तुम्हें सोचते थे।"

सारे शिष्य चिल्लाये — "हॉ यह बहुत अच्छा विचार है। चलो देखते हैं कि इस तरह से हम घोड़ा पकड़ पाते हैं या नहीं।"

सो सारे शिष्य उत्सुकता से चारों तरफ दौड़े। कुछ पल में ही एक शिष्य चाकू ले आया। दूसरा शिष्य पके हुए चावल का एक पैकेट ले आया। तीसरा शिष्य गुरू जी की चलने वाली छड़ी ले आया।

खरदिमाग ने अपने सिर से अपनी पगड़ी उतारी और सबसे उनकी लायी चीज़ें इकट्ठी कीं। वह सोच रहा था कि गुरू जी की चलने वाली छड़ी को वह मछली पकड़ने वाली डंडी की तरह इस्तेमाल करेगा।

पगड़ी के कपड़े को वह उस डंडी में बाध कर नीचे लटकायेगा। चाकू को वह मछली पकड़ने वाले कॉटे की तरह से इस्तेमाल करेगा और पके हुए चावल को वह मछली पकड़ने वाले चारे की तरह इस्तेमाल करेगा।

जल्दी से उसने उन सब चीज़ों से मछली पकड़ने वाला कॉटा बनाया और घोड़े को पकड़ने के लिये उसे झील के पानी में डाल दिया।

उस कॉटे के बोझ और साइज़ से उस पानी में बहुत सारी लहरें पैदा हो गयीं। इससे उस घोड़े की परछाईं बहुत ज़ोर ज़ोर से हिलने लगी। वह घोड़ा तो इस सबसे बहुत नाराज दिखायी देने लगा। उसकी टॉगें झील में चारों तरफ जा रहीं थीं। उसका सिर भी बहुत गुस्से में इधर उधर हिलता दिखायी दे रहा था।

यह सब देख कर सारे शिष्य डर गये और वे वहीं झील के किनारे पर गिर गये। केवल खरदिमाग ही नहीं गिरा। वह मछली पकड़ने वाली डंडी मजबूती से पकड़े रहा जब तक सारी लहरें शान्त नहीं हो गयीं।

उसने अपने गुरू भाइयों से कहा — "डरो नहीं। घोड़ा अब शान्त हो गया है। अगर हम थोड़ा चुपचाप रहें और धीरज रखें तो मुझे यकीन है कि हम उसको पकड़ने में कामयाब हो जायेंगे। सो थोड़ा इन्तजार करो।"

इस बीच में पके हुए चावल देख कर एक मछली उस चारे की तरफ आ गयी और उस चावल को खाने लगी। इससे वह कॉटा भी खिंचने लगा।

खरदिमाग चिल्लाया — "घोड़ा चारा खा रहा है। जल्दी मेरी सहायता के लिये आओ। यह तो कोई बड़ा घोड़ा लगता है। मुझे लगता है कि किनारे पर लाने के लिये हम सबको उसे खींचना पड़ेगा।"

एक पल में ही सारे शिष्य वहॉ जमा हो गये। दो शिष्यों ने वह छड़ी पकड़ी। दो शिष्यों ने उन आगे वाले शिष्यों को पकड़ लिया और उनको अपनी पूरी ताकत लगा कर खींचने लगे।

जब वे इस तरह से उस मछली के कॉटे को खींच रहे थे तो वह चावल की पोटली खुल गयी और सारे चावल पानी में बिखर गये। चाकू भी खुल गया और जा कर उन सरकंडों में उलझ गया जो झील की तली में उगे हुए थे।

खरदिमाग खुशी से बोला — "ओह हमने घोड़ा पकड़ लिया। उसने चारा खा लिया है। अब हम सबको मिल कर उसे खींचना है बस। एक, दो, तीन, खींचो।"

सो सबने मिल कर उस कपड़े को खींचा तो अचानक कपड़ा फट गया और दो हिस्सों में बॅट गया। खरदिमाग और दूसरे शिष्य इस धक्के से नीचे गिर पड़े।

कमजोर चिल्लाया — "ओह। इस तरीके के अलावा कोई आसान तरीका भी होना चाहिये।" फिर वे सब अपनी अपनी चोटें सहलाते हुए उठे।

एक गॉव वाला दूर से उनकी ये सब हरकतें देख रहा था यह सब देख कर वह उनके पास आया और उनसे पूछा — "जनाब, आप लोग यह क्या कर रहे हैं?"

खरदिमाग घोड़े की परछाईं की तरफ इशारा करते हुए बोला — "हम लोग यहॉ एक घोड़ा पकड़ने आये हैं।" फिर उसने अपना प्लान बताया कि वह कैसे उस घोड़े को पकड़ने वाले थे।

गॉव वाला बोला — "तुम सब बेवकूफ हो। यह तो केवल उस मिट्टी के बने घोड़े की परछाईं है। यह असली घोड़ा नहीं है। देखो मैं दिखाता हूॅ तुम लोगों को।"

कह कर वह मन्दिर की चहारदीवारी पर चढ़ गया और उस घोड़े की मूर्ति को अपनी चादर से ढक लिया। फिर हॅस कर उनसे पूछा — "अब तुमको क्या दिखायी दे रहा है?"

गधा बोला — "अरे यह तो बड़ा आश्चर्य है। वह घोड़ा तो गायब हो गया और अब तो हमें बस तुम्हारी चादर का रंग ही दिखायी दे रहा है। अब हम क्या करें? हमारे गुरू जी को तो घोड़े

की बहुत जरूरत थी और हम अब उनको फिर से नाउम्मीद कर देंगे।"

हमारे गुरू जी बहुत बूढ़े और कमजोर है। उनको घोड़ा यात्रा करने के लिये चाहिये ही। पहले हमने पॉच सोने के सिक्के एक घोड़े के अंडे पर खर्च किये पर हमारी किस्मत खराब कि वह अंडा हमसे टूट गया और उसमें से घोड़ा निकल कर भाग गया।

फिर हमने एक बैल किराये पर लिया तो उसके मालिक ने न केवल हमसे उसका किराया ही ज़्यादा लिया बल्कि उसके साये को इस्तेमाल करने के पैसे भी मॉग लिये।

हमने इन सब पर अपने गुरू जी का इतना पैसा बेकार किया है कि अब हमारी इस काम करने को करने की इच्छा ही नहीं रह गयी है। लेकिन फिर भगवान की दया से हमको एक घोड़ा झील में मिला तो हमने उसको पकड़ने की कोशिश की तो अब वह भी गायब हो गया।

हम क्या कर सकते हैं अपने गुरू जी के लिये। हम लोग कितने बेकार के शिष्य हैं। हमारे गुरू जी भी कितने बदकिस्मत हैं।"

यह सब सुन कर उस गॉव वाले का दिल पिघल गया। वह अपने मन में सोचने लगा कि ये लोग भी बेशक कितने बेवकूफ लोग हैं पर अच्छे और सीधे सादे हैं और साथ में अपने गुरू के लिये भी इनके दिल में कितना सेवा भाव है। मैं ऐसा करता हूॅ कि मैं इनको एक घोड़ा दे देता हूॅ और इनकी परेशानी दूर कर देता हूॅ।

सो उसने उनसे कहा — "ओ भले साधुओ। मेरे पास एक पुराना घोड़ा है। मेरा विचार है कि तुम लोग उसको अपने गुरू जी की यात्रा के इस्तेमाल के लिये ठीक पाओगे।

तुम लोगों को मुझे उसके लिये कोई पैसा देने की जरूरत नहीं है। मैं तुम लोगों को उसे खुशी से दान देता हूँ। तुम लोग मेरे घर चलो और मैं उस घोड़े को तुमको दे दूँगा।"

यह सुन कर तो वे पाँचों शिष्य बहुत ही खुश हुए और तुरन्त ही उस गाँव वाले के पीछे पीछे उसके घर चल दिये।



वहाँ जा कर उन्होंने देखा कि उस बूढ़ी घोड़ी के ऊपर कोई जरूरी साज[61] भी नहीं था सो उसका मालिक और वे सब किसी ऐसी चीज़ की तलाश करने लगे जिसको वे उस साज के बदले में इस्तेमाल कर सकें।

एक घंटे के भीतर भीतर उस घोड़ी पर एक बिल्कुल नयी तरह का साज सज गया। उस पर फूस की लगाम थी और पुराने कपड़े के थैलों की बनी हुई जीन थी। यह सब यात्रा के लिये तो ठीक था पर देखने में बहुत ज़्यादा सुन्दर नहीं लग रहा था।

खरदिमाग ने ज्योतिष का पंचांग देखा कि वे उसको उस गाँव वाले के घर से कब ले जा सकते थे और गधा गुरू जी को लाने दौड़ा ताकि वह उनको उस घोड़े को दिखा सके।

[61] Translated for the "Saddle" etc. See its picture above,

कुछ घंटों में ही गुरू जी उस घोड़ी पर बैठे हुए थे। उन सबकी यह पहली यात्रा देखने के लिये सारा गाँव इकट्ठा था। गुरू जी के शिष्यों में से एक शिष्य ने घोड़ी की लगाम सँभाली दूसरे ने उसको पीछे से धकेला दिया और दो शिष्य उनकी सुरक्षा के लिये उनके दोनों तरफ खड़े हो गये।

खरदिमाग ने आगे की तरफ खड़े हो कर बड़ी शान से घोषणा की — "हमारे गुरू जी आ रहे हैं। उनकी इज़्ज़त करो और एक तरफ को खड़े हो जाओ। हमारे गुरू जी आ रहे हैं।" इस तरह से यह जुलूस इस शानदार तरीके से वहाँ से चला।

गुरू जी और उनके शिष्य दोनों ही बहुत खुश थे। आखिर उनके पास अब उनका अपना घोड़ा था और अब उनकी यात्रा में कोई मुश्किल नहीं आने वाली थी – या उनको ऐसा लगा।

वे चले ही थे कि अजीब से कपड़े पहने एक आदमी उस जुलूस के सामने आ गया और उस घोड़े को रोक लिया।

शिष्य यह देखते ही कुछ दुखी हो गये और चिल्लाये — "यह तुम क्या कर रहे हो? तुमने हमें रोक क्यों लिया?"

वह आदमी बोला — "मैं टैक्स लेने वाला हूँ। तुम्हारा यह जुलूस हमारी सड़क पर जा रहा है तो इसका मतलब साफ है कि तुमको इसका टैक्स देना पड़ेगा। मुझे पाँच सोने के सिक्के दो नहीं तो मुझे तुम्हारे खिलाफ कुछ कार्यवाही करनी पड़ेगी।"

खरदिमाग को बहुत गुस्सा आ गया तो उसने उसको डॉटा — "यह क्या बात हुई? तुम हमारे गुरू जी से केवल घोड़े की सवारी के ऊपर टैक्स लेना चाहते हो?

वह बहुत बूढ़े हैं और कमजोर भी। वह बहुत दूर तक पैदल नहीं जा सकते इसी लिये हम उनको घोड़े पर बिठा कर ले जा रहे हैं। मैंने तो अभी तक इस बात के लिये किसी को टैक्स लेते सुना नहीं। यह तो गलत है और अधार्मिक भी।"

पर इस भाषण का उस टैक्स वाले आदमी पर कोई असर नहीं पड़ा। वह बोला — "ओ बवकूफो, तुम्हारी यह हिम्मत कैसे हुई कि तुम लोग मुझे ललकारो। धार्मिक और अधार्मिक, तुम लोग यहॉ से एक इंच भी नहीं हिलोगे जब तक तुम लोग इसका टैक्स न दे दो।"

कह कर उसने नीचे पड़ी एक डंडी उठायी और उठा कर रास्ते में घोड़े के आगे रख दी।

काफी देर तक गुरू जी धीरज रखे रहे पर फिर उन्होंने उस टैक्स लेने वाले को टैक्स देने से मना कर दिया और उस टैक्स लेने वाले ने उनको आगे जाने से मना कर दिया।

पर जब शाम हो आयी तो गुरू जी ने कहा — "गधे, इसको पॉच सोने के सिक्के दो दो। क्योंकि जब तक हम इसको इसके पैसे नहीं देंगे यह हमको जाने नहीं देगा।"

गुस्से में भर कर गधे ने उसको पॉच सोने के सिक्के दे दिये और फिर वह जुलूस पहले की तरह आगे की तरफ चल दिया।

गुरू जी ने सोचा "मेरी भी क्या किस्मत है। अगर मैंने यह पॉच सोने के सिक्के इसको न दिये होते तो मैं पॉच सोने के सिक्के ज़्यादा अमीर होता। मैंने अपने शिष्यों को इस जानवर को अपने आश्रम में लाने ही क्यों दिया। साफ लगता है कि यह हमारा कोई अच्छा फैसला नहीं था।"

तभी वहीं सड़क पर एक यात्री बैठा था वह भी उस जुलूस में शामिल हो गया। सो गुरू जी ने अपनी दुखभरी कहानी उसको सुनायी —

"जनाब, मैं तो अपनी यात्रा हमेशा पैदल ही करता था। पर अभी हाल ही में मेरे शिष्यों को लगा कि मैं कमजोर हो गया हूँ सो उन्होंने मेरे लिये इस घोड़े का इन्तजाम किया। हम लोग खुशी से जा रहे थे कि हमारे साथ एक बहुत ही खराब घटना घटी।

यह टैक्स वाला आदमी हमारे सामने सड़क पर आ गया और इसने हमको जाने से मना कर दिया जब तक इसने हमसे पॉच सोने के सिक्के नहीं ले लिये।

इसने कहा कि सड़क पर घोड़े पर सवार हो कर चलने पर टैक्स लगता है। इस दुनियॉ का क्या होने वाला है मालूम नहीं।"

यात्री ने अफसोस जाहिर करते हुए कहा — "प्यारे साधु, यह दुनियॉ अब वह दुनियॉ नहीं है जिसको तुम जानते थे। आजकल तो पैसा ही गुरू है और पैसा ही भगवान है।

आजकल की दुनियाँ में अगर तुम्हारे पास पैसा हे तो कोई लाश भी तुम्हारे पीछे चलेगी और अगर तुम गधे भी हो तो भी तुम बहुत ही ऊचे किस्म के आदमी हो। और अगर तुम्हारे पास पैसा नहीं है तो तुम्हारी सारी बुराइयाँ सामने आ जायेंगीं। क्या करें आजकल के समय में पैसा ही सब कुछ है।"

गुरू जी कुछ दुखी हो कर बोले — "यह बहुत बुरी बात है। आजकल अगर कोई दस पैसे भी कहीं पड़े देखता है तो उठा कर रख लेता है।"

यात्री ने पूछा — "पर इसमें बुरी बात क्या है? हर पैसे की कीमत है। और कोई पैसा गन्दी जगह पड़े होने से बदबूदार तो नहीं हो जाता। मैं आपको इसकी एक कहानी सुनाता हूँ।

"यह कोई बहुत पुरानी बात नहीं है कि एक राजा था जो अपने राज्य के आदमियों को टैक्स के लिये बहुत तंग करता था।

उसकी इस टैक्स इकट्टा करने के पागलपन की हद यहाँ तक पहुँची कि उसने पेशाब करने पर भी टैक्स लगा दिया और इसको इकट्ठा करने का जिम्मा अपने बेटे को सौंपा। उसका काम यही था कि वह जैसे ही लोगों को पेशाब करते देखे तो उनसे टैक्स वसूल कर ले।

राजकुमार ने अपने पिता से शिकायत की कि यह तो बड़ी खराब बात है। मैं लोगों को पेशाब करने के इन्तजार में क्यों खड़ा रहूँ? यह तो एक राजकुमार के लिये बहुत ही नीच काम है।"

राजा ने कहा — "थोड़ा धीरज रखो बेटा। तुम अपना काम करो और फिर जल्दी ही तुम देखना कि क्या होता है।"

कुछ दिन बीत गये। हालाँकि राजकुमार यह करता तो रहा पर फिर भी राजकुमार को यह सब अच्छा नहीं लग रहा था और न ही उसको कोई उसका असर दिखायी दे रहा था।

यह देख कर एक दिन राजा ने उसको अपने खजाने में बुलाया और उसको चमकते हुए सोने के सिक्कों का वह ढेर दिखाया जो उसने इस तरह से इकट्ठा किया था।

वह बोला — "मेरे बेटे, ज़रा इन सब सिक्कों को सूँघो तो।"

राजकुमार ने उनको सूँघा तो उसकी समझ में नहीं आया कि उसका पिता इस बात से उसको क्या बताना चाह रहा था।

वह बोला — "इसमें तो कोई बू नहीं है न। इसमें तब तो बू थी जब मैंने इनको इकट्ठा किया था पर अब तो इनमें कोई भी बू नहीं है।"

राजा हँसते हुए बोला — "अब तुम समझे। पेशाब में बदबू होती है पैसे में नहीं। हम पैसे को कहीं से कहीं ले जा सकते हैं। पैसे में कभी बू नहीं आती।"

गुरू जी बोले — "अच्छी कहानी है और यह तो सच से भी दूर नहीं है।"

गुरू जी और वह यात्री चलते जा रहे थे और बात करते जा रहे थे। जल्दी ही शाम हो गयी। वे लोग एक छोटे से गाँव के पास आ गये तो गाँव के बाहर ही उन्होंने रात गुजारने का विचार किया।

जब वे सुबह सवेरे उठे तो उन्होंने देखा कि उनका घोड़ा तो गायब है।

गधा जल्दी से नहाया और गाँव में घर घर जा कर अपने घोड़े को ढूँढने लगा। जल्दी ही उसको वह घोड़ा एक मकान के आगे एक पेड़ से बँधा मिल गया।

उस घर का मालिक एक किसान था वह अपने घर के बरामदे में लेटा हुआ था सो गधा उसके पास गया और बोला — "जनाब यह तो हमारा घोड़ा है। कल रात यह हमारे यहाँ से गायब हो गया था। आप इस घोड़े को ईमानदारी से हमें दे दें।"

वह किसान बोला — "रात भर यह घोड़ा मेरे मैदान में आजादी से घूमता रहा। तुम्हारे इस बेवकूफ घोड़े ने मेरी आधी से ज़्यादा फसल बर्बाद कर दी। अब इसको मैं तुमको नहीं देने वाला।"

वह किसान बहुत गुस्सा था और उसने गधे को कुछ और बुरे शब्द भी कहे। शिष्य डर गया और इस मामले को उस गाँव के सरपंच के पास ले जाने का इरादा किया।

अगले दिन सारे दिन दोनों आपस में काफी बहस करते रहे और फिर गाँव के सरपंच ने गुरू जी की तरफ देखते हुए अपना फैसला सुनाया —

"क्योंकि तुम्हारे घोड़े ने इस किसान की फसल खराब की है इसलिये तुमको इस किसान को दस सोने के सिक्के देने पड़ेंगे। इतना हर्जाना काफी है। इसको दस सोने के सिक्के दे दो और अपना घोड़ा ले जाओ।"

सो उनको उस किसान को दस सोने के सिक्के देने पड़े। सिक्के दे कर और अपना घोड़ा उस किसान से वापस ले कर वे फिर आगे बढ़े।

अब जब वे लोग उस गॉव से आगे चले तो गुरू जी ने दुखी हो कर कहना शुरू किया — "जिस दिन से यह घोड़ा हमारे पास आया है उसी दिन से हमारा पैसा बेकार में ही खर्च हो रहा है और साथ में मुझे बेइज़्ज़ती भी बर्दाश्त करनी पड़ रही है।

हमको इस घोड़े को निकाल देना चाहिये। इसको अपने पास रखना ठीक नहीं है। मैं तो इस सबको सहने की बजाय पैदल चलना ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

सारे शिष्य एक साथ बोले — "नहीं नहीं गुरू जी, ऐसा मत सोचिये। आप चल नहीं सकते। आप बहुत बूढ़े हैं। इसके अलावा अब आप बड़े आदमी भी हो गये हैं।

कई बार आप इस घोड़े पर बैठ कर सवारी कर चुके हैं। अब अगर पहले की तरह से गरीब हो जायेंगे तो यह तो आपके लिये बड़ी बेइज़्ज़ती की बात होगी। लोग आपके ऊपर हॅसेंगे और फिर वह हमसे बर्दाश्त नहीं होगा।"

एक पंडित जी उधर से गुजर रहे थे। गुरू शिष्यों की ये बातें उन्होंने सुनी तो वह रुक कर उनसे बोले — "तुम लोगों को ये सब मुश्किलें इसलिये आ रही हैं क्योंकि तुम्हारे घोड़े पर एक बुरा जादू पड़ा हुआ है।

मुझे मालूम है कि ऐसा बेकार का खर्चा कितना परेशान करता है पर अगर तुम लोग मुझे पॉच सोने के सिक्के दो तो मैं इस घोड़े पर पड़ा यह बुरा जादू हटा सकता हूँ।"

सभी शिष्य बोले — "गुरू जी, हमारे ख्याल से बजाय घोड़े को हटाने के इन पंडित जी से इस पर पड़ा यह बुरा जादू ही हटवा दीजिये।"

भुनभुनाते हुए गुरू जी राजी हो गये और पंडित जी ने उस बुरे जादू को हटाने के लिये जरूरी सामान इकट्ठा करना शुरू कर दिया। जल्दी ही वह कुछ डंडियॉ, कुछ फूल और कुछ रंगीन पाउडर ले कर आये और फिर उन्होंने घोड़े के चारों तरफ घूम घूम कर मन्त्र पढ़ना शुरू किया।

अचानक उन पंडित जी ने चिल्लाना शुरू किया और पत्ते और वे रंगीन पाउडर फेंकना शुरू किया। वह तीन बार घोड़े के चारों तरफ भागे और कई बार घोड़े की पीठ को थपथपाया।

आखिर उन्होंने घोड़े का कान पकड़ा और शिष्यों से कहा — "इसका बुरा जादू इस घोड़े के कान में है। अगर हम इसका यह कान निकाल दें तो इसका यह जादू निकल जायेगा।"

शिष्य लोग पंडित जी के इस कारनामे से बड़े प्रभावित हुए। खरदिमाग और गधा तुरन्त ही एक बड़ा सा चाकू ले आये। पंडित जी ने उसे तेज़ किया और उस घोड़े का कान काट दिया। घोड़ा बहुत ज़ोर से चीखा और बेहोश हो कर जमीन पर गिर पड़ा।

खरदिमाग ने उसका वह कान उठाया और उसको एक गहरे गड्ढे में गाड़ कर उसके ऊपर नीम की एक शाख लगा दी। जब वह लौटा तो उसने देखा कि घोड़े के कान की मरहम पट्टी हो चुकी है और सब लोग वापस जाने के लिये तैयार खड़े हैं।

लौटने का रास्ता लम्बा था पर उसमें कोई खास घटना नहीं घटी। सब थक गये थे सो आश्रम आ कर वे सब नहाये धोये और जल्दी ही खाना खा पी कर सो गये।

5 पॉचवीं घटना – गुरू जी की मौत की भविष्यवाणी

अगली सुबह गुरू जी अपनी पिछली यात्राओं के बारे में सोच रहे थे। उनका घोड़ा जिसके कान पर अभी भी पट्टी बॅधी हुई थी लॅगड़ाता हुआ कुछ दूर हरी घास की खोज में इधर उधर घूम रहा था।

उसको देख कर गुरू जी ने सोचा — "यह घोड़ा कितना बदसूरत है। जब यह पहली बार आया था तब मैं इसको लेने के लिये तैयार था क्योंकि तब यह मुफ्त का था पर अभी तो मैंने इस के ऊपर कितना पैसा खर्च किया। भगवान की क्या माया है।"

उन्होंने अपने शिष्यों को बुलाया और उनसे कहा — "अगर तुम लोग इस घोड़े में ज़िन्दगी देखो तो यह तो रेगिस्तान में एक मृगतृष्णा[62] की तरह है। यह तो है ही नहीं। कोई भी अच्छी चीज़ बुरी चीज़ के बिना नहीं होती। कोई खुशी बिना दुख के नहीं होती।"

फिर उन्होंने उस घोड़े की तरफ इशारा करते हुए कहा — "अब इस बदसूरत घोड़े को ही ले लो। यह घोड़ा हमारे पास एक भेंट के रूप में आया था तब हमें यह बहुत अच्छा लगा था।

पर हमारे अनुभव ने हमको सिखा दिया कि कोई खुशी बिना दुख के नहीं मिलती। हमको केवल एक बूँद शहद दिया गया था पर उसके साथ में हमें कितनी सारी कड़वाहट भी मिली।

हर फल में उसका छिलका और बीज होते हैं। और यह तो स्वाभाविक है। हम इसको बदल तो नहीं सकते पर हम इससे कम से कम बच तो सकते हैं।

मैं चाहता हूँ कि तुम लोग इस घोड़े को इसके मालिक को वापस कर आओ। उसके बाद ही हम लोग शायद खुश और शान्ति से रह पायेंगे।" सारे शिष्य गुरू जी के इन शब्दों से बहुत दुखी हुए।

गधा बोला — "गुरू जी, ऐसा मत कहिये। हमने यह घोड़ा खरीदा भी नहीं है और न ही हमने इसको खरीदने की कोशिश की

---

[62] Translated for the word "Mirage" – mirage is the situation which creates a confusion of water in a desert and the person continues to run after it thinking that there is water, but can never get it as the water is not there.

है। एक भले गॉव वाले ने इसे हमको भेंट में दिया था सो यह तो हमको भगवान का दिया हुआ प्रसाद है।

आप इसको ले कर इतने परेशान क्यों हैं। अगर हम इसको वापस करेंगे तो हम भगवान की इच्छा के खिलाफ जायेंगे। इसके अलावा पंडित जी ने इसके ऊपर जो बुरा जादू था वह भी निकाल दिया है सो अब हमको उसे रखे रहना चाहिये।"

अपने शिष्यों का पक्का इरादा देख कर गुरू जी घोड़े को रखने पर राजी हो गये और बोले — "ठीक है। पर देखो अब उसको इधर उधर मत घूमने देना। इससे वह दूसरों को तंग करेगा और फिर खर्चा करायेगा। हमको उसके लिये एक छत डलवा कर उसमें अपने आश्रम में बॉध कर रखना चाहिये।"

शिष्य तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गये कि आखिरकार उनके गुरू जी इस बात के लिये तैयार हो गये हैं कि घोड़े को रख लिया जाये।



गधा तो उछलते हुए बोला — "आप बिल्कुल चिन्ता मत कीजिये गुरू जी। मैं दस मिनट में उसके लिये एक बहुत अच्छा शैड[63] बना दूँगा जो उस घोड़े को लिये बिल्कुल ठीक रहेगा। बस मुझे दो बहुत बड़े पेड़ की शाखें चाहिये।"

---

[63] A simple shed is just a roof on four pillars, may or may not be surrounded by wooden walls. See its picture above.

कह कर उसने एक बड़ा सा चाकू लिया और आश्रम के बाहर की तरफ चला गया और एक बरगद का पेड़[64] ढूँढा।

वहाँ उसने अपने काम के लिये ठीक से शाखें ढूँढी और बस उस पेड़ पर चढ़ गया। वह एक शाख पर बैठ कर उसको काटने लगा।



उसी समय वहाँ से एक ब्राह्मण गुजर रहा था। उसने अपने सिर के ऊपर कुछ आवाज सुनी तो ऊपर देखा कि वहाँ क्या हो रहा था। उसने देखा कि एक नौजवान जिस शाख पर बैठा है उसी शाख को काट रहा है।

यह देख कर तो वह बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "अरे यह तुम क्या कर रहे हो ओ बेवकूफ गधे? यह शाख कट कर गिरेगी तो साथ में तुम भी गिर जाओगे।"

गधा इस समय घोड़े के लिये शैड बनाने के उत्साह में था सो उसको उस ब्राह्मण की यह बात अच्छी नहीं लगी।

वह बोला — "ओ ब्राह्मण, तुम मुझे यह बुरी बात कह कर परेशान मत करो। मुझे मेरे गुरू जी की शान्तिपूर्वक सेवा करने दो। तुम्हारी यह सलाह तो मेरा केवल ध्यान ही हटा रही है। इसलिये इससे पहले कि मैं तुम्हारे साथ कुछ करूँ तुम यहाँ से चले जाओ।"

[64] Banyan tree – an old banyan tree can be a very large tree. It can have hundreds of trunks out of which is almost impossible to know which trunk is original. In India, in Calcutta, there is one oldest Banyan tree under which once a king's army had rested.

यह जवाब सुन कर वह ब्राह्मण समझ गया कि वह किसी पागल आदमी से बात कर रहा था। उसने अपने कन्धे उचकाये और बिना कुछ कहे वहाँ से आगे चला गया।

गधा फिर से अपना काम में जुट गया। अब वह और ज़्यादा उत्साह और ताकत से काम कर रहा था। जल्दी ही पेड़ की वह शाख कट गयी और धम्म से जमीन गिर पड़ी और उसके साथ गिर पड़ा गधा भी। भगवान का लाख लाख धन्यवाद कि उसको ज़्यादा चोट नहीं आयी।

यह देख कर गधे ने सोचा — "यह ब्राह्मण तो कोई अच्छा ज्योतिषी लगता है। उसने कहा था कि जब यह शाख कट कर गिरेगी तो मैं भी गिर पड़ूँगा। वही हो गया। यह आदमी मेरे गुरू जी के लिये बहुत अच्छा रहेगा। मैं इस आदमी से बात कर के देखता हूँ।"

यह सोच कर जमीन पर से उठ कर उसने अपनी धूल झाड़ी, अपना तेज़ किया हुआ चाकू नीचे से उठाया और उस आदमी के पीछे भाग लिया।

वह ब्राह्मण एक गाँव के पास पहुँच रहा था जब उसने अपने पीछे किसी के पैरों की आहट सुनी। उसने देखा कि यह तो वही पागल आदमी था जो पेड़ की जिस शाख पर बैठा था उसी शाख को काट रहा था और अब उसके पीछे हाथ में चाकू लिये दौड़ा चला आ रहा था।

यह देख कर वह डर गया और गॉव के बाजार में घुस गया और चिल्लाया — “मुझे बचाओ, मुझे बचाओ। एक पागल मेरे पीछे चाकू ले कर दौड़ा चला आ रहा है। मुझे बचाओ।”

पर गधा बहुत तेज़ भाग रहा था सो कुछ पल में ही उसने उस ब्राह्मण को पकड़ लिया।

चाकू के डर की वजह से वह ब्राह्मण बेचारा वहीं का वहीं चुपचाप खड़ा रह गया। उसके चेहरे से डर साफ झलक रहा था। पर उसके आश्चर्य का ढिकाना न रहा जब उसने देखा कि उस नौजवान ने अपना चाकू फेंक दिया और जमीन पर लेट कर उसने उसके पैर छुए।

उसने उस ब्राह्मण की तारीफ करते हुए कहा — “आप तो इतने ज़्यादा पढ़े लिखे हैं और साथ में भविष्य भी बहुत ठीक बताते हैं। मेरा आपसे एक छोटा सा सवाल है। मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ।”

अब तक उस ब्राह्मण का डर पूरी तरह से दूर नहीं हुआ था फिर भी वह बोला — “हॉ हॉ कहो। जो भी तुम चाहो। तुम क्या जानना चाहते हो?”

गधा बोला — “मैं गुरू परमार्थ जी का शिष्य हूँ। मैं उनको बहुत प्यार करता हूँ पर अब वह बहुत बूढ़े होते जा रहे हैं। वह जब मरेंगे तब उनके मरने का मुझे कैसे पता चलेगा? अगर आप मुझे यह बता दें तो मुझे कुछ शान्ति हो जाये।

ब्राह्मण ने कुछ ध्यान सा करते हुए कहा — "आसन शीतम जीवन नाशम", यानी जब बैठने की जगह ठंडी हो तब जीवन का नाश हो जाता है।"

गधे ने सोचा कि यह कितना पढ़ा लिखा आदमी है। इसका मतलब यह है कि जब भी हमारे गुरू जी अपनी बैठने की जगह ठंडी महसूस करेंगे वह तभी मरेंगे।

ब्राह्मण फिर बोला — "तुमको और कुछ पूछना है?"

गधा बड़ी इज़्ज़त के साथ बोला — "नहीं जनाब। मैं आपके जवाब से बिल्कुल सन्तुष्ट हूँ। आपका बहुत बहुत धन्यवाद।"

यह सुन कर ब्राह्मण चला गया।

ब्राह्मण के जाने के बाद गधा वापस बरगद के पेड़ के नीचे आया और फिर दूसरी शाख काटने लगा। दोनों शाख काट कर वह उनको घसीटता हुआ आश्रम ले गया।

पर उसके दिमाग में अभी तक उस ब्राह्मण का कहा घूम रहा था सो उसने घोड़े का शैड भी खत्म नहीं किया और गुरू जी के पास पहुँच गया।

उसने गुरू जी को प्रणाम किया और उनसे कहा — "गुरू जी मैं अभी अभी गाँव के एक ब्राह्मण से मिला था। वह तो कितना पढ़ा लिखा था। और उसकी भविष्यवाणी तो कितनी सही थी। उसको यह भी पता है कि जिस समय आप यह दुनियाँ छोड़ेंगे तो उसके क्या लक्षण होंगे।"

गुरू जी बीच में ही बोले — "अच्छा बताओ तो क्या लक्षण होंगे मेरे दुनियाँ छोड़ने के। मैंने भी इस आदमी के बारे में काफी सुना है। यह बहुत ही अच्छा ज्योतिषी है और इसको हमारे धर्म की सारी किताबों की बहुत अच्छी जानकारी है

मुझे पूरा विश्वास है कि जो कुछ भी इसने कहा होगा वह सब ठीक ही कहा होगा। पर तुम मुझे यह तो बताओ तो कि इसने मेरे बारे में कहा क्या।"

गधा बोला — "गुरू जी उसने कहा कि जब बैठने की जगह ठंडी हो तब आत्मा बाहर चली जाती है।"

गुरू जी बोले — "अच्छा तो उसने यह कहा "आसन शीतम जीवन नाशम"। बेटा यह तो बहुत ही मशहूर श्लोक है। आसन शीतम का एक मतलब यह भी है जब हमारी एक तरफ ठंडी होती है तब जीवन का नाश होता है। मुझको बहुत सावधान रहना चाहिये।

मुझे पूरा विश्वास है कि उस ब्राह्मण की बात जरूर ही सच निकलेगी। आगे से मैं ध्यान रखूँगा कि मैं अपना शरीर गीला न रखूँ।

मैं तो नहाऊँगा भी नहीं क्योंकि अगर मेरा शरीर गीला रह गया तो वह ठंडा हो जायेगा और फिर मैं मर जाऊँगा। मरने से तो अच्छा है कि गन्दे ही रह लो।"

सो काफी दिनों तक गुरू जी गन्दे ही रहे और अपने आश्रम में ही रहे। इससे उनकी आलमारियाँ और बक्से सब खाली हो गये। सो दक्षिणा कमाने के लिये गुरू जी और उनके शिष्यों को पास के गाँवों में जाना पड़ा तो वे गये।

गुरू जी जब आश्रम से चलने लगे तो उन्होंने अपने शिष्यों से कहा — "सावधान रहना। मुझे इस यात्रा में किसी तरह की परेशानी नहीं चाहिये। मैं तुमसे जो कहूँ बस वही करना। मैं यह चाहता हूँ कि मेरी यह यात्रा बिना पैसे खर्च किये और सुरक्षित तरीके से निबट जाये।"

गुरू जी के सारे शिष्यों ने उनकी यह बात ध्यान से सुनी। सो सब लोग चले और कई घंटे बिना किसी परेशानी के निकल गये। फिर वे एक बड़े से बागीचे में आये जिसमें बहुत सारे बड़े बड़े छायादार पेड़ लगे हुए थे। वे सब उस बागीचे में घूमने लगे।

घूमते घूमते एक पेड़ की शाख में गुरू जी की पगड़ी अटक गयी और वह नीचे गिर गयी। खरदिमाग और मूर्ख ने देखा कि गुरू जी की पगड़ी नीचे गिर गयी।

अब क्योंकि गुरू जी ने तो उनसे कुछ करने के लिये कहा नहीं था सो वे उसको उठाने के लिये रुके भी नहीं।

उन्होंने सोचा कि गुरू जी ने तो हमसे यह कहा हुआ है कि हम वही करें जो वह हमसे करने के लिये कहें तो हमको तो उनको खुश रखने के लिये उनकी आज्ञा माननी ही चाहिये न।

आखिर वे सब उस बागीचे से निकल कर बाहर धूप में आ गये तब गुरू जी के सिर को गर्मी लगी। तब उनको पता चला कि उनकी पगड़ी तो उनके सिर पर नहीं है।

उन्होंने मूर्ख से कहा — “अरे मूर्ख मेरी पगड़ी कहाँ है ज़रा देना तो।”

मूर्ख और खरदिमाग दोनों ने एक दूसरे की तरफ देखा। मूर्ख हकलाता हुआ बोला — “गुरू जी आपकी पगड़ी तो बागीचे में गिर पड़ी थी। आपने हमको ऐसी चीज़ें उठाने के लिये कुछ कहा नहीं था सो हमने वह उठायी नहीं। हम आपकी आज्ञा का उल्लंघन कैसे कर सकते थे।”

गुरू जी चिल्लाये — “अरे मूर्खो क्या मुझे तुम्हें हर बात के लिये कहना पड़ेगा? तुम्हारे पास अपनी कोई अक्ल नहीं है क्या? मैं यह यात्रा बहुत ही सीधी सादी और शान्तिपूर्ण करना चाहता हूँ। जो भी गिर जाये वह सब उठा लो। यह तो सभी जानते हैं। सबकी समझ में आ गया न?”

खरदिमाग बोला — “जी गुरू जी। मेहरबानी कर के अबकी बार हमें माफ कर दें और हमारे ऊपर दया रखें। अबसे जो भी गिरेगा हम वह सब उठा लेंगे।”

गुरू जी ने देखा कि उनको शिष्यों की समझ में आ गया तो वह सन्तुष्ट हो गये और मुस्कुरा दिये। मूर्ख गुरू जी की पगड़ी लेने के

लिये तुरन्त ही भागा गया और उसे उठा लाया। लोग फिर आगे बढ़ गये।

गुरू जी के घोड़े ने उस बागीचे में बहुत सारी हरी हरी घास खायी थी सो कुछ देर बाद उसने लीद कर दी। मूर्ख ने सोचा कि हमारे गुरू जी ने कहा है कि जो कुछ भी गिरे हम उस सबको उठा लें। मैं गुरू जी को नाखुश नहीं करना चाहता सो मुझे इसे उठा लेना चाहिये। उसने तुरन्त ही घोड़े की लीद उठा कर गुरू जी की पगड़ी में रख ली।

अब उसको गुरू जी को यह दिखाने की बहुत उत्सुकता हुई कि उसने गुरू जी आज्ञा का कितनी अच्छी तरह से पालन किया है सो वह पगड़ी में घोड़े की लीद ले कर गुरू जी के सामने जा पहुँचा और उसको उन्हें दिखाने लगा।

उसको देख कर गुरू जी चिल्लाये — "हे भगवान। यह तुमने क्या किया? तुमने यह लीद उठा कर मेरी पगड़ी में क्यों रख ली? मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा कि तुमने यह सब किया। अरे मूर्ख, तुमने ऐसा क्यों किया?"

मूर्ख कुछ भुनभुनाता हुआ बोला — "मुझे लगा कि आप खुश होंगे। आप ही ने तो कहा था कि जो कुछ भी नीचे गिरे हम उसको उठा लें। तो मैं तो केवल आपकी आज्ञा का पालन ही कर रहा था।"

गुरू जी मजाक बनाते हुए बोले —"जब मैंने तुमसे यह कहा था कि जो कुछ भी नीचे गिर जाये उसे उठा लो तो उससे मेरा मतलब यह नहीं था कि तुम घोड़ी की लीद भी उठा लो। यह पागलपन है। तुमको ज़रा सी भी अक्ल नहीं है क्या।

क्या तुम हमारे धर्म की किताबें नहीं पढ़ते? उनमें तो साफ लिखा है कि तुमको क्या उठाना चाहिये और क्या नहीं उठाना चाहिये।"

खरदिमाग ने अपनी दलील दी — "गुरू जी हम तो चकरा ही गये थे। पहले तो आपने कहा कि हम बिना आपकी आज्ञा के कुछ न करें फिर आप गुस्सा हो गये क्योंकि आपने हमें कुछ करने की आज्ञा नहीं दी।

फिर आपने कहा कि हम वह सब कुछ उठा लें जो गिर जाये और फिर जब हमने उसे उठाया तो आप फिर गुस्सा हो गये।

गुरू जी, हम आपके बहुत अक्लमन्द शिष्य नहीं हैं। इतनी सब बातें हम लोग केवल धर्म की किताबें पढ़ कर ही नहीं समझ सकते।

हमारे लिये तो वह ज़्यादा अच्छा होगा अगर आप हमको इस सबकी एक लिस्ट बना दें। तब हमको यह ठीक से पता चल जायेगा कि आप हमसे सचमुच में चाहते क्या हैं।"

गुरू जी अपने शिष्य को सच बोलते हुए देख कर बहुत खुश हुए और बोले — "ठीक है मैं तुमको एक बड़ी सी लिस्ट बना कर

दूँगा। तुम अगर उसी लिस्ट के अनुसार काम करोगे तो सब कुछ ठीक से चलता रहेगा।"

गुरू जी ने जल्दी ही एक लम्बी सी उन सब कामों की लिस्ट बना कर अपने शिष्य को दे दी जो काम भी उस समय उनके दिमाग में आये और फिर वे सब आगे चले।

कुछ दूर जाने के बाद वे सब एक कीचड़ से भरी हुई जमीन पर आ गये। हालाँकि सारे शिष्य सावधान थे पर फिर भी गुरू जी के थके बूढ़े घोड़े का पैर फिसला, वह लड़खड़ाया और गिर पड़ा।

बूढे गुरू जी भी अपने आपको सँभाल न सके और उस घोड़े के साथ साथ नीचे कीचड़ के गड्ढे में गिर पड़े। उनके पैर ऊपर थे सिर कीचड़ में था। यह तो एक देखने वाला दृश्य था। किसी तरह से गुरू जी अपने आपको सँभालते हुए उठे।

उन्होंने अपनी आँखों से कीचड़ पोंछी तो देखा कि उनके शिष्य तो उनके बिना ही आगे चले जा रहे थे। यह देख कर गुरू जी घबरा गये और चिल्ला कर बोले — "अरे तुम सब कहाँ जा रहे हो? मेरी सहायता करो। मुझे यहाँ से निकालो।"

गुरू जी को पुकारते सुन कर शिष्यों ने पीछे मुड़ कर देखा तो वह तो आश्चर्य में पड़ गये। मूर्ख ने पूछा — "अब हम क्या करें?"

खरदिमाग अपने आपको सँभालते हुए बोला — "पर यह तो बिल्कुल साफ है। हमको तो केवल अपनी उस लिस्ट को देखना है जो हमको हमारे गुरू जी ने दी है।

उन्होंने तो हमको साफ साफ कह रखा है कि तुम लोग इस लिस्ट के अनुसार काम करो तो सब कुछ बहुत अच्छा रहेगा।"

सारे शिष्य एक साथ बोले — "हॉ यह तो ठीक है। चलो जल्दी से लिस्ट देखो कि उसमें क्या लिखा है।"

खरदिमाग ने जल्दी से वह लिस्ट ढूँढी और उसको पढ़ना शुरू किया – पगड़ी, धोती, चादर, गमछा, कच्छा, बटुआ आदि। पर इसमें गुरू जी का नाम तो कहीं नहीं है कि अगर गुरू जी गिर जायें तो हमको उनको भी उठाना चाहिये या नहीं।

तो यह मामला तो बिल्कुल साफ है। ऐसा लगता है कि गुरू जी हमारा इम्तिहान ले रहे है। हमको अपनी लिस्ट देखनी चाहिये, उसी के अनुसार काम करना चाहिये और उनको यहीं छोड़ देना चाहिये।

इस तरह कम से कम एक बार तो बजाय हमको डॉटने के वह हमारी तारीफ करेंगे। चलो जल्दी करो, अपना सामान उठाओ हम अपनी यात्रा पर चलते हैं।" सो सबने अपना अपना सामान उठाया और आगे चल दिये।

बेचारे गुरू जी वहॉ कीचड़ में अकेले नंगे खड़े रह गये और शिष्य आगे चले गये। गुरू जी बहुत ही अजीब हालत में खड़े थे। वह सोच रहे थे अब मैं क्या करूॅ। मेरे शिष्यों ने तो न केवल मेरी इज़्ज़त उतार ली बल्कि मेरे तो कपड़े भी उतार लिये।

अचानक उनको एक यात्री उधर से जाता हुआ दिखायी दे गया तो उन्होंने उसे ज़ोर से आवाज दे कर बुलाया — "जनाब मेरी सहायता कीजिये। मैं यहाँ मुसीबत में फँसा हूँ।"

वह यात्री गुरू जी के पास आया और उनसे बोला — "आपको यहाँ इस हालत में देख कर मुझे बहुत अफसोस हो रहा है। बताइये मैं आपके लिये क्या करूँ?"

गुरू जी ने शान्ति से कहा — "मुझे ताड़ का एक पत्ता दो और एक कलम दो लिखने के लिये।"

यात्री ने तुरन्त ही गुरू जी को ताड़ का एक पत्ता और एक कलम दे दिया तो गुरू जी ने उस पर लिखा "अगर तुम्हारे गुरू जी घोड़े पर से किसी गड्ढे में गिर जायें तो पहले उनको उठाओ और फिर आगे बढ़ो।"

यह लिख कर गुरू जी ने उस यात्री से प्रार्थना की कि वह पत्ता वह आगे जाते हुए उसके शिष्यों को दे दे और कहा — "मेरे शिष्य आगे चले गये हैं। मैं आपका बहुत आभारी रहूँगा अगर आप यह पत्ता उनको दे देंगे तो। यह बहुत जल्दी का मामला है। मेहरबानी कर के इसे उनको तुरन्त ही दे दें।

यात्री बोला — "ठीक है मैं इसको उनको तुरन्त ही देने की कोशिश करता हूँ। आप सचमुच में बहुत मुश्किल में हैं।"

कह कर वह उस पत्ते को ले कर उनके शिष्यों की तरफ चल दिया। जैसे ही वह उनके पास तक आया वह वहीं से चिल्लाया — "मेरे पास तुम्हारे लिये तुम्हारे गुरू जी की एक चिट्ठी है।"

यह सुन कर कि उनके गुरू जी की उनके लिये एक चिट्ठी है वे शिष्य उस यात्री की तरफ दौड़े।

खरदिमाग ने उस यात्री से कहा — "अगर यह चिट्ठी हमारे गुरू जी की है तो इसे हमें दे दो। हम तो उनकी हमेशा ही सेवा करने को तैयार रहते हैं।"

यात्री ने एक बार उस शिष्य के ऊपर एक नजर डाली और वह पत्ता उसको दे दिया। वह फिर बोला — "तुम्हारे बेचारे गुरू जी बहुत मुश्किल में हैं। उनको ठंड भी बहुत लग रही है और उनको शर्म भी बहुत आ रही है। तुम उनके पास दौड़ कर जाओ, उनसे माफी माँगो और उनकी सहायता करो।"

उसने उस पत्ते में लिखे सन्देश को पढ़ा और रोते हुए बोला — "हमारे गुरू जी बहुत मुश्किल में हैं। हमको उनकी सहायता के लिये तुरन्त चलना चाहिये। चलो जल्दी से चलें।"

सारे शिष्य गुरू जी की तरफ भाग लिये। वहाँ जा कर उन्होंने देखा कि उनके गुरू जी तो कीचड़ में छाती तक धँसे खड़े हैं और ठंड से काँप रहे हैं।

6 छठी घटना – गुरू जी की मौत

गुरू जी दुखी से बिना बोले वहाँ खड़े रहे। शिष्यों ने उनकी सब कीचड़ साफ की, उनको साफ सुथरे कपड़े पहनाये और फिर उनको घोड़े पर बिठाया। उनका सारा शरीर ठंडा हो रहा था और दर्द कर रहा था।

अचानक गुरू जी के दिमाग में एक विचार कौंध गया। उन्होंने सोचा — "ओह नहीं। उस ब्राह्मण की भविष्यवाणी। उसने कहा था कि जब मेरी बैठने की जगह ठंडी होगी तब मैं इस दुनियाँ से चला जाऊँगा। और अब तो मैं ठंडा हो रहा हूँ। मैं क्या करूँ। मेरे शिष्यों के तो दिमाग ही नहीं है।"

इससे आगे तो वह सोच ही नहीं सके। फिर उन्होंने सोचा कि "सब कुछ जानते हुए भी इस समय चुप रहना ही ठीक है। क्योंकि यह ठंड शायद घोड़े से गिरने की वजह से जो धक्का लगा है उसी की हो। अभी मैं सब कुछ भगवान पर छोड़ देता हूँ।"

लेकिन ठंडे होने का विचार उनके दिमाग से निकल ही नहीं पा रहा था। वह अपने शिष्यों से बोले — "चलो अपनी यात्रा जारी रखते हैं। मैं अपने आश्रम जल्दी से जल्दी पहुँच जाना चाहता हूँ। इस यात्रा में हमने काफी काम कर लिये।"

शाम तक वे सब आश्रम पहुँच गये। गुरू जी अपने घोड़े पर से उतर कर अपने कमरे में गये। उन्होंने न खाना खाया, न वह नहाये

और न ही अपनी मालिश करवायी। बस जा कर वह अपने बिस्तर पर लेट गये।

कुछ देर के लिये वह अपने शिष्यों को बिल्कुल भूल जाना चाहते थे। उनके शिष्यों ने भी चुपचाप अपना सामान खोला, नहाये धोये और फिर आराम करने के लिये लेट गये।

गुरू जी सारी रात बिस्तर पर करवटें बदलते रहे। उनके बैठने की जगह अभी भी ठंडी थी। उनको मालूम था कि मौत आने वाली थी और वह बहुत डरे हुए थे। सारी रात उनकी कराहते हुए गुजरी।

“मेरे आश्रम का क्या होगा? मेरे घोड़े का क्या होगा? और मेरा क्या होगा?” सारी रात बस वह यही सोचते रहे।

सुबह हुई तो गुरू जी ने अपने शिष्यों को बुलाया — “खरदिमाग, गधा, मूर्ख, कमजोर और बेवकूफ। सब लोग यहाँ आओ। मुझे तुम लोगों से कुछ बात करनी है।”

शिष्य तो गुरू जी की सेवा के लिये हर समय ही तैयार ही रहते थे सो गुरू जी की आवाज सुन कर वे तुरन्त ही वहाँ दौड़े चले आये।

जैसे ही गुरू जी ने उन सबको आते देखा तो उन्होंने पहले से सोची हुई अपनी स्पीच बोलनी शुरू कर दी — “मेरे प्यारे शिष्यों, मेरी मौत का समय अब करीब आ रहा है। जैसा कि तुम लोगों को

मालूम कि उस ब्राह्मण ने कहा था कि जब मेरी बैठने की जगह ठंडी होगी तब मैं मर जाऊँगा।

मेरी बैठने की जगह कल से ठंडी है। मैं तुम लोगों से प्रार्थना करता हूँ कि मेरे मरने के बाद तुम मेरे लिये एक बहुत अच्छी समाधि बनवाना और मुझे उसमें लिटा देना।"

गुरू जी की यह बात सुन कर सारे शिष्य बहुत डर गये। गुरू जी की ऑखें गड्ढे में घुस गयीं थीं। चेहरा सफेद पड़ता जा रहा था। उनके होठ टेढ़े हो रहे थे। गला सूख रहा था और वह पागलों की तरह से इधर उधर देख रहे थे।

यह सब देखने में तो खराब लग ही रहा था पर उनके मुँह से निकले शब्द भी ठीक से सुनायी नहीं दे रहे थे।

गधे ने गुरू जी को तसल्ली देत हुए कहा — "गुरू जी थोड़ी तसल्ली रखिये। हमें उस ब्राह्मण की भविष्यवाणी मालूम है। पर हम सबको यह भी मालूम है कि आप इन सबसे ऊपर हैं।

पर आप चिन्ता न करें हम एक अच्छे हाथ देखने वाले को ले कर आते हैं और देखते हैं कि वह क्या कहता है।

वह हाथ देखने वाला यहॉ के किसी भी पंडित से, यहॉ तक कि उस ब्राह्मण से भी, ज़्यादा अक्लमन्द है। आप ज़रा धीरज धरें और भगवान में विश्वास रखें। मुझे यकीन है कि उसकी भविष्यवाणी ज़्यादा ठीक होगी।"

गुरू जी बोले — "ठीक है। अब मेरी ज़िन्दगी तुम लोगों के हाथ में है जैसा ठीक समझो करो।"

तुरन्त ही खरदिमाग और मूर्ख दोनों पास के गाँव की तरफ दौड़ गये और वहाँ से एक ज्योतिषी से अपने गुरू जी का हाथ देखने के लिये कहा। ज्योतिषी को उनके इस गुरू जी को देखने की उत्सुकता हुई तो वह उनको देखने के लिये चला आया।

तीनों एक घंटे के अन्दर अन्दर गुरू जी के पास थे। हाथ देखने वाले ने गुरू जी का हाथ अपने हाथ में लिया और उसको पूरी तरीके से देखा। लोगों को लगा जैसे उसने हाथ देखने में एक घंटा लगा दिया हो।

हाथ देख कर वह जान बूझ कर उस बिस्तर पर पड़े आदमी से बोला — "आपके बैठने की जगह तो सचमुच में ही बहुत ठंडी है। पर अपनी ताकत से मैं इस भविष्यवाणी को उलटी कर सकता हूँ और मैं उस ब्राह्मण को जिसने आपको इतनी चिन्ता में डाल दिया है शाप दे दूँगा कि जब उसकी बैठने की जगह ठंडी हो वह भी तभी मरे।"

गुरू जी बोले — "अपने धर्म की किताबों में तो मैंने कभी ऐसे उलटे शाप के बारे में नहीं सुना।"

वह हाथ देखने वाला बोला — "आपको यह सब धर्म की किसी किताब में नहीं मिलेगा। यह तो केवल गुप्त धर्मों की किताबों

में ही मिलता है। यह कैसे काम करता है मैं इसकी आपको एक कहानी सुनाता हूँ।

"यह बहुत पुरानी बात है कि दक्षिण भारत के एक छोटे से गॉव में एक व्यवसायी रहता था जो शिव जी का बहुत बड़ा भक्त था। यह उसका नियम था कि उसको जो भी साधु मिलता वह उसको दोपहर के खाने के लिये घर बुला लेता।

उन लोगों के माथे पर तीन लाइनें देख कर वह न केवल उनको खाने के लिये बुलाता बल्कि उनको वह वह भी देता जो कुछ वे चाहते थे।

दूसरी तरफ उसकी पत्नी बहुत ही कंजूस थी। उसको भूखों और सड़क के भिखारियों को खाना खिलाने और दान देने में कोई रुचि नहीं थी। वह अपने पति के इस व्यवहार पर खामोश तो रहती पर दिल ही दिल में यह सोचती रहती कि इस सबका अन्त कैसे किया जाये।



एक दिन उसके पति ने अपने नौकर के साथ एक बूढ़े साधु को खाना खाने के लिये घर भेजा। उस बूढ़े आदमी के सारे शरीर पर भस्म लगी हुई थी और वह केवल एक फटी हुई कौपीन[65] पहने था। जब उस स्त्री ने उसको घर आते हुए देखा तो वह बहुत गुस्सा हुई।

[65] Translated for the word "Loincloth". See its picture aove. It is called "Langotee" also in Hindi.

वह गुस्से से चिल्लायी — "यह सब क्या है। मेरा पति तो बिल्कुल ही पागल है। यह मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों करता है। पर ठीक है बस यह आखिरी बार। आज मैं इसका अन्त कर के ही छोड़ूँगी।"

उसी समय उस साधु ने घर के दरवाजे की घंटी बजायी। वह जल्दी से गयी और उसने दरवाजा खोला। उसको अन्दर बुला कर उसने उसे बरामदे में बिठाया।



आज वह इन साधुओं से हमेशा के लिये छुटकारा पाना चाहती थी सो उसने सारे बरामदे में पहले तो गाय के गोबर का लेप कर दिया। फिर वह अन्दर से चावल कूटने वाली ओखली[66] ले आयी और उसको उस साधु के सामने रख दी।

फिर उसने उस मूसल के ऊपर और अपने ऊपर कुछ गुप्त मन्त्र पढ़ते हुए राख बिखेरी और नीचे झुक कर उसे प्रणाम किया। उसके बाद वह उठी और वह सारी जगह एक कपड़े से साफ कर दी।

यह सब देख कर साधु चुप न रह सका उसने पूछा — "माँ जी, आप इस मूसल की पूजा क्यों कर रही हैं? मैंने ऐसा अपनी ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं देखा। आप यह कर क्या रही हैं?"

---

[66] Grain Pounder, or a large sized mortar and pestle. See its picture above.

उस स्त्री ने जवाब दिया — "जनाब, यह हमारे परिवार का रिवाज है कि हमारे परिवार में अनाज कूटने वाली ओखली की इसी तरह से पूजा की जाती है।"

मेहमान ने कुछ परेशान हो कर फिर पूछा — "पर क्यों?"

स्त्री कुछ मुस्कुरायी और घर के अन्दर चली गयी। दरवाजे के पीछे से वह इतनी ज़ोर से बोली जितनी ज़ोर की आवाज वह साधु सुन ले — "शायद जब यह तुम्हारे सिर पर गिरेगा तब तुमको इसका पता चलेगा।"

उस साधु ने सोचा "ओह यह स्त्री तो मुझे मारना चहती है। लगता है कि यह तो पागल है। मैं तो यहाँ अब एक मिनट भी नहीं रुकने वाला।

मैं अपनी किस्मत का इम्तिहान नहीं लेता। यह तो अच्छा हुआ कि मैंने उसकी फुसफुसाहट साफ साफ सुन ली। मैं तो अब यहाँ से चलता हूँ।"

और वह तुरन्त ही वहाँ से उठ कर घर में से बाहर की तरफ भाग लिया। उसी समय वह व्यवसायी भी घर लौटा। उसने पूछा — "प्रिये, यह साधु हमारे घर से क्यों भाग रहा है। क्या तुमने उसे कुछ नाराज किया है?"

वह बोली — "यह आदमी पागल है। यह वहाँ बैठ कर हमारा अनाज कूटने वाला माँग रहा था। अब क्योंकि हम उसको रोज रोज इस्तेमाल करते हैं इसलिये मैं उसको तो यह दे नहीं सकती थी। फिर

भी उसने उसको देने की जिद की तो मैंने कहा कि वह तुम्हारा इन्तजार करे और तुमसे उसको लेने की आज्ञा ले ले। इस पर वह नाराज हो गया और यहाँ से भाग निकला। इसमें मैं क्या कर सकती हूँ?"

वह व्यवसायी चिल्लाया — "ओ मूर्ख स्त्री तूने इस साधु की बेइज़्ज़ती की है। तूने उसको वह अनाज कूटने वाला दे देना था। तुझे इतने साल हो गये और तुझको पता नहीं कि मैं कैसा आदमी हूँ। ला मुझे दे वह। मैं उसको ढूँढ कर अभी यह उसको दे कर आता हूँ।"

पति के डर से उसने जल्दी से वह अनाज कूटने वाला मूसल उठाया और उसको अपने पति को दे दिया। व्यवसायी ने वह अनाज कूटने वाला मूसल लिया और जल्दी जल्दी उस साधु के पीछे पीछे चला।

जब उसने साधु को देख लिया तो उसने वह अनाज कूटने वाला हिला कर उसको रोकने की कोशिश की।

साधु उस व्यवसायी के हाथ में उस अनाज कूटने वाले को देख कर डर गया। उसको लगा कि यह तो मुझे इस मूसल से मारने आ रहा है सो वह जितनी तेज़ी से भाग सकता था वहाँ से भाग लिया।

व्यवसायी को भी लगा कि वह उस साधु को नहीं पकड़ सकेगा तो वह घर लौट आया।

वह घर आ कर अपनी पत्नी पर चिल्लाया — "आज तुमने सब गड़बड़ कर दिया। अब इस घर में कोई साधु नहीं आयेगा।"

पत्नी ने सन्तोष की सॉस लेते हुए और मन ही मन मुस्कुराते हुए कहा — "मैं भी तो यही चाहती थी कि इस घर में अब कोई साधु न आये।"

अब तक गुरू जी यह पूरी तरीके से भूल गये थे कि वह मरने वाले थे। यह कहानी सुन कर तो वह हॅसते हॅसते अपने बिस्तर पर लोट पोट हो रहे थे।

हॅसते हॅसते गुरू जी बोले — "यह तो बहुत ही बढ़िया कहानी है। पर मेरी तो अभी भी यह समझ में नहीं आया कि उस ब्राह्मण की भविष्यवाणी कैसे पलटी जा सकती है।"

वह हाथ देखने वाला बोला — "मुझे माफ कीजियेगा अगर मैं सच सच बात कहूँ तो। असल में उस भविष्यवाणी पर हम लोगों ने ठीक से विचार ही नहीं किया। किसी भी बात को मानने या न मानने से पहले हम लोगों को अपना दिमाग इस्तेमाल करना चाहिये।

उस ब्राह्मण के कहने का मतलब यह नहीं था कि अगर आपके बैठने की जगह पानी से भी ठंडी हो जाये तभी भी आप मर जायेंगे। उसके कहने का मतलब तो यह था कि अगर आपके बैठने की जगह बिना किसी वजह के ठंडी हो जाये तब आप मर जायेंगे।

पर आप तो एक कीचड़ के गड्ढे में गिर पड़े थे और वहाँ भी आप उसमें दो घंटे पड़े रहे। तो आप यह कैसे कह सकते हैं कि इस हालत में आप ठंडा महसूस नहीं करेंगे?

आप बिल्कुल फिक्र न करें आप अभी नहीं मरने वाले। आप बहुत दिनों तक खुश और तन्दुरुस्त ज़िन्दगी गुजारेंगे। यह कहानी तो मैंने यह बात कहने से पहले आपको केवल आपका मूड बदलने के लिये सुनायी थी।"

यह बात सुन कर गुरू जी के चेहरे पर चमक आ गयी। वह बोले — "यह बात तो आप सही कह रहे हैं पंडित जी। मैं भी कितना बेवकूफ हूँ कि इतनी सी बात नहीं समझा।

आपको इस तकलीफ के लिये और आपकी इस बढ़िया कहानी के लिये बहुत बहुत धन्यवाद। मेहरबानी कर के मेरी यह छोटी सी भेंट ये पन्द्रह सोने के सिक्के आप स्वीकार करें।"

हाथ देखने वाले ने वह पैसे खुशी से ले लिये और अपने घर चला गया।

सारे शिष्यों ने खुशी में भर कर एक दावत का इन्तजाम किया। गुरू जी ने भी खूब दिल भर कर खाया और आश्रम में एक बार फिर खुशियाँ छा गयीं। वहाँ फिर से बहुत से साधु आने लगे।

इस तरह फिर से कई महीने गुजर गये। मानसून का मौसम आ गया। बारिश बहुत ज़ोर से पड़ने लगी।

आश्रम की छत में एक छोटा सा छेद था। कुछ इत्तफाक ऐसा हुआ कि उस छेद में से जो पानी टपका वह गुरू जी के आसन पर टपका। जब गुरू जी अपने शिष्यों को पढ़ाने बैठे तो उन्होंने देखा कि उनके बैठने की जगह तो वाकई बहुत गीली थी।

गुरू जी के दिमाग में उस ब्राह्मण की भविष्यवाणी फिर से घूम गयी सो उन्होंने अबकी बार से उसके गीले होने की वजह ढूँढी। पर क्योंकि बारिश रुक गयी थी इसलिये वह उसके गीले होने की वजह का पता न लगा सके।

गुरू जी फिर घबरा गये। उन्होंने तुरन्त ही अपने शिष्यों को आवाज लगायी — "खरदिमाग और गधे, मेरी बैठने की जगह बहुत गीली है। वह गीली क्यों है यह पता करो और फिर मुझे बताओ कि यह गीली क्यों है।"

उनके सभी शिष्य परेशान हो कर इधर उधर उसके गीले होने की वजह ढूँढने लगे पर कुछ पता ही नहीं लग पा रहा था क्योंकि अब बारिश तो हो नहीं रही थी सो पानी टपक नहीं रहा था।

अपने शिष्यों के चहरे पर नाउम्मीदी की झलक देख कर गुरू जी बहुत डर गये "आसन शीतम जीवन नाशम"। जब तुम्हारे बैठने की जगह ठंडी होगी तब तुम मर जाओगे। यही सोच कर वह तो बेहोश गये।

और उस हाथ देखने वाले के अनुसार तो उनको अपनी बैठने की जगह के ठंडे होने का कारण भी पता नहीं चल पा रहा था।

कुछ देर तक तो उनके शिष्य उनको होश में लाने की कोशिश करते रहे पर वे गुरू जी को होश में न ला पाये।

गधा तो यह देख कर रोने लगा — "लगता है गुरू जी तो हम सबको छोड़ कर चले गये।"

यह सुनते ही सारे शिष्य रोने लगे चिल्लाने लगे और दुख से जमीन पर लोटने लगे। पर फिर भी गुरू जी होश में नहीं आये।

कुछ देर के बाद गधे ने अपने आपको सँभाला और अपने गुरू भाइयों से कहा — "हमारा यह व्यवहार हमारे गुरू जी के लायक नहीं है। हम सबको तरीके से रहना चाहिये। हमको जो कुछ करना चाहिये हमको वही करना चाहिये।

खरदिमाग और बेवकूफ, जाओ तालाब में पानी भरो। हमको अपने गुरू जी को नहलाना है और फिर उनके शरीर को अन्तिम संस्कार के लिये तैयार करना है।"

खरदिमाग और बेवकूफ दोनो ज़ोर ज़ोर से रोते हुए तालाब में पानी भरने के लिये चल दिये। उसमें पानी भरने के बाद उन्होंने गुरू जी के शरीर को उस तालाब के पानी में उतार दिया और उसको नहलाने लगे।

ठंडे पानी की ठंडक से गुरू जी होश में आ गये। उन्होंने साँस लेने के लिये अपने एक शिष्य का हाथ पकड़ा।

खरदिमाग चिल्लाया — "भूत भूत। किसी भूत ने हमारे गुरू जी को पकड़ लिया है। जल्दी करो लाश को पानी में नीचे दबा कर

रखो। हम अपने गुरू जी की लाश को इस तरह से परेशान नहीं कर सकते।"

सो सारे शिष्यों ने उनके शरीर को दबा कर पानी में रखने की कोशिश की पर गुरू जी तो साँस लेने के लिये तड़प रहे थे सो वह अपना सिर इधर से उधर फेंक रहे थे।

गधा चिल्लाया — "ऐसा लगता है कि ये भूत बहुत ही ताकतवर हैं। हम इन भूतों को नहीं हरा सकते। हमको यह आश्रम छोड़ कर हिमालय चले जाना चाहिये।"

सभी शिष्य एक साथ चिल्लाये — "हाँ हाँ। हमारे गुरू जी हमारे इस जाने से जरूर ही खुश होंगे।"

सो सारे शिष्य चीखते चिल्लाते अपने हाथ हवा में हिलाते हुए गुरू जी के शरीर को वहीं छोड़ कर वहाँ से भाग लिये।

गुरू जी की शिक्षा

गुरू जी ने तालाब की सतह के ऊपर से अपने पाँचों शिष्यों को भागते हुए देख कर सोचा — "क्या मुझे भूतों ने पकड़ रखा है जो ये लोग मुझे यहाँ अकेला इस हालत में छोड़ कर इस तरह भाग गये?

ऐसा लगता है कि मेरे पाँचों शिष्य शान्ति पाने के लिये मुझे यहाँ अकेला छोड़ कर भाग गये। खैर अब तो मेरे सामने सबसे पहली समस्या यह है कि मैं इस तालाब में से कैसे निकलूँ?"

उसी समय उनको वहाँ से वह किसान गुजरता दिखायी दे गया जिसने उन लोगों को घोड़ी दान में दी थी।

देखते ही वह बोला — "ऐसा लगता है कि मैं यहाँ बिल्कुल ठीक समय पर आ गया। मैं आपको इस तालाब में से बाहर निकालता हूँ। यहाँ तो आप बहुत परेशान से दिखायी दे रहे हैं।"

सो उस किसान ने गुरू जी को उनका हाथ पकड़ कर उस ताालाब से बाहर खींच लिया और दस मिनट में ही गुरू जी बिल्कुल ठीक और खुश तालाब के बाहर खड़े थे। मुस्कुरा कर उन्होंने किसान को बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

किसान बोला — "नहीं गुरू जी। इसमें धन्यवाद की क्या बात है। अच्छा हुआ मैं समय पर आ गया और आपको इस तालाब में से निकाल सका।

पर आप मुझे यह तो बताइये कि आपके आश्रम में हुआ क्या क्योंकि आपको बिना आपके शिष्यों के पानी के तालाब में देख कर मुझे कुछ उत्सुकता हो रही है।"

गुरू जी ने उसको हँसते हुए अपनी सारी कहानी सुना दी।

फिर उस किसान की तरफ देखते हुए बोले — "अब मैं थोड़ी सी शान्ति पाने के लिये आजाद हूँ। तुम बहुत ही अच्छे आदमी हो और एक अच्छे दोस्त भी साबित हुए हो। अब तुम मुझे यह बताओ कि तुम अपनी ज़िन्दगी कैसे चलाते हो।

देखो हिचकना नहीं। मैं बहुत दिनों से पढ़ा रहा हूँ पर मुझे आता कुछ नहीं। जब आदमी को कुछ नहीं आता तो उसमें उसे कोई खुशी नहीं मिलती। सो अगर तुम मेरे सच्चे दोस्त हो तो तुम मुझे वह सब बताओ जो तुम जानते हो।

तुम्हारी बातें और तुम्हारा व्यवहार दूसरे किसानों जैसा नहीं है। तुम बहुत ही दयावान और सीधे सादे हो। तुम्हारे अन्दर जरूर ही शान्ति होगी। तुम अपनी शान्ति का भेद मुझे बताओ।"

किसान बोला — "क्योंकि आप यह सब खुद मुझसे पूछ रहे हैं इसलिये मैं आपको सब बताता हूँ हालाँकि मैं एक सादा सा किसान ही तो हूँ कोई विद्वान पंडित तो नहीं।

यह बहुत साल पुरानी बात है कि एक बार एक साधु मेरे घर भीख माँगने आये। उस समय मैं भी अपनी ज़िन्दगी से जूझ रहा था। मेरी खराब हालत देख कर उन बेचारों ने मुझसे बातें करने के लिये कुछ समय निकाला। असल में वह मेरे घर में एक हफ्ता रहे।

वह अपनी साधना पूजा और अपने रोज के कामों में बहुत ही नियमित थे इसलिये मैं उनको बीच में तंग नहीं करता था।

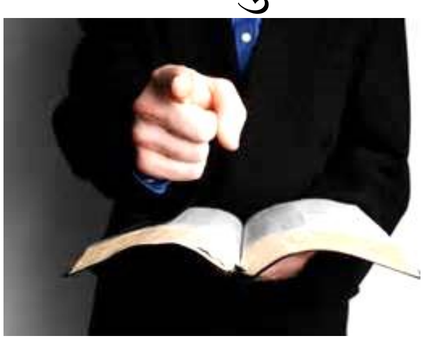
वह मुझे रोज बुलाते थे और श्री वेद व्यास जी की लिखी हुई बातें मुझे समझाते थे। वे उनको मुझे इतनी अच्छी तरह समझाते थे कि उनके वे शब्द मेरे केवल कानों में ही नहीं पड़ते बल्कि मेरे दिल तक में उतर जाते। वे मेरे लिये जादू की दवा की तरह थे जो मेरा सारा दर्द दूर कर देते।

बदकिस्मती से एक दिन उनके जाने का दिन भी आ गया। मैंने उनसे रुकने की बहुत प्रार्थना की पर यह उनके लिये मुमकिन नहीं था। वह विष्णु जी के भक्त थे और लोगों को उपदेश देते थे। उनकी ज़िन्दगी और उनकी संगति तो सबके लिये थी।

मुझे दुखी देख कर उन्होंने मुझे श्री भगवद् गीता की एक किताब दी जो वह रोज पढ़ते थे और मुझसे वायदा किया कि वह मुझसे कुछ ही महीनों में मिलने जरूर आयेंगे।

क्योंकि मैं उनको बहुत याद करता था इसलिये मैं उस किताब को रोज पढ़ता था और वह मुझको बहुत शान्ति देती थी। मैं उसको जितना पढ़ता था मुझे उससे उतनी ही ज़्यादा शान्ति मिलती थी और मैं उन सादे से पर इतने बड़े साधु का उतना ही ज़्यादा भक्त बनता जाता था।

कुछ महीने बाद वह साधु मुझसे मिलने आये तो मैं उनके पैरों पर गिर पड़ा और मैंने उनसे अपना अध्यात्मिक गुरू बनने की प्रार्थना की। उसी दिन उन्होंने एक छोटा सा हवन किया और मुझे भी भगवान विष्णु का भक्त बना दिया।



उन्हीं की दया से मेरे परेशानी और दुख के दिन खत्म हो गये और उस दिन के बाद से भगवद् गीता ही मेरी ज़िन्दगी और आत्मा बन गयी। वह छोटी सी किताब अभी भी मेरे पास है और मैं अभी भी उसको रोज पढ़ता हूँ।”

यह सुन कर गुरू परमार्थ के मुँह से निकला — "ओह यह सब कितना सुन्दर है। भगवान की माया भी कितनी अजीब है। क्या तुम वह किताब मुझको भी पढ़ने के लिये दोगे? क्या वह किताब हम दोनों रोज साथ साथ पढ़ सकते हैं?"

किसान खुशी से बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं। गुरू की भेंट तो सबके साथ बाँटने के लिये ही होती है। हम यह कल से ही शुरू कर देते हैं। करें?"

"हाँ बिल्कुल।"



List of Stories of the Book "Folktales of India-1"

1. The Tiger in the Well
2. The Blind Men and the Elephant
3. The Hare That Ran Away
4. The Jackal and the Alligator
5. The Lion Makers
6. The Magis of Friendship
7. The Monkey and the Crocodile
8. Ox Who Won the Bet
9. The Quarreling Quails
10. The Turtle Who could Not Stop Talking
11. All For a Paisa
12. The Elephants and the King of Mice
13. The King and the Foolish Monkey
14. A Panchtantra Story
15. Unwanted Guest
16. Stone Lion
17. A Trip to Heaven
18. A Sweet For Khan
19. The Foolish Crocodile
20. The Ghost That Gor Away
21. The Two Daughters
22. Why Pigs Are So Dirty
23. Fifty-Fifty
24. Work For the Demon
25. The Secret Valley
26. Qazi of Jaunpur

List of Stories of the Book "Folktales of India-2"

1. Story of a Cat and a Hen
2. Story of a Dog and a Goat
3. Story of a Tortoise and Monkeys
4. A Widow and Her son
5. Story of a Hedgehog and a Deer
6. Man and a Monkey
7. Girl Who Married a Monkey
8. The Magician Nar
9. Magic Wrap
10. Story of a Story-teller
11. Naughty Tiger
12. The Fox and the Crocodile
13. Adventure by Midnight
14. The King and Tuntuni
15. Eight Royal Trees
16. Table Turned
17. Guru Paramarth and His Five Foolish Disciples

Indian Classic Books of Folktales Translated in Hindi
by Sushma Gupta

12th Cen **Shuk Saptati.**
No 29 By Unknown. 70 Tales. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — ।

c1323 **Tales of Four Darvesh**
No 24 By Amir Khusro. 5 Tales. Tr by Duncan Forbes.
किस्सये चहार दरवेश

1868 **Old Deccan Days or Hindoo Fairy Legends**
No 23 By Mary Frere. 24 Tales. (5th ed 1889).
पुराने दक्कन के दिन या हिन्दू परियों की कहानियाँ

1872 **Indian Antiquary 1872**
No 34 A collection of scattered folktales in this journal. 18 Tales.

1880 **Indian Fairy Tales**
No 30 By MSH Stokes. London, Ellis & White. 30 Tales.
हिन्दुस्तानी परियों की कहानियाँ

1884 **Wide-Awake Stories – Same as Tales of the Punjab**
By Flora Annie Steel and RC Temple. 43 Tales.

1887 **Folk-tales of Kashmir.**
No 11 By James Hinton Knowles. 64 Tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं

1889 **Folktales of Bengal.**
No 4 By Rev Lal Behari Dey. Delhi : National Book Trust. 22 Tales.
वंगाल की लोक कथाऐं

1890 **Tales of the Sun, OR Folklore of South India**
No 18 By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri.
London : WH Allen. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण भारत की लोक कथाऐं

1892 **Indian Nights' Entertainment**
No 32 By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन

1894 **Tales of the Punjab.**
No 10 By Flora Annie Steel. Macmillan and Co. 43 Tales.
पंजाब की लोक कथाऐं

1903 **Romantic Tales of the Panjab**
No 31 By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियॉ

1912 **Indian Fairy Tales**
No 28 By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 29 Tales.
हिन्दुस्तानी परियों की कहानियॉ

1914 **Deccan Nursery Tales or Fairy Tales from Deccan**.
No 22 By Charles Augustus Kincaid. 20 Tales.
दक्कन की नर्सरी की कहानियॉ

Folktales of India in Hindi

2022 **Bharat Ki Lok Kathayen-1**. Collected and Translated by Sushma Gupta.
2022 **Bharat Ki Lok kathayen-2**. Collected and Translated by Sushma Gupta.

SOME OTHER BOOKS ON FOLKTALES FROM ASSAM

BARKATAKI, Satyendra Nath (Compiler), and SAIKIYA, Candra Prasad (Editor)
Tribal Folk-tales of Assam (Hills). Gauhati, Assam, Publication Board. **1970.** 237 pages. US$165/-
[Contains 129 folktales of tribes – Lushai, LAKHER, Pawi, Mikir,, Khasi,Jaintia, Dimasa Kachari, Thado-Kuki, Zemi-Naga, and Garo. Original from the University of Michigan; Digitized on 13 December, 2006]

BEZBAROA, Lakshminath
Tales of a grandfather from Assam. Bangalore, Institute of Culture, **1955**. 135 pages
(Translated from the Assamese and illustrated by Aruna Devi Mukerjea)

BISWAS, Ranjita;
Folk Tales from Assam, Meghalaya and Arunachal Pradesh. Kindle Edition. 34 pages;
Kochi, Kerala; Mango Books. **2014.** Indian Rs.70/- (contains 5 stories)

BOROOAH, Jnannadabhiram
Folk Tales of Assam. 2nd ed. Gauhati, Assam, Lawyers Book Stall, 136 pages; **1955;** US$18.66
(Some of the tales are from Lakshminath Bezbaroa, Assamese compilation)

GHOSH, GK and GHOSH, Shukla
Fables and Folk-Tales of Assam. Calcutta, Firma KLM Pvt. Limited, **1998**. Indian Rs.200/-
(Contains 50 stories born out of people like the Karbis, the Lalungs, the Dimasas and the Bodos)

Assam Ki Lok Kathayein – Hindi – Audio File free download / असम की लोक कथाएँ – हिंदी कहानियां मुफ्त ऑडियो डाउनलोड

This recording has been done by a student called Shreshtha Venkatraman. She found time to record all these stories, as part of the Esha Summer Project for children.

Tejimola ki Kahani
Jaulpaala aur Tualwungi
Ladki jo Bagh Ban Gayi
Mayur ki Utpatti
Saaluk Kunwar
Paan aur Supaari

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में **100** से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**1**
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**2**
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**
4 रैवन की लोक कथाऐं–**1**

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–**1** — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, **2016**
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — देहली, प्रभात प्रकाशन, **2017**, **120** पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2** — देहली, प्रभात प्रकाशन, **2017**, **120** पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, **2019**, **160** पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, **2019**, **144** पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, **2020**, **176** पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, **2020**, **213** पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में



सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022